गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका अगस्त-2019

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
मासिक ई-पत्रिका
अगस्त 2019

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

रक्षाबंधन- रक्षाबंधन अर्थात्प्रेम का बंधन। रक्षाबंधन के दिन बहन भाई के हाथ पर राखी बाँधती हैं। रक्षाबंधन के साथ हि भाई को अपने निःस्वार्थ प्रेम से बाँधती है।

भारतीय संस्कृति में आज के भौतिकतावादी समाज में भोग और स्वार्थ में लिप्त विश्व में भी प्रायः सभी संबंधों में निःस्वार्थ और पवित्र होता हैं।

भारतीय संस्कृति समग्र मानव जीवन को महानता के दर्शन कराने वाली संस्कृति हैं। भारतीय संस्कृति में स्त्री को केवल मात्र भोगदासी न समझकर उसका पूजन करने वाली महान संस्कृति हैं।

किन्तु आजका पढा लिखा आधुनिक व्यक्ति अपने आपको सुधरा हुवा मानने वाले तथा पाश्चात्य संस्कृति का अंधा अनुकरण करके, स्त्री को समानता दिलाने वाली खोखली भाषा बोलने वालों को पेहल भारत की पारंपरिक संस्कृति को पूर्ण समझ लेना चाहि की पाश्चात्य संस्कृति से तो केवल समानता दिलाई हो परंतु भारतीय संस्कृति ने तो स्त्री का पूजन किया हैं।.

एसे हि नहीं कहाजाता हैं।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

भावार्थ: जहाँ स्त्री पूजी जाती है, उसका सम्मान होता है, वहाँ देव रमते हैं- वहाँ देवों का निवास होता है।' ऐसा भगवान मनु का वचन है।

श्री कृष्णजन्माष्टमी को भगवान श्री कृष्ण के जनमोत्स्व के रुप में मनाया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण के भगवद गीता में वर्णित उपदेश पुरातन काल से ही हिन्दु संस्कृति में आदर्श रहे हैं। जन्माष्टमी का त्यौहार पुरे विश्व में हर्षोल्लास एवं आस्था से मनाया जाता हैं।

श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मध्यरात्रि को मथुरा में कारागृह में हुवा। जैसे की इस जिन समग्र संसार के पालन कर्ता स्वयं अवतरित हुएं थे। अत: इस दिन को कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाने की परंपरा सदियों से चली आरही हैं।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के लिए देश-दुनिया के विभिन्न कृष्ण मंदिरों को विशेष तौर पर सजाया जाता है। जन्माष्टमी के दिन व्रती बारह बजे तक व्रत रखते हैं। इस दिन मंदिरों में भगवान श्री कृष्ण की विभिन्न झांकीयां सजाई जाती है और रासलीला का आयोजन होता है। भगवान श्री कृष्ण की बाल स्वरुप प्रतिमा को विभिन्न शृंगार सामग्रीयों से सुसज्जित कर प्रतिमा को पालने में स्थापित कर कृष्ण मध्यरात्री को झूला झुलाया जाता हैं।

धर्मशास्त्रों के जानकारों ने श्रीकृष्णजन्माष्टमीका व्रत सनातन-धर्मावलंबियों के लिए विशेष महत्व पूर्ण बताया है। इस दिन उपवास रखने तथा अन्न का सेवन नहीं करने का विधान धर्मशास्त्रों में वर्णित हैं।

गौतमीतंत्रमें यह उल्लेख है-

उपवासः प्रकर्तव्योन भोक्तव्यंकदाचन।

कृष्णजन्मदिनेयस्तुभुङ्क्तेसतुनराधमः।

निवसेन्नरकेघोरेयावदाभूतसम्प्लवम्॥

अर्थात: अमीर-गरीब सभी लोग यथाशक्ति-यथासंभव उपचारों से योगेश्वर कृष्ण का जन्मोत्सव मनाएं। जब तक उत्सव सम्पन्न न हो जाए तब तक भोजन बिल्कुल न करें। जो वैष्णव कृष्णाष्टमी के दिन भोजन करता है, वह निश्चय ही नराधम है। उसे प्रलय होने तक घोर नरक में रहना पडता है।

इसी लिए जन्माष्टमी के दिन भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा का विधि-विधान से पूजन इत्यादि करने का विशेष महत्व सनातन धर्म में रहा हैं। धर्मग्रंथों में जन्माष्टमी की रात्रि में जागरण का विधान भी बताया गया है। विद्वानों का मत हैं की कृष्णाष्टमी की रात में भगवान श्रीकृष्ण के नाम का संकीर्तन इत्यादि करने से भक्त को श्रीकृष्ण की विशेष कृपा प्राप्ति होती हैं। धर्मग्रंथों में जन्माष्टमी के व्रत में पूरे दिन उपवास रखने का नियम है, परंतु इसमें असमर्थ लोग फलाहार कर सकते हैं।

भविष्यपुराण में उल्लेख हैं

जिस राष्ट्र या प्रदेश में यह व्रत-उत्सव विधि-विधान से मनाया जाता है, वहां पर प्राकृतिक प्रकोप या महामारी इत्यादि नहीं होती। मेघ पर्याप्त वर्षा करते हैं तथा फसल खूब होती है। जनता सुख-समृद्धि प्राप्त करती है। इस व्रत के अनुष्ठान से सभी व्रतीयों को परम श्रेय की प्राप्ति होती है। व्रत कर्ता भगवत्कृपा का भागी बनकर इस लोक में सब सुख भोगता है और अन्त में वैकुंठ जाता है। कृष्णाष्टमी का व्रत करने वाले के सभी प्रकार क्लेश दूर हो जाते हैं। उसका दुख-दरिद्रता से उद्धार होता है।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो भगवान श्रीकृष्ण की कृपा आपके परिवार पर बनी रहे। भगवान श्रीकृष्ण से यहीं प्राथना हैं...

जैन बंधु/बहनों कओ पर्यूषण महापर्व की अनेक-अनेक शुभकामनाएं।

गुरुत्व कार्यालय की और से सभी को "मिच्छामी दुक्कडम्"

चिंतन जोशी

***** मासिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा प्रकाशित किये गये सभी लेख, जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

नाग पंचमी का धार्मिक महत्व

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नाग पंचमी व्रत श्रावण शुक्ल पंचमीको किया जाता है । लेकिन लोकाचार व संस्कृति- भेद के कारण नाग पंचमी व्रत को किसी जगह कृष्णपक्षमें भी किया जाता है । इसमे परविद्धा युक्त पंचमी ली जाती है । पौराणिक मान्यता के अनुशार इस दिन नाग-सर्प को दूधसे स्त्रान और पूजन कर दूध पिलाने से व्रती को पुण्य फल की प्राप्ति होती हैं। अपने घर के मुख्य द्वार के दोनों ओर गोबरके सर्प बनाकर उनका दही, दूर्वा, कुशा, गन्ध, अक्षत, पुष्प, मोदक और मालपुआ इत्यादिसे पूजन कर ब्राह्मणोंको भोजन कराकर एकभुक्त व्रत करनेसे घरमें सर्पोंका भय नहीं होता है ।

सर्पविष दूर करने हेतु निम्न निम्नलिखित मंत्र का जप करने का विधान हैं।

"ॐ कुरुकुल्ये हुं फद स्वाहा।"

नाग पंचमी की पौराणिक कथा

पौराणिक कथा के अनुशार प्राचीन काल में किसी नगर के एक सेठजी के सात पुत्र थे। सातों पुत्रों के विवाह हो चुके थे। सबसे छोटे पुत्र की पत्नी श्रेष्ठ चरित्र की विदुषी और सुशील थी, लेकिन उसका कोई भाई नहीं था।

एक दिन बड़ी बहू ने घर लीपने के लिए पीली मिट्टी लाने हेतु सभी बहुओं को साथ चलने को कहा तो सभी बहू उस के साथ मिट्टी खोदने के औजार लेकर चली गई और किसी स्थान पर मिट्टी खोदने लगी, तभी वहां एक सर्प निकला, जिसे बड़ी बहू खुरपी से मारने लगी। यह देखकर छोटी बहू ने बड़ी बहू को रोकते हुए कहा "मत मारो इस सर्प को? यह बेचारा निरपराध है।"

छोटी बहू के कहने पर बड़ी बहू ने सर्प को नहीं मारा और सर्प एक ओर जाकर बैठ गया। तब छोटी बहू ने सर्प से कहा "हम अभी लौट कर आती हैं तुम यहां से कहीं जाना मत" इतना कहकर वह सबके साथ मिट्टी लेकर घर चली गई और घर के कामकाज में फँसकर सर्प से जो वादा किया था उसे भूल गई।

उसे दूसरे दिन वह बात याद आई तो सब बहूओं को साथ लेकर वहाँ पहुँची और सर्प को उस स्थान पर बैठा देखकर बोली "सर्प भैया नमस्कार!" सर्प ने कहा तू भैया कह चुकी है, इसलिए तुझे छोड़ देता हूं, नहीं तो झूठे वादे करने के कारण तुझे अभी डस लेता। छोटी बहू बोली भैया मुझसे भूल हो गई, उसकी क्षमा माँगती हूं, तब सर्प बोला- अच्छा, तू आज से मेरी बहिन हुई और मैं तेरा भाई हुआ। तुझे जो मांगना हो, माँग ले। वह बोली- भैया! मेरा कोई नहीं है, अच्छा हुआ जो तू मेरा भाई बन गया।

नाग पंचमी विशेष

कुछ दिन व्यतीत होने पर वह सर्प मनुष्य का रूप धरकर उसके घर आया और बोला कि "मेरी बहिन को बुला दो, मैं उसे लेने आया हूँ" सबने कहा कि इसके तो कोई भाई नहीं था! तो वह बोला- मैं दूर के रिश्ते में इसका भाई हूँ, बचपन में ही बाहर चला गया था। उसके विश्वास दिलाने पर घर के लोगों ने छोटी को उसके साथ भेज दिया। उसने मार्ग में बताया कि "मैं वहीं सर्प हूँ, इसलिए तू डरना नहीं और जहां चलने में कठिनाई हो वहां मेरा हाथ पकड़ लेना। उसने कहे अनुसार ही किया और इस प्रकार वह उसके घर पहुंच गई। वहाँ के धन-ऐश्वर्य को देखकर वह चकित हो गई।

वह सर्प परिवार अके साथ आनंद से रहने लगी। एक दिन सर्प की माता ने उससे कहा "मैं एक काम से बाहर जा रही हूँ, तू अपने भाई को ठंडा दूध पिला देना। उसे यह बात ध्यान न रही और उससे गलति से गर्म

दूध पिला दिया, जिसमें उसका मुहँ बुरी तरह जल गया। यह देखकर सर्प की माता बहुत क्रोधित हुई। परंतु सर्प के समझाने पर माँ चुप हो गई। तब सर्प ने कहा कि बहिन को अब उसके घर भेज देना चाहिए। तब सर्प और उसके पिता ने उसे भेट स्वरुप बहुत सा सोना, चाँदी, जवाहरात, वस्त्र-भूषण आदि देकर उसके घर पहुँचा दिया।

साथ लाया ढेर सारा धन देखकर बड़ी बहू ने ईर्षा से कहा तुम्हारां भाई तो बड़ा धनवान है, तुझे तो उससे और भी धन लाना चाहिए। सर्प ने यह वचन सुना तो सब वस्तुएँ सोने की लाकर दे दीं। यह देखकर बड़ी बहू की लालच बढ़ गई उसने फिर कहा "इन्हें झाड़ने की झाड़ू भी सोने की होनी चाहिए" तब सर्प ने झाडू भी सोने की लाकर रख दी।

सर्प ने अपने बहिन को हीरा-मणियों का एक अद्भुत हार दिया था। उसकी प्रशंसा उस देश की रानी ने भी सुनी और वह राजा से बोली कि "सेठ की छोटी बहू का हार यहाँ आना चाहिए।" राजा ने मंत्री को हुक्म दिया कि उससे वह हार लेकर शीघ्र उपस्थित हो मंत्री ने सेठजी से जाकर कहा कि "महारानीजी ने छोटी बहू का हार मंगवाया हैं, तो वह हार अपनी बहू से लेकर मुझे दे दो"। सेठजी ने डर के कारण छोटी बहू से हार मंगाकर दे दिया।

छोटी बहू को यह बात बहुत बुरी लगी, उसने अपने सर्प भाई को याद किया और आने पर प्रार्थना की- भैया ! रानी ने मेरा हार छीन लिया है, तुम कुछ ऐसा करो कि जब वह हार उसके गले में रहे, तब तक के लिए सर्प बन जाए और जब वह मुझे लौटा दे तब वह पुनः हीरों और मणियों का हो जाए। सर्प ने ठीक वैसा ही किया। जैसे ही रानी ने हार पहना, वैसे ही वह सर्प बन गया। यह देखकर रानी चीख पड़ी और रोने लगी।

यह देख कर राजा ने सेठ के पास खबर भेजी कि छोटी बहू को तुरंत भेजो। सेठजी डर गए कि राजा न जाने क्या करेगा? वे स्वयं छोटी बहू को साथ लेकर उपस्थित हुए। राजा ने छोटी बहू से पूछा "तुने क्या जादू किया है, मैं तुझे दण्ड दूंगा।" छोटी बहू बोली "राजन ! धृष्टता क्षमा कीजिए" यह हार ही ऐसा है कि मेरे गले में हीरों और मणियों का रहता है और दूसरे के गले में सर्प बन जाता है। यह सुनकर राजा ने वह सर्प बना हार उसे देकर कहा- अभी पहनकर दिखाओ। छोटी बहू ने जैसे ही उसे पहना वैसे ही हीरों-मणियों का हो गया।

यह देखकर राजा को उसकी बात का विश्वास हो गया और उसने प्रसन्न होकर उसे भेट में बहुत सी मुद्राएं भी पुरस्कार में दीं। छोटी वह अपने हार और भेट सहित घर लौट आई। उसके धन को देखकर बड़ी बहू ने ईर्षा के कारण उसके पति को सिखाया कि छोटी बहू के पास कहीं से धन आया है। यह सुनकर उसके पति ने अपनी पत्नी को बुलाकर कहा सच-सच बताना कि यह "धन तुझे कौन देता है?" तब वह सर्प को याद करने लगी। तब उसी समय सर्प ने प्रकट होकर कहा यदि मेरी धर्म बहिन के आचरण पर संदेह प्रकट करेगा तो मैं उसे डंस लूँगा। यह सुनकर छोटी बहू का पति बहुत प्रसन्न हुआ और उसने सर्प देवता का बड़ा सत्कार किया। मान्यता हैं की उसी दिन से नागपंचमी का त्योहार मनाया जाता है और स्त्रियाँ सर्प को भाई मानकर उसकी पूजा करती हैं।

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

>> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvakaryalay.in

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

नागपच्चमी व्रत की कथा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नागपच्चमी व्रत का वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण बोले: राजन् ! पच्चमी तिथि नागों के लिए, अत्यन्त प्रिय है और इसी पच्चमी तिथि को नागों का विशेष उत्सव भी होता है। इसी दिन वासुकि, तक्षक, कालिय, मणिभद्र, धृतराष्ट्र, रैवत, कर्कोटक, और धनज्जय नामक नागगण प्राणियों को अभय-प्रदान करते हैं। पच्चमी के दिन जो मनुष्य क्षीर द्वारा नागों को स्नान कराता है, उसके कुल में वे नागगण अभय दान देते हैं। क्योंकि अपनी माता के द्वारा शाप प्राप्त कर जिस समय नागगण अत्यन्त पीडित हो रहे थे, उस समय उसी पच्चमी के दिन गाय के दुग्ध द्वारा स्नान कराने पर नागगण की पीड़ा शान्त हो गई थी, इसीलिए नागगण को पच्चमी तिथि अत्यन्त प्रिय है।

युधिष्ठिर ने कहा: जनार्दन ! नागों को माता द्वारा शाप क्यों मिला ?, उसका उद्देश्य एवं कारण क्या है ? और उस शाप का शमन कैसे हुआ, बताने की कृपा कीजिये?

श्रीकृष्ण बोले: एक समय समुद्र मंथन में अमृत के साथ उत्पन्न श्वेत वर्ण के अश्वराज उच्चैश्रवा को देखकर नागों की नागों की माता कद्रू (कदु या कटू) ने अपनी बहन विनता से कहा, इस अश्व रत्न को देखो, उसके सूक्ष्म काले बाल तुम्हें दिखायी दे रहे हैं या समस्त अंग में श्वेत ही बाल देख रही हो।

विनता ने कहा: यह सर्वश्रेष्ठ अश्व सर्वांग श्वेत है, और ये नाहीं कृष्णवर्ण या नाहीं रक्तवर्ण हैं, तुम उसे कृष्ण वर्ण कैसे देख रही हो। इस प्रकार विनता के कहने पर। कद्रू बोली विनता ! मेरा एक ही नेत्र है लेकिन मैं उसके काले बाल को देख रही हैं, और तुम्हारे दो नेत्र हैं, तू नहीं देख रही है ? अच्छा तो प्रतिज्ञा कर !

विनता ने कहा: यदि काले बाल इस अश्वराज उच्चैश्रवा में दिखायी दें तो मैं तुम्हारी दासी होकर आजीवन सेवा करूंगी। और कद्रू ! यदि तुम वैसा न दिखा सकी तो तुम्हें आजीवन मेरी दासी होना पड़ेगा। इस प्रकार वे दोनों अत्यन्त क्रोधीत होकर प्रतिज्ञा करके, शयनकक्ष में पहुँच कर शयन किया, लेकिन कद्रू ने कुछ कपट पूर्ण व्वहार करने का निश्चय किया उसने अपने पुत्रों को बुलाकर कहा तुम सब लोग सूक्ष्म रूप धारण कर उस श्रेष्ठ अश्व के अंग में प्रविष्ट हो जाओ, जिससे मैं उस जयाभिमानी विनता को इस प्रतिज्ञा में पराजित कर दूँ।

नागों ने उसकी कपट बुद्धि जानकर कहा: ऐसा करना धर्म के विरुद्ध एक अधर्म कार्य है, अतः तुम्हारी इस आज्ञा को हम लोग नहीं स्वीकार करेंगे !

इसे सुनकर कद्रू ने उन्हें शाप दिया कि पावक तुम्हें भस्मसात् कर दे।

कुछ दिनों के बाद पाण्डव जनमेजय "सर्पसत्र नामक यज्ञ" का अनुष्ठान आरम्भ करेंगे जो इस भूलोक में अन्य लोगों के लिए अत्यन्त दुर्लभ है। उसी यज्ञ में प्रचण्ड पावक तुम्हें जलायेगा। इस प्रकार शाप देकर कर कद्रू ने आगे कुछ नहीं कहा।

माता के शाप देने पर वासुकी नाग कर्त्तव्य परायण होते हुए अत्यन्त दुःख संतप्त होने के कारण मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़े। ब्रहमा ने वासुकी को दुःखी देखकर उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा: वासुके ! इस प्रकार चिन्तित न हो, और ध्यान पूर्वक मेरी बात सुनो ! यायावर देश-देशान्तर में भ्रमण करने वाले के कुल में महातेजस्वी एवं तपोनिधि जरत्कारु नामक द्विज उत्पन्न होंगे। उस समय तुम जरत्कारु नामक अपनी जरत्कारु उन्हें अर्पित कर देना, जिससे उनके आस्तीक नामक पुत्र उत्पन्न होगा। जिस समय नागों का भयदायक वह "सर्प यज्ञ" प्रारम्भ होगा, वह आस्तीक पुत्र वाणी द्वारा राजा को प्रसन्न करते हुए उस यज्ञ को स्थगित कर देगा। इसलिए जरत्कारू नामक यह तुम्हारी भगिनी के जो रूप एवं उदार गुण भूषित हैं, जरत्कारु नामक द्विज को समर्पित करने में किसी प्रकार के विचार करने की आवश्यकता न रहेगी । उस अरण्य में जरत्कारु द्विज के

मिलने पर अपने आत्मकल्याणार्थ तुम्हें उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करना होगा । ब्रह्मा जी की ऐसी बातें सुनकर नागवासुकी ने विनय-विनम्र होकर सहर्ष उसकी स्वीकृति प्रदान की और उसी समय से उसके लिए प्रयत्न भी करना आरम्भ कर दिया। इसे सुनकर सभी श्रेष्ठ नागों के नेत्र अत्यन्त हर्षातिरेक द्वारा विकसित कमल की भाँति खिल उठे। उस दिन नागलोगों ने अपने को पुनः जन्म ग्रहण करने के समान समझा।

सभी लोगों के बीच में यह चर्चा होने लगी कि उस घोर एवं अगाध यज्ञ-अग्निसागर के प्रस्तुत होने पर उससे पार होने के लिए केवल आस्तीक ही, अभयप्रद नौका होंगे तथा आस्तीक भी इसे सुनकर नागों के सम्मोहनार्थ आरम्भ यज्ञ को स्थगित करने के लिए अग्नि, राजा, और ऋत्विजों को क्रमशः विनयविनम्रपूर्वक उससे निवृत्त करने की चेष्टा करेंगे।

ब्रह्मा ने नागों को बताया है कि यह सब पच्चमी के दिन होगा। इसीलिए महाराज ! यह पच्चमी तिथि नागों को अत्यन्त प्रिय है जिस हर्षजननी को पहले ब्रह्मा ने नागों को प्रदान किया था। अतः उस दिन ब्राह्मणों को यथेच्छ भोजनों से संतृप्त करके नागगण मुझ पर प्रसन्न रहें ऐसा कहकर कुछ लोग इस भूतल में उनके विसर्जन करते हैं । नराधिप ! हिमालय, अन्तरिक्ष, स्वर्ग नदी, सरोवर, बावली, एवं तडाग आदि में निवास करने वाले उन महानागों को मैं बार-बार नमस्कार करता हूँ । इस प्रकार नागों और ब्राह्मणों को प्रसन्नता पूर्वक विसर्जन करके पश्चात् परिजनों समेत भोजन करना चाहिए । सर्वप्रथम मधुर भोजन पश्चात् यथेच्छ भोजन करने आदि सभी नियमों के सुसम्पन्न करने वाले को जिस फल की प्राप्ति होती है, मैं बता रहा हूँ, सुनो ! देहावसान होने पर यह परमोत्तम विमान पर सुखासीन एवं अप्सराओं द्वारा सुसेवित होकर नागलोक की प्राप्ति कर यथेच्छ समय तक सुखोपभोग करने के अनन्तर इस मर्त्यलोक में जन्म ग्रहण कर सर्वश्रेष्ठ राजा होता है, जो समस्त रत्नों से सुस्मृद्ध एवं अनेक प्रकार के वाहनों से सदैव सुसज्जित होता है । पाँच जन्म तक प्रत्येक द्वापर युग में सर्वमान्य राजा होता है, जो आधि व्याधि रोगों से मुक्त होकर पत्नी पुत्र समेत सदैव, आनन्दोपभोग करता है। इसलिए घी, क्षीर आदि से सदैव नागों की अर्चना करनी चाहिए ।

युधिष्ठिर ने कहा: हे कृष्ण ! क्रुद्ध होकर नाग जिसे काट लेता है, उसकी क्या गति होती है, विस्तार पूर्वक बताने की कृपा कीजिये।

श्रीकृष्ण बोले - राजन् ! नाग के काटने पर मृत्यु द्वारा वह प्राणी अधोगति (पाताल) पहुँच कर विषहीन सर्प होता है । युधिष्ठिर ने कहा - हे भगवन् ! नाग के काट लेने पर उस प्राणी के प्रति उसके पिता, माता, मित्र, पुत्र, बहन, पुत्री, और स्त्री का क्या कर्तव्य होता है ? गोविन्द, यदुशार्दूर्ल ! उस प्राणी के मोक्षार्थ इस प्रकार कोई दान व्रत अथवा उपवास आदि बताने की कृपा कीजिये, जिसे सुसम्पन्न करने पर उसे स्वर्ग की प्राप्ति हो जाये। श्रीकृष्ण बोले - राजन् ! उस प्राणी के मोक्षार्थ इसी पंचमी विधि का सविधान उपावस करना चाहिए, जो नागों के लिए अत्यन्त पुष्ट वर्द्धनी है ।

राजेन्द्र मैं उसके विधान को बता रहा हूँ, जो एक वर्ष तक निरन्तर सुसम्पन्न किया जाता है, तुम ध्यान पूर्वक इसे सुनो ! महीपते ! भाद्रपद की शुक्ल पच्चमी अत्यन्त पुण्यतमा होने के नाते प्राणियों की सद् गति की कामना के लिए अत्यन्त उत्कृष्ट बतायी गयी है । भरतर्षभ (भरतवंशमें श्रेष्ठ - अर्जुन) ! बारह वर्ष तक निरन्तर उसके सुसम्पन्न करने के उपरांत उसके व्रतोद्यापन के निमित्त चतुर्थी में एक भक्त नक्त भोजन करके पच्चमी के दिन नाग की उस सौन्दर्य पूर्ण प्रतिमा की, जो सुवर्ण, रजत (चाँदी) काष्ठ अथवा मृत्तिका द्वारा प्रयत्न पूर्वक निर्मित रहती है, और पाँच फलों से सुसज्जित कनेर, कमल, चमेली एवं अन्य सुगन्धित पुष्प, और नैवेद्य द्वारा अर्चना करके घृत समेत पायस एवं मोदक के भोजन से ब्राह्मण को अत्यन्त संतृप्त करें । पश्चात् उस सर्पदष्ट प्राणी के मोक्षार्थ नारायण बलि भी करनी चाहिए । नृप ! दान और पिण्ड दान के समय ब्राह्मणों को भली भाँति संतप्त कर वर्ष के अन्त में उसके लिए वृषोत्सर्ग नामक

यज्ञ भी करना चाहिए । स्नान करके उदक दान करते समय कृष्ण प्रसन्न हों कहकर पुन: प्रत्येक मास में अत्यन्त अनन्त वासुकी, शेष, पद्म, कम्बल, तक्षक, अवश्वतर, धृतराष्ट्र, शंखपाल, कालिय, तक्षक, पिंगल आदि महानागों के नामोच्चारण पूर्वक पूजनोपरांत वर्ष के अन्त में महाब्राह्मण को भोजनादि से तृप्त कर पारण करना चाहिए । प्राचीन कथा वेत्ता ब्राह्मण को बुलाकर नाग की सुवर्ण प्रतिमा, जो सवत्सा गौ, और काँसे की दोहनी दान से सुसज्जित रहती है, सप्रेम अर्पित करनी चाहिए। पार्थ ! उसके पारण के निमित्त विद्वानों ने यही विधान बताया है ।

बन्धुओं द्वारा इस प्रकार इसे सुसम्पन्न करने पर उस प्राणी की अवश्य सकृति होती है । सर्पों के काट लेने पर अधोगति प्राप्त उस प्राणी के निमित्त जो एक वर्ष तक इस उत्तम व्रत को सुसम्पन्न करेंगे, उससे उस प्राणी की शुभस्थान की प्राप्ति पूर्वक अवश्य मुक्ति होगी। इस प्रकार भक्ति श्रद्धा पूर्वक जो ईसे श्रवण अथवा अध्ययन करेंगे, उनके परिवार में नागों का भय कभी नहीं होगा । श्रीकृष्ण बोले- भाद्रपद मास की पच्चमी के दिन श्रद्धा भक्ति पूर्वक जो कृष्णादि वर्ण (रंग) द्वारा नागों की प्रतिमा सुनिमित कर गन्ध, पुष्प, घृत, गुग्गुल, और खीर द्वारा उसकी अर्चना करता है, उस पर तक्षक आदि नाग गण अत्यन्त प्रसन्न रहते हैं और उसके सात पीढ़ी तक के वंशजों को नाग भय नहीं होता है ।

कुरुनन्दन ! अतः नागों की पूजा के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए । उसी प्रकार आश्विन मास की पञ्चमी के दिन नागों की कुश की प्रतिमा बना कर इन्द्राणी के साथ उन्हें स्थापित कर घृत, उदक और क्षीर के क्रमशः स्नान पूर्वक गेहूँ के चूर्ण (आंटा) और घृत के अनेक भाँति के व्यजनों के समर्पण करते हुए उन्हें श्रद्धा भक्ति समेत अत्यन्त प्रसन्न करता है, उससे कुल में शेष आदि नागगण अत्यन्त प्रसन्न होकर सदैव शांति प्रदान करते है तथा देहावसान के समय शांति लोक प्राप्त कर अनेक वर्षों तक सुखोपभोग करता है । वीर! इस प्रकार मैंने इस परमोत्तम पच्चमी व्रत की व्याख्या सुना दी जिसमें समस्त दोष के निवृत्यर्थ यह "ॐ कुरुकुल्ले हुं फट् स्वाहा" (अन्य विद्वान के मत से "ॐ वाच कुल्ले हुं फट् स्वाहा") मंत्र बताया गया है । भक्ति भावना समेत जो लोग लगभग एक सौ पच्चमी व्रत एवं उस हिम पुष्प आदि उपहारों द्वारा नागों की अर्चना करते हैं उनके गृह में सदैव अभय और निरन्तर सौख्य प्रदान नागगण किया करते हैं । (श्री भविष्य महापुराण के उत्तरपर्व में श्रीकृष्ण युधिष्ठिर सम्वाद में नाग पच्चमी व्रत वर्णन नामक अध्याय 36)

***

पुत्रदा एकादशी व्रत 11-अगस्त-2019 (रविवार)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

पौराणिक कालसे ही हिंदू धर्म में एकादशी व्रत का विशेष धार्मिक महत्व रहा है। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को पुत्रदा एकादशी अथवा पवित्रा एकादशी भी कहते हैं। एकादशी के दिन भगवान विष्णु के दिन कामना पूर्ति के लिए व्रत-पूजन किया जाता है। इस वर्ष पुत्रदा एकादशी 11-अगस्त-2019 रविवार के दिन है, रविवार पूजन हेतु श्रेष्ठ माना जाता हैं और इस वर्ष पुत्रदा एकादशी और गुरुवार का संयोग एक साथ हो रहा हैं, जो विद्वानों के मतानुशार अति उत्तम हैं। ज्योतिष गणना के अनुशार इस वर्ष 11-अगस्त-2019 सूर्योदय के समय कर्क लग्न होगा, लग्नेश चंद्रमा मित्र ग्रह बृहस्पति (गुरु) के घर में स्थिती भी संतान प्राप्ति की इच्छा रखने वालो के लिए उत्तम मानी गई हैं। संतान प्राप्ति हेतु पंचम भाव में बृहस्पति (गुरु) के स्थिति विशेष शुभ मानी गई हैं। उसी के साथ ही इस दिन किया गया धार्मिक पूजन-व्रत इत्यादि आध्यात्मिक कार्य शुभ ग्रहों के प्रभाव से शीघ्र एवं विशेष फल प्रदान करने वाला सिद्ध होगा क्योकि शुभ प्रभाव में गुरु षष्ठेश एवं भाग्येश हो कर पंचम भाव(संतान गृह) में स्थित होकर पंचम, एकादश भाव (लाभ साथी) एवं लग्न भाव(देह भाव) को देख रहा हैं। गुरु की नवम दृष्टि लग्न में सूर्य पर स्थित हैं जो आध्यात्मिक कार्यों में वृद्धि का संकेत देता हैं। सूर्य के साथ बुध का बुधादित्य योग भी विशेष शुभदाय माना गया हैं। पुत्र कारक ग्रह केतु की वक्री शनि ओर चंद्र की युति संकेत दे रही हैं की संतान प्राप्ति की इच्छा रखने वाले दंपत्तियों को विशेष सावधानी अवश्य रखनी, किसी भी तरह की लापरवाही, मनमुटाव इत्यादि से विपरित परिणाम संभव हैं। अधिक जानकारी हेतु किसी कुशल ज्योतिष से परामर्श करना शुभकर रहेगा।

संतान प्राप्ति विशेष

संतान प्राप्ति की इच्छा रखने वाले दंपत्तियों को पुत्रदा एकादशी व्रत का नियम पालन दशमी तिथि (10 अगस्त 2019, रविवार) की रात्रि से ही शुरु करें शुद्ध चित्त से ब्रहमचर्य का पालन करें। गुरुवार के दिन सुबह जल्दी उठकर नित्यकर्म से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर भगवान विष्णु की प्रतिमा के सामने बैठकर व्रत का संकल्प करें। व्रत हेतु उपवास रखें अन्न ग्रहण नहीं करें, एक या दो समय फलाहार कर सकते हैं।

तत्पश्चयात भगवान विष्णु का पूजन पूर्ण विधि-विधान से करें। (यदि स्वयं पूजन करने में असमर्थ हों तो किसी योग्य विद्वान ब्राहमण से भी पूजन करवा सकते हैं।) भगवान विष्णु को शुद्ध जल से स्नान कराए। फिर पंचामृत से स्नान कराएं स्नान के बाद केवल पंचामृत के चरणामृत को व्रती (व्रत करने वाला) अपने और परिवार के सभी

सदस्यों के अंगों पर छिड़के और उस चरणामृत को पीए। तत पश्चयात पुनः शुद्ध जल से स्नान कराकर प्रतिमाक स्वच्छ कपड़े से पोछलें। इसके बाद भगवान को गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि पूजन सामग्री अर्पित करें।

विष्णु सहस्त्रनाम का जप करें एवं पुत्रदा एकादशी व्रत की कथा सुनें। रात को भगवान विष्णु की मूर्ति के समीप शयन करें और दूसरे दिन अर्थात द्वादशी 11-अगस्त-2019, रविवार के दिन विद्वान ब्राह्मणों को भोजन कराकर व सप्रेम दान-दक्षिणा इत्यादि देकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करें। इस प्रकार पवित्रा एकादशी व्रत करने से योग्य संतान की प्राप्ति होती है।

विशेष सूचना: पुत्र प्राप्ति का तात्पर्य केवल उत्तम संतान की प्राप्ति समझे। क्योकि, उपरोक्त वर्णित पुत्र प्राप्ति एकादशी से संबंधित सभी जानकारी शास्त्रोक्त वर्णित हैं, अतः व्रत से केवल पुत्र संतान की प्राप्ति हो ऐसा नहीं हैं इस व्रत से उत्तम संतान की प्राप्ति होती हैं, चाहे वह संतान पुत्र हो या कन्या। आज के आधुनिक युग में पुत्र संतान व कन्या संतान में कोई विशेष फर्क नहीं रहा हैं। कन्या या महिलाएं भी पुत्र या पुरुष के समान ही सबल एवं शक्तिशाली हैं। अतः केवल पुत्र संतान की कामना करना व्यर्थ हैं। अतः केवल उत्तम संतान की कामना से व्रत करे। जानकार एवं विद्वानों के अनुभव के अनुशार पीछले कुछ वर्षो में उन्हें अपने अनुशंधान से यह तथ्य मिले हैं की केवल पुत्र कामना से की गई अधिकतर साधानाएं, व्रत-उपवास इत्यादि उपायों से दंपत्ति को पुत्र की जगह उत्तम कन्य संतान की प्राप्ति हुवी हैं, और वह कन्या संतान पुत्र संतान से कई अधिक बुद्धिमान एवं माता-पिता का नाम समाज में रोशन करने वाली रही हैं। संभवत इस युग में नारीयों की कम होती जनसंख्या के कारण इश्वरने भी अपने नियम बदल लिये होंगे इस लिए पुत्र कामना के फलस्वरुप उत्तम कन्या संतान की प्राप्ति हो रही होगी।

पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत की पौराणिक कथा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्रावण : शुक्ल पक्ष

एक बार युधिष्ठिर भगवान श्रीकृष्ण से पूछते हैं, हे भगवान! श्रावण शुक्ल एकादशी का क्या नाम है? इसमें किस देवता की पूजा की जाती है और इसका व्रत करने से क्या फल मिलता है ?" व्रत करने की विधि तथा इसका माहात्म्य कृपा करके कहिए। भगवान श्रीकृष्ण कहने लगे कि इस एकादशी का नाम **पुत्रदा एकादशी** है। अब आप शांतिपूर्वक इस व्रतकी कथा सुनिए। इसके सुनने मात्र से ही वाजपेयी यज्ञ / अनन्त यज्ञ का फल मिलता है।

द्वापर युग के आरंभ में महिष्मति नाम की एक नगरी थी, जिसमें महिष्मती नाम का राजा राज्य करता था, लेकिन पुत्रहीन होने के कारण राजा को राज्य सुखदायक नहीं लगता था। उसका मानना था कि जिसके संतान न हो, उसके लिए यह लोक और परलोक दोनों ही दु:खदायक होते हैं। पुत्र सुख की प्राप्ति के लिए राजा ने अनेक उपाय किए परंतु राजा को पुत्र की प्राप्ति नहीं हुई।

वृद्धावस्था आती देखकर राजा ने प्रजा के प्रतिनिधियों को बुलाया और कहा- हे प्रजाजनों! मेरे खजाने में अन्याय से उपार्जन किया हुआ धन नहीं है। न मैंने कभी देवताओं तथा ब्राह्मणों का धन छीना है। किसी दूसरे की धरोहर भी मैंने नहीं ली, प्रजा को पुत्र के समान पालता रहा। मैं अपराधियों को पुत्र तथा बाँधवों की तरह दंड देता रहा। कभी किसी से घृणा नहीं की। सबको समान माना है। सज्जनों की सदा पूजा करता हूँ। इस प्रकार धर्मयुक्त राज्य करते हुए भी मेरे पुत्र नहीं है। सो मैं अत्यंत दु:ख पा रहा हूँ, इसका क्या कारण है?

राजा महिष्मती की इस बात को विचारने के लिए मंत्री तथा प्रजा के प्रतिनिधि वन को गए। वहाँ बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों के दर्शन किए। राजा की उत्तम कामना की पूर्ति के लिए किसी श्रेष्ठ तपस्वी मुनि को खोजते-फिरते रहे। एक आश्रम में उन्होंने एक अत्यंत वयोवृद्ध धर्म के ज्ञाता, बड़े तपस्वी, परमात्मा में मन लगाए हुए निराहार, जितेंद्रीय, जितात्मा, जितक्रोध, सनातन धर्म के गूढ़ तत्वों को जानने वाले, समस्त शास्त्रों के ज्ञाता महात्मा लोमश मुनि को देखा, जिनका कल्प के व्यतीत होने पर एक रोम गिरता था।

सबने जाकर ऋषि को प्रणाम किया। उन लोगों को देखकर मुनि ने पूछा कि आप लोग किस कारण से आए हैं? नि:संदेह मैं आप लोगों का हित करूँगा। मेरा जन्म केवल दूसरों के उपकार के लिए हुआ है, इसमें संदेह मत करो।

लोमश ऋषि के ऐसे वचन सुनकर सब लोग बोले- हे महर्षे! आप हमारी बात जानने में ब्रह्मा से भी अधिक समर्थ हैं। अत: आप हमारे इस संदेह को दूर कीजिए। महिष्मति पुरी का धर्मात्मा राजा महिष्मती प्रजा का पुत्र के समान पालन करता है। फिर भी वह पुत्रहीन होने के कारण दु:खी है।

उन लोगों ने आगे कहा कि हम लोग उसकी प्रजा हैं। अत: उसके दु:ख से हम भी दु:खी हैं। आपके दर्शन से हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारा यह संकट अवश्य दूर हो जाएगा क्योंकि महान पुरुषों के दर्शन मात्र से अनेक कष्ट दूर हो जाते हैं। अब आप कृपा करके राजा के पुत्र होने का उपाय बतलाएँ।

यह वार्ता सुनकर ऐसी करुण प्रार्थना सुनकर लोमश ऋषि नेत्र बन्द करके राजा के पूर्व जन्मों पर विचार करने लगे और राजा के पूर्व जन्म का वृत्तांत जानकर कहने लगे कि यह राजा पूर्व जन्म में एक निर्धन वैश्य था। निर्धन होने के कारण इसने कई बुरे कर्म किए। यह एक गाँव से दूसरे गाँव व्यापार करने जाया करता था।

ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन वह दो दिन से भूखा-प्यासा था मध्याह्न के समय, एक जलाशय पर जल पीने गया। उसी स्थान पर एक

तत्काल की प्रसूता हुई प्यासी गौ जल पी रही थी।

राजा ने उस प्यासी गाय को जलाशय से जल पीते हुए हटा दिया और स्वयं जल पीने लगा, इसीलिए राजा को यह दु:ख सहना पड़ा। एकादशी के दिन भूखा रहने से वह राजा हुआ और प्यासी गौ को जल पीते हुए हटाने के कारण पुत्र वियोग का दु:ख सहना पड़ रहा है। ऐसा सुनकर सब लोग कहने लगे कि हे ऋषि! शास्त्रों में पापों का प्रायश्चित भी लिखा है। अत: जिस प्रकार राजा का यह पाप नष्ट हो जाए, आप ऐसा उपाय बताइए।

लोमश मुनि कहने लगे कि श्रावण शुक्ल पक्ष की एकादशी को जिसे पुत्रदा एकादशी भी कहते हैं, तुम सब लोग व्रत करो और रात्रि को जागरण करो तो इससे राजा का यह पूर्व जन्म का पाप नष्ट हो जाएगा, साथ ही राजा को पुत्र की अवश्य प्राप्ति होगी। राजा के समस्त दु:ख नष्ट हो जायेंगे। "लोमश ऋषि के ऐसे वचन सुनकर मंत्रियों सहित सारी प्रजा नगर को वापस लौट आई और जब श्रावण शुक्ल एकादशी आई तो ऋषि की आज्ञानुसार सबने पुत्रदा एकादशी का व्रत और जागरण किया।

इसके पश्चात द्वादशी के दिन इसके पुण्य का फल राजा को मिल गया। उस पुण्य के प्रभाव से रानी ने गर्भ धारण किया और नौ महीने के पश्चात् ही उसके एक अत्यन्त तेजस्वी पुत्ररत्न पैदा हुआ ।

इसलिए हे राजन! इस श्रावण शुक्ल एकादशी का नाम पुत्रदा पड़ा। अत: संतान सुख की इच्छा रखने वाले मनुष्य को चाहिए के वे विधिपूर्वक श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत करें। इसके माहात्म्य को सुनने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है और इस लोक में संतान सुख भोगकर परलोक में स्वर्ग को प्राप्त होता है।

कथा का उद्देश्य : पाप करते समय हम यह नहीं सोचते कि हम क्या कर रहे है, लेकिन शास्त्रों से विदित होता है कि हमारे द्वारा किया गये गये छोटे या बडे पाप से हमें कष्ट भोगना पड़ता है, अतः हमें पाप से बचना चाहिए। क्योंकि पाप के कारण पीछले जन्म में किया गया कर्म का फल दूसरे जन्म में भी भोगना पड़ सकता हैं। इस लिए हमें चाहिए कि सत्यव्रत का पालन कर ईश्वरमें पूर्ण आस्था एवं निष्ठा रखे और यह बात सदैव ध्यान रखे कि किसी की भी आत्मा को गल्ती से भी कष्ट ना हो।

***

अजा (जया) एकादशी व्रत की पौराणिक कथा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

भाद्रपद मास कृष्णपक्ष की एकादशी

एक बार युधिष्ठिर भगवान श्रीकृष्ण से पूछते हैं, हे भगवान! भाद्रपद कृष्ण एकादशी का क्या नाम है? इसमें किस देवता की पूजा की जाती है और इसका व्रत करने से क्या फल मिलता है? " व्रत करने की विधि तथा इसका माहात्म्य कृपा करके कहिए। भगवान श्रीकृष्ण कहने लगे कि इस एकादशी का नाम **अजा एकादशी** है। अब आप शांतिपूर्वक इस व्रतकी कथा सुनिए। अजा एकादशी व्रत समस्त प्रकार के पापों का नाश करने वाली हैं। जो मनुष्य इस दिन भगवान ऋषिकेश की पूजा करता है उसको वैकुंठ की प्राप्ति अवश्य होती है। अब आप इसकी कथा सुनिए।

प्राचीनकाल में आयोध्या नगरी में हरिशचंद्र नामक एक चक्रवर्ती राजा राज्य करता था। हरिशचंद्र अत्यन्त वीर, प्रतापी तथा सत्यवादी था। एक बार दैवयोग से उसने अपना राज्य स्वप्न में किसी ऋषि को दान कर दिया और परिस्थितिवश के वशीभूत होकर अपना सारा राज्य व धन त्याग दिया, साथ ही अपनी स्त्री, पुत्र तथा स्वयं को भी बेच दिया।

उसने उस चाण्डाल के यहां मृतकों के वस्त्र लेने का काम किया । मगर किसी प्रकार से सत्य से विचलित नहीं हुआ। जब इसी प्रकार उसे कई वर्ष बीत गये तो उसे अपने इस कर्म पर बड़ा दु:ख हुआ और वह इससे मुक्त होने का उपाय खोजने लगा । कई बार राजा चिंता में डूबकर अपने मन में विचार करने लगता कि मैं कहाँ जाऊँ, क्या करूँ, जिससे मेरा उद्धार हो।

इस प्रकार राजा को कई वर्ष बीत गए। एक दिन राजा इसी चिंता में बैठा हुआ था कि बहाँ गौतम ऋषि आ गए। राजा ने उन्हें देखकर प्रणाम किया और अपनी सारी दु:खभरी कहानी कह सुनाई। यह बात सुनकर गौतम ऋषि कहने लगे कि राजन तुम्हारे भाग्य से आज से सात दिन बाद भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अजा नाम की एकादशी आएगी, तुम विधिपूर्वक व्रत करो तथा रात्रि को जागरण करो।

गौतम ऋषि ने कहा कि इस व्रत के पुण्य प्रभाव से तुम्हारे समस्त पाप नष्ट हो जाएँगे। इस प्रकार राजा से कहकर गौतम ऋषि उसी समय अंतर्ध्यान हो गए। राजा ने उनके कथनानुसार एकादशी आने पर विधिपूर्वक व्रत व जागरण किया। उस व्रत के प्रभाव से राजा के समस्त पाप नष्ट हो गए। स्वर्ग से बाजे-नगाड़े बजने लगे और पुष्पों की वर्षा होने लगी। उसने अपने सामने ब्रहमा, विष्णु, महादेवजी तथा इन्द्र आदि देवताओं को खड़ा पाया । उसने अपने मृतक पुत्र को जीवित और अपनी स्त्री को वस्त्र तथा आभूषणों से युक्त देखा। वास्तव में एक ऋषि ने राजा की परीक्षा लेने के लिए यह सब कौतुक किया था । किन्तु अजा एकादशी के व्रत के प्रभाव से सारा षड्यंत्र समाप्त हो गया और व्रत के प्रभाव से राजा को पुन: राज्य मिल गया। अंत में वह अपने परिवार सहित स्वर्ग को गया।

हे राजन! यह सब अजा एकादशी के प्रभाव से ही हुआ। अत: जो मनुष्य यत्न के साथ विधिपूर्वक इस व्रत को करते हुए रात्रि जागरण करते हैं, उनके समस्त पाप नष्ट होकर अंत में वे स्वर्गलोक को प्राप्त होते हैं। इस एकादशी की कथा के श्रवणमात्र से अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

कथा का उद्देश्य : हमें को ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था एवं निष्ठा रखनी चाहिए । विपरित परिस्थितियों में भी हमें सत्य का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए।

भारतीय संस्कृति में राखी पूर्णिमा का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

रक्षाबंधन- रक्षाबंधन अर्थात् प्रेम का बंधन। रक्षाबंधन के दिन बहन भाई के हाथ पर राखी बाँधती हैं। रक्षाबंधन के साथ हि भाई को अपने निःस्वार्थ प्रेम से बाँधती है।

भारतीय संस्कृति में आज के भौतिकतावादी समाज में भोग और स्वार्थ में लिप्त विश्व में भी प्रायः सभी संबंधों में निःस्वार्थ और पवित्र होता हैं।

भारतीय संस्कृति समग्र मानव जीवन को महानता के दर्शन कराने वाली संस्कृति हैं। भारतीय संस्कृति में स्त्री को केवल मात्र भोगदासी न समझकर उसका पूजन करने वाली महान संस्कृति हैं।

किन्तु आजका पढा लिखा आधुनिक व्यक्ति अपने आपको सुधरा हुवा मानने वाले तथा पाश्चात्य संस्कृति का अंधा अनुकरण करके, स्त्री को समानता दिलाने वाली खोखली भाषा बोलने वालों को पेहल भारत की पारंपरिक संस्कृति को पूर्ण समझ लेना चाहि की पाश्चात्य संस्कृति से तो केवल समानता दिलाई हो परंतु भारतीय संस्कृति ने तो स्त्री का पूजन किया हैं।

एसे हि नहीं कहाजाता हैं।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

भावार्थ: जहाँ स्त्री पूजी जाती है, उसका सम्मान होता है, वहाँ देव रमते हैं- वहाँ देवों का निवास होता है।' ऐसा भगवान मनु का वचन है।

भारतीय संस्कृति स्त्री की ओर भोग की दृष्टि से न देखकर पवित्र दृष्टि से, माँ की भावना से देखने का आदेश देने वाली सर्व श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति ही हैं।

हजारो वर्ष पूर्व हमारे पूर्वजो नें भारतीय संस्कृति में रक्षाबंधन का उत्सव शायद इस लिये शामिल किया क्योकि रक्षाबंधन के तौहार को दृष्टि परिवर्तन के उद्देश्य से बनाया गया हो?

बहन द्वारा राखी हाथ पर बंधते ही भाई की दृष्टि बदल जाए। राखी बाँधने वाली बहन की ओर वह विकृत दृष्टि न देखे, एवं अपनी बहन का रक्षण भी वह स्वयं करे। जिस्से बहन समाज में निर्भय होकर घूम सके। विकृत दृष्टि एवं मानसिकता वाले लोग उसका मजाक उड़ाकर नीच वृत्ति वाले लोगो को दंड देकर सबक सिखा सके हैं।

भाई को राखी बाँधने से पहले बहन उसके मस्तिष्क पर तिलक करती हैं। उस समय बहन भाई के मस्तिष्क की पूजा नहीं अपितु भाई के शुद्ध विचार और बुद्धि को निर्मल करने हेतु किया जाता हैं, तिलक लगाने से दृष्टि परिवर्तन की अद्भुत प्रक्रिया समाई हुई होती हैं।

भाई के हाथ पर राखी बाँधकर बहन उससे केवल अपना रक्षण ही नहीं चाहती, अपने साथ-साथ समस्त स्त्री जाति के रक्षण की कामना रखती हैं, इस के साथ हिं अपना भाई बाहय शत्रुओं और अंतर्विकारों पर विजय प्राप्त करे और सभी संकटो से उससे सुरक्षित रहे, यह भावना भी उसमें छिपी होती हैं। वेदों में उल्लेख है कि देव और असुर संग्राम में देवों की विजय प्राप्ति कि कामना के निमित्त देवि इंद्राणी ने हिम्मत हारे हुए इंद्र के हाथ में हिम्मत बंधाने हेतु राखी बाँधी थी। एवं देवताओं की विजय से रक्षाबंधन का त्योहार शुरू हुआ। अभिमन्यु की रक्षा के निमित्त कुंतामाता ने उसे राखी बाँधी थी।

इसी संबंध में एक और किंवदंती प्रसिद्ध है कि देवताओं और असुरों के युद्ध में देवताओं की विजय को लेकर कुछ संदेह होने लगा। तब देवराज इंद्र ने इस युद्ध में प्रमुखता से भाग लिया था। देवराज इंद्र की पत्नी इंद्राणी

श्रावण पूर्णिमा के दिन गुरु बृहस्पति के पास गई थी तब उन्होंने विजय के लिए रक्षाबंधन बाँधने का सुझाव दिया था। जब देवराज इंद्र राक्षसों से युद्ध करने चले तब उनकी पत्नी इंद्राणी ने इंद्र के हाथ में रक्षाबंधन बाँधा था, जिससे इंद्र विजयी हुए थे।

अनेक पुराणों में श्रावणी पूर्णिमा को पुरोहितों द्वारा किया जाने वाला आशीर्वाद कर्म भी माना जाता है। ये ब्राह्मणों द्वारा यजमान के दाहिने हाथ में बाँधा जाता है।

पुराणों में ऐसी भी मान्यता है कि महर्षि दुर्वासा ने ग्रहों के प्रकोप से बचने हेतु रक्षाबंधन की व्यवस्था दी थी। महाभारत युग में भगवान श्रीकृष्ण ने भी ऋषियों को पूज्य मानकर उनसे रक्षा-सूत्र बँधवाने को आवश्यक माना था ताकि ऋषियों के तप बल से भक्तों की रक्षा की जा सके।

ऐतिहासिक कारणों से मध्ययुगीन भारत में रक्षाबंधन का पर्व मनाया जाता था। शायद हमलावरों की वजह से महिलाओं के शील की रक्षा हेतु इस पर्व की महत्ता में इजाफा हुआ हो। तभी महिलाएँ सगे भाइयों या मुँहबोले भाइयों को रक्षासूत्र बाँधने लगीं। यह एक धर्म-बंधन था।

रक्षाबंधन पर्व पुरोहितों द्वारा किया जाने वाला आशीर्वाद कर्म भी माना जाता है। ये ब्राह्मणों द्वारा यजमान के दाहिने हाथ में बाँधा जाता है।

रक्षाबंधन का एक मंत्र भी है, जो पंडित रक्षा-सूत्र बाँधते समय पढ़ते हैं :

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचलः॥

भविष्योत्तर पुराण में राजा बलि (श्रीरामचरित मानस के बालि नहीं) जिस रक्षाबंधन में बाँधे गए थे, उसकी कथा अक्सर उद्धृत की जाती है। बलि के संबंध में विष्णु के पाँचवें अवतार (पहला अवतार मानवों में राम थे) वामन की कथा है कि बलि से संकल्प लेकर उन्होंने तीन कदमों में तीनों लोकों में सबकुछ नाप लिया था। वस्तुतः दो ही कदमों में वामन रूपी विष्णु ने सबकुछ नाप लिया था और फिर तीसरे कदम,जो बलि के सिर पर रखा था, उससे उसे पाताल लोक पहुँचा दिया था। लगता है रक्षाबंधन की परंपरा तब से किसी न किसी रूप में विद्यमान थी।

राखी पूर्णिमा से जुडि पौराणिक कथाएं

संकलन गुरुत्व कार्यालय
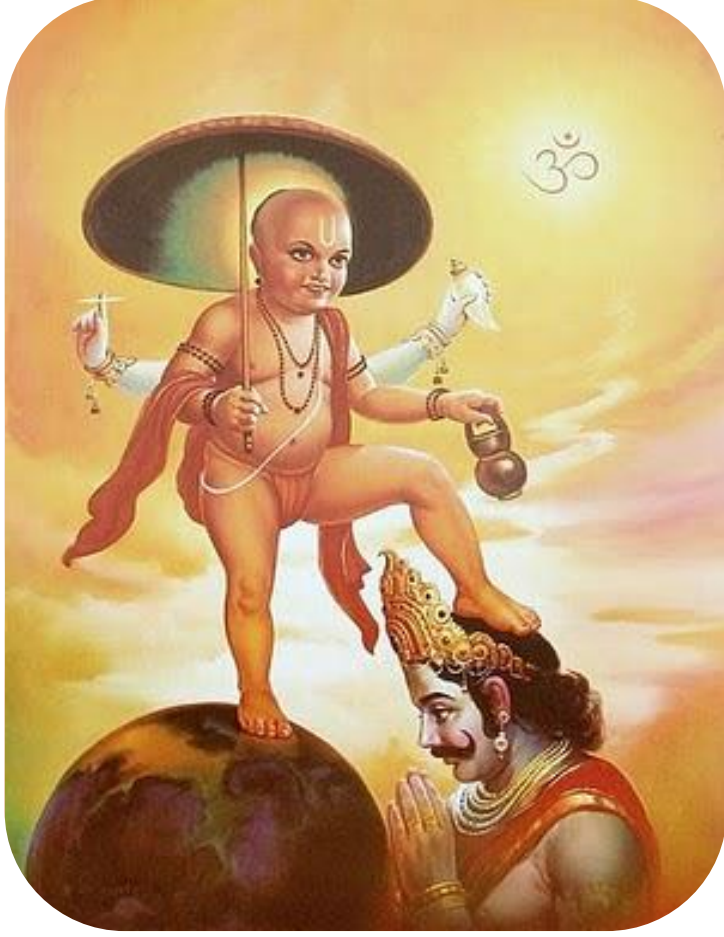
वामनावतार कथा

पोराणिक कथा के अनुशार एकबार सौ यज्ञ पूर्ण कर लेने पर दानवो के राजा बलि के मन में स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा प्रबल हो गई तो इन्द्र का सिंहासन डोलने लगा। इन्द्र आदि देवताओं ने भगवान विष्णु से रक्षा की प्रार्थना की। भगवान ने वामन अवतार लेकर ब्राह्मण का वेष धारण कर लिया और राजा बलि से भिक्षा मांगने पहुँच गए। भगवान विष्णुने बलि से तीन पग भूमि भिक्षा में मांग ली।

बलि के गुरु शुक्रदेवजी ने ब्राह्मण रुप धारण किए हुए श्री विष्णु को पहचान लिया और बलि को इस बारे में सावधान कर दिया किंतु बलि अपने वचन से न फिरे और तीन पग भूमि दान कर दी।

अब वामन रूप में भगवान विष्णु ने एक पग में स्वर्ग और दूसरे पग में पृथ्वी को नाप लिया। तीसरा पैर कहाँ रखें? बलि के सामने संकट उत्पन्न हो गया। यदि वह अपना वचन नहीं निभाता तो अधर्म होता। आखिरकार उसने अपना सिर भगवान के आगे कर दिया और कहा तीसरा पग आप मेरे सिर पर रख दीजिए। वामन भगवान ने वैसा ही किया। पैर रखते ही वह रसातल लोक में पहुँच गया।

जब बाली रसातल में चला गया तब बलि ने अपनी भक्ति के बल से भगवान को रात-दिन अपने सामने रहने का वचन ले लिया और भगवान विष्णु को उनका द्वारपाल बनना पड़ा। भगवान के रसातल निवास से परेशान कि यदि स्वामी रसातल में द्वारपाल बन कर निवास करेंगे तो बैकुंठ लोक का क्या होगा? इस समस्या के समाधान के लिए लक्ष्मी जी को नारद जी ने एक उपाय सुझाया। लक्ष्मी जी ने राजा बलि के पास जाकर उसे रक्षाबन्धन बांधकर अपना भाई बनाया और उपहार स्वरुप अपने पति भगवान विष्णु को अपने साथ ले आयीं। उस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि थी यथा रक्षा-बंधन मनाया जाने लगा।

भविष्य पुराण की कथा

भविष्य पुराण की एक कथा के अनुसार एक बार देवता और दानवों में बारह वर्षों तक युद्ध हुआ परन्तु देवता विजयी नहीं हुए। इंद्र हार के भय से दु:खी होकर देवगुरु बृहस्पति के पास विमर्श हेतु गए। गुरु बृहस्पति के सुझाव पर इंद्र की पत्नी महारानी शची ने श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन विधि-विधान से व्रत करके रक्षासूत्र तैयार किए और स्वास्तिवाचन के साथ ब्राह्मण की उपस्थिति में इंद्राणी ने वह सूत्र इंद्र की दाहिनी कलाई में बांधा जिसके फलस्वरुप इन्द्र सहित समस्त देवताओं की दानवों पर विजय हुई।

रक्षा विधान के समय निम्न जिस मंत्र का उच्चारण किया गया था उस मंत्र का आज भी विधिवत पालन किया जाता है:

"येन बद्धोबली राजा दानवेन्द्रो महाबल: ।
तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ।।"

इस मंत्र का भावार्थ है कि दानवों के महाबली राजा बलि जिससे बांधे गए थे, उसी से तुम्हें बांधता हूँ। हे रक्षे! (रक्षासूत्र) तुम चलायमान न हो, चलायमान न हो। यह रक्षा विधान श्रवण मास की पूर्णिमा को प्रातः काल संपन्न किया गया यथा रक्षा-बंधन अस्तित्व में आया और श्रवण मास की पूर्णिमा को मनाया जाने लगा।

महाभारत काल में द्रौपदी द्वारा श्री कृष्ण को तथा कुन्ती द्वारा अभिमन्यु को राखी बांधने के वृत्तांत मिलते हैं। महाभारत में ही रक्षाबंधन से संबंधित कृष्ण और द्रौपदी का एक और वृत्तांत मिलता है। जब कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया तब उनकी तर्जनी में चोट आ गई। द्रौपदी ने उस समय अपनी साड़ी फाड़कर उनकी उँगली पर पट्टी बाँध दी। यह श्रावण मास की पूर्णिमा का दिन था। श्रीकृष्ण ने बाद में द्रौपदी के चीर-हरण के समय उनकी लाज बचाकर भाई का धर्म निभाया था।

हिन्दू संस्कृति में कृष्ण जन्माष्टमी व्रत का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्री कृष्णजन्माष्टमी को भगवान श्री कृष्ण के जनमोत्स्व के रुप में मनाया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण के भगवद गीता में वर्णित उपदेश पुरातन काल से ही हिन्दु संस्कृति में आदर्श रहे हैं। जन्माष्टमी का त्यौहार पुरे विश्व में हर्षोल्लास एवं आस्था से मनाया जाता हैं। श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मध्यरात्रि को मथुरा में कारागृह में हुवा। जैसे की इस जिन समग्र संसार के पालन कर्ता स्वयं अवतरित हुएं थे। अत: इस दिन को कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाने की परंपरा सदियों से चली आरही हैं।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के लिए देश-दुनिया के विभिन्न कृष्ण मंदिरों को विशेष तौर पर सजाया जाता है। जन्माष्टमी के दिन व्रती बारह बजे तक व्रत रखते हैं। इस दिन मंदिरों में भगवान श्री कृष्ण की विभिन्न झांकीयां सजाई जाती है और रासलीला का आयोजन होता है। भगवान श्री कृष्ण की बाल स्वरुप प्रतिमा को विभिन्न शृंगार सामग्रीयों से सुसज्जित कर प्रतिमा को पालने में स्थापित कर कृष्ण मध्यरात्री को झूला झुलाया जाता हैं।

धर्मशास्त्रों के जानकारों ने श्रीकृष्णजन्माष्टमीका व्रत सनातन-धर्मावलंबियों के लिए विशेष महत्व पूर्ण बताया है। इस दिन उपवास रखने तथा अन्न का सेवन नहीं करने का विधान धर्मशास्त्रों में वर्णित हैं।

गौतमीतंत्रमें यह उल्लेख है-

उपवास: प्रकर्तव्योन भोक्तव्यंकदाचन।
कृष्णजन्मदिनेयस्तुभुङ्क्तेसतुनराधम:।
निवसेन्नरकेघोरेयावदाभूतसम्प्लवम्॥

अर्थात: अमीर-गरीब सभी लोग यथाशक्ति-यथासंभव उपचारों से योगेश्वर कृष्ण का जन्मोत्सव मनाएं। जब तक उत्सव सम्पन्न न हो जाए तब तक भोजन बिल्कुल न करें। जो वैष्णव कृष्णाष्टमी के दिन भोजन करता है, वह निश्चय ही नराधम है। उसे प्रलय होने तक घोर नरक में रहना पडता है।

इसी लिए जन्माष्टमी के दिन भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा का विधि-विधान से पूजन इत्यादि करने का विशेष महत्व सनातन धर्म में रहा हैं। धर्मग्रंथों में जन्माष्टमी की रात्रि में जागरण का विधान भी बताया गया है। विद्वानों का मत हैं की कृष्णाष्टमी की रात में भगवान श्रीकृष्ण के नाम का संकीर्तन इत्यादि करने से भक्त को श्रीकृष्ण की विशेष कृपा प्राप्ति होती हैं। धर्मग्रंथों में जन्माष्टमी के व्रत में पूरे दिन उपवास रखने का नियम है, परंतु इसमें असमर्थ लोग फलाहार कर सकते हैं।

भविष्यपुराण में उल्लेख हैं

जिस राष्ट्र या प्रदेश में यह व्रत-उत्सव विधि-विधान से मनाया जाता है, वहां पर प्राकृतिक प्रकोप या महामारी इत्यादि नहीं होती। मेघ पर्याप्त वर्षा करते हैं

तथा फसल खूब होती है। जनता सुख-समृद्धि प्राप्त करती है। इस व्रत के अनुष्ठान से सभी व्रतीयों को परम श्रेय की प्राप्ति होती है। व्रत कर्ता भगवत्कृपा का भागी बनकर इस लोक में सब सुख भोगता है और अन्त में वैकुंठ जाता है। कृष्णाष्टमी का व्रत करने वाले के सभी प्रकार क्लेश दूर हो जाते हैं। उसका दुख-दरिद्रता से उद्धार होता है।

स्कन्द पुराण में उल्लेख हैं कि जो भी व्यक्ति इस व्रत के महत्व को जानकर भी कृष्ण जन्माष्टमी व्रत को नहीं करता, वह मनुष्य जंगल में सर्प और व्याघ्र होता है।

भविष्य पुराण उल्लेख हैं, कि कृष्ण जन्माष्टमी व्रत को जो मनुष्य नहीं करता, वह क्रूर राक्षस होता है। केवल अष्टमी तिथि में ही उपवास करना कहा गया है। यदि वही तिथि रोहिणी नक्षत्र से युक्त हो तो उसे 'जयंती' नाम से संबोधित की जाएगी।

विभिन्न धर्मशास्त्रों में उल्लेख हैं, कि जो उत्तम मनुष्य है। वे निश्चित रूप से जन्माष्टमी व्रत को इस लोक में करते हैं। उनके पास सदैव स्थिर लक्ष्मी होती है। इस व्रत के करने के प्रभाव से उनके समस्त कार्य सिद्ध होते हैं।

यदि आधी रात के समय रोहिणी में जब कृष्णाष्टमी हो तो उसमें कृष्ण का अर्चन और पूजन करने से तीन जन्मों के पापों का नाश होता है। महर्षि भृगु ने कहा है- जन्माष्टमी, रोहिणी और शिवरात्रि ये पूर्वविद्धा ही करनी चाहिए तथा तिथि एवं नक्षत्र के अन्त में पारणा करें। इसमें केवल रोहिणी उपवास ही सिद्ध है।

शास्त्रकारों नें श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी की रात्रि को **मोहरात्रि** कहा है। इस रात में भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान, नाम अथवा मंत्र जपते हुए जागरण करने से संसार की मोह-माया से आसक्ति दूर होती है। जन्माष्टमी के व्रत को व्रतराज कहां गया है। क्योंकि, इस व्रत को पूर्ण विधि-विधान से करने से मनुष्य को अनेक व्रतों से प्राप्त होने वाले महान पुण्य का फल केवल इस व्रत के करने से प्राप्त हो जाता हैं।

कृष्ण जन्माष्टमी व्रत की पौराणिक कथा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक बार इंद्र ने नारद जी से कहा "हे मुनियों में सर्वश्रेष्ठ, सभी शास्त्रों के ज्ञाता, हे देव, व्रतों में उत्तम उस व्रत को बताएँ, जिस व्रत के करने से मनुष्यों को मुक्ति, लाभ प्राप्त हो तथा उस व्रत से प्राणियों को भोग व मोक्ष दोनो की प्राप्ति हो जाए।"

देवराज इंद्र के वचनों को सुनकर नारद जी ने कहा "त्रेता युग के अंत में और द्वापर युग के प्रारंभ समय में धृणित कर्म को करने वाला कंस नाम का एक अत्यंत पापी दैत्य हुआ। उस दुष्ट व दुराचारी कंस की देवकी नाम की एक सुंदर व सुशील बहन थी। उस देवकी के गर्भ से उत्पन्न आठवाँ पुत्र कंस का वध करेगा।"

नारद जी की बातें सुनकर इंद्र ने कहा हे प्रभो "उस दुराचारी कंस की कथा का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए। क्या देवकी के गर्भ से उत्पन्न आठवाँ पुत्र अपने मामा कंस की हत्या करेगा! यह संभव है।" इंद्र की सन्देह भरी बातों को सुनकर नारदजी ने कहा हे अदिति पुत्र इंद्र! एक समय की बात है। उस दुष्ट कंस ने एक ज्योतिषी से पूछा "मेरी मृत्यु किस प्रकार और किसके द्वारा होगी।" ज्योतिषी बोले "हे दानवों में श्रेष्ठ कंस! "वसुदेव की पत्नी देवकी है और आपकी बहन भी है। उसी के गर्भ से उत्पन्न उसका आठवां पुत्र जो कि शत्रुओं को पराजित कर इस संसार में "कृष्ण" के नाम से विख्यात होगा, वही एक समय सूर्योदय काल में आपका वध करेगा।" ज्योतिषी की बातों को सुनकर कंस ने कहा "हे दैवज, अब आप यह बताएं कि देवकी का आठवां पुत्र किस मास में किस दिन मेरा वध करेगा।" ज्योतिषी बोले "हे महाराज! माघ मास की शुक्ल पक्ष की तिथि को सोलह कलाओं से पूर्ण श्रीकृष्ण से आपका युद्ध होगा। उसी युद्ध में वे आपका वध करेंगे। इसलिए हे महाराज! आप अपनी रक्षा यत्नपूर्वक करें।"

इतना बताने के पश्चात नारद जी ने इंद्र से कहा "ज्योतिषी द्वारा बताए गए समय पर ही कंस की मृत्यु कृष्ण के हाथ निःसंदेह होगी।" तब इंद्र ने कहा "हे मुनि! उस दुराचारी कंस की कथा का वर्णन कीजिए, और बताइए कि कृष्ण का जन्म कैसे होगा तथा कंस की मृत्यु कृष्ण द्वारा किस प्रकार होगी।"

इंद्र की बातों को सुनकर नारदजी ने पुनः कहना प्रारंभ किया "उस दुराचारी कंस ने अपने एक द्वारपाल से कहा मेरी इस प्राणों से प्रिय बहन देवकी की पूर्ण सुरक्षा करना।" द्वारपाल ने कहा "ऐसा ही होगा महाराज।" कंस के जाने के पश्चात उसकी छोटी बहन देवकी दुःखित होते हुए जल लेने के बहाने घड़ा लेकर तालाब पर गई। उस तालाब के किनारे एक वृक्ष के नीचे बैठकर देवकी रोने लगी। उसी समय एक सुंदर स्त्री, जिसका नाम यशोदा था, उसने आकर देवकी से प्रिय वाणी में कहा "हे देवी! इस प्रकार तुम क्यों विलाप कर रही हो। अपने रोने का कारण मुझसे बताओ।" तब दुखी देवकी ने यशोदा से कहा "हे बहन! नीच कर्मों में आसक्त दुराचारी मेरा ज्येष्ठ भ्राता कंस है।

उस दुष्ट भ्राता ने मेरे कई पुत्रों का वध कर दिया। इस समय मेरे गर्भ में आठवाँ पुत्र है। वह इसका भी वध कर डालेगा, क्योंकि मेरे ज्येष्ठ भ्राता को यह भय है कि मेरे अष्टम पुत्र से उसकी मृत्यु अवश्य होगी।"

देवकी की बातें सुनकर यशोदा ने कहा "हे बहन! विलाप मत करो। मैं भी गर्भवती हूँ। यदि मुझे कन्या हुई तो तुम अपने पुत्र के बदले उस कन्या को ले लेना। इस प्रकार तुम्हारा पुत्र कंस के हाथों मारा नहीं जाएगा।"

कंस ने वापस आकर अपने द्वारपाल से पूछा "देवकी कहाँ है? इस समय वह दिखाई नहीं दे रही है।" तब द्वारपाल ने कंस से नम्रवाणी में कहा "हे महाराज! आपकी बहन जल लेने तालाब पर गई हुई हैं।" यह सुनते ही कंस क्रोधित हो उठा और उसने द्वारपाल को उसी स्थान पर जाने को कहा जहां वह गई हुई है। द्वारपाल की दृष्टि तालाब के पास देवकी पर पड़ी। तब उसने कहा कि "आप किस कारण से यहाँ आई हैं।" उसकी बातें सुनकर देवकी ने कहा कि "मेरे घर में जल नहीं था, मैं जल लेने जलाशय पर आई हूँ।" इसके पश्चात देवकी अपने घर की ओर चली गई।

कंस ने पुनः द्वारपाल से कहा कि इस घर में मेरी बहन की तुम पूर्णतः रक्षा करो। अब कंस को इतना भय लगने लगा कि घर के भीतर दरवाजों में विशाल ताले बंद करवा दिए जैसे कोई कारागार हो और दरवाज़े के बाहर दैत्यों और राक्षसों को पहरेदारी के लिए नियुक्त कर दिया। कंस हर प्रकार से अपने प्राणों को बचाने के प्रयास कर रहा था। तब सभी प्रकार के शुभ मुहूर्त में श्री कृष्ण का जन्म हुआ और श्रीकृष्ण के प्रभाव से ही उसी क्षण बन्दीगृह के दरवाज़े स्वयं खुल गए। द्वार पर पहरा देने वाले पहरेदार राक्षस सभी मूर्च्छित हो गए। देवकी ने उसी क्षण अपने पति वसुदेव से कहा "हे स्वामी! आप निद्रा का त्याग करें और मेरे इस पुत्र को गोकुल में ले जाएँ, वहाँ इस पुत्र को नंद गोप की धर्मपत्नी यशोदा को दे दें। उस समय यमुनाजी पूर्णरूप से बाढ़ग्रस्त थीं, किन्तु जब वसुदेवजी बालक कृष्ण को सूप में लेकर यमुनाजी को पार करने के लिए उतरे उसी क्षण बालक के चरणों का स्पर्श होते ही यमुनाजी अपने पूर्व स्थिर रूप में आ गईं। किसी प्रकार वसुदेवजी गोकुल पहुँचे और नंद के घर में प्रवेश कर उन्होंने अपना पुत्र तत्काल उन्हें दे दिया और उसके बदले में उनकी कन्या ले ली। वे तत्काल वहां से वापस आकर कंस के बंदी गृह में पहुँच गए।

प्रातःकाल जब सभी राक्षस पहरेदार निद्रा से जागे तो कंस ने द्वारपाल से पूछा कि अब देवकी के गर्भ से क्या हुआ? इस बात का पता लगाकर मुझे बताओ। द्वारपालों ने महाराज की आज्ञा को मानते हुए कारागार में जाकर देखा तो वहाँ देवकी की गोद में एक कन्या थी। जिसे देखकर द्वारपालों ने कंस को सूचित किया, किन्तु कंस को तो उस कन्या से भय होने लगा। अतः वह स्वयं कारागार में गया और उसने देवकी की गोद से कन्या को झपट लिया और उसे एक पत्थर की चट्टान पर पटक दिया किन्तु वह कन्या विष्णु की माया से आकाश की ओर चली गई और अंतरिक्ष में जाकर विद्युत के रूप में परिणित हो गई।

भगवान विष्णु ने आकाशवाणी कर कंस से कहा कि "हे दुष्ट! तुझे मारने वाला गोकुल में नंद के घर में उत्पन्न हो चुका है और उसी से तेरी मृत्यु सुनिश्चित है। मेरा नाम तो वैष्णवी है, मैं संसार के कर्ता भगवान विष्णु की माया से उत्पन्न हुई हूँ।" इतना कहकर वह स्वर्ग की ओर चली गई। उस आकाशवाणी को सुनकर कंस क्रोधित हो उठा। उसने नंद के घर में पूतना, केशी नामक दैत्य, काल्याख्य इत्यादि बलवान राक्षसों की मृत्यु के आघात से कंस अत्यधिक भयभीत हो गया। उसने द्वारपालों को आज्ञा दी कि नंद को तत्काल मेरे समक्ष उपस्थित करो। द्वारपाल नंद को लेकर जब उपस्थित हुए तब कंस ने नंद से कहा कि यदि तुम्हें अपने प्राणों को बचाना है तो पारिजात के पुष्प ले

लाओ। यदि तुम नहीं ला पाए तो तुम्हारा वध निश्चित है।

कंस की बातों को सुनकर नंद ने 'ऐसा ही होगा' कहा और अपने घर की ओर चले गए। घर आकर उन्होंने संपूर्ण वृत्तांत अपनी पत्नी यशोदा को सुनाया, जिसे श्रीकृष्ण भी सुन रहे थे। एक दिन श्रीकृष्ण अपने मित्रों के साथ यमुना नदी के किनारे गेंद खेल रहे थे और अचानक स्वयं ने ही गेंद को यमुना में फेंक दिया। यमुना में गेंद फेंकने का मुख्य उद्देश्य यही था कि वे किसी प्रकार पारिजात पुष्पों को ले आएँ। अतः वे कदम्ब के वृक्ष पर चढ़कर यमुना में कूद पड़े।

कृष्ण के यमुना में कूदने का समाचार 'श्रीधर' नामक गोपाल ने यशोदा को सुनाया। यह सुनकर यशोदा भागती हुई यमुना नदी के किनारे आ पहुँचीं और उसने यमुना नदी की प्रार्थना करते हुए कहा- 'हे यमुना! यदि मैं बालक को देखूँगी तो भाद्रपद मास की रोहिणी युक्त अष्टमी का व्रत अवश्य करूंगी, क्योकि हज़ारों अश्वमेध यज्ञ, सहस्रों राजसूय यज्ञ, दान तीर्थ और व्रत करने से जो फल प्राप्त होता है, वह सब कृष्णाष्टमी के व्रत को करने से प्राप्त हो जाता है।

यह बात नारद ऋषि ने इंद्र से कही। इंद्र ने कहा- 'हे मुनियों में श्रेष्ठ नारद! यमुना नदी में कूदने के बाद उस बालरूपी कृष्ण ने पाताल में जाकर क्या किया? यह संपूर्ण वृत्तांत भी बताएँ।' नारद ने कहा- 'हे इंद्र! पाताल में उस बालक से नागराज की पत्नी ने कहा कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो, कहाँ से आए हो और यहाँ आने का क्या प्रयोजन है?'

नागपत्नी बोलीं- 'हे कृष्ण! क्या तूने द्यूतक्रीड़ा की है, जिसमें अपना समस्त धन हार गया है। यदि यह बात ठीक है तो कंकड़, मुकुट और मणियों का हार लेकर अपने घर में चले जाओ क्योंकि इस समय मेरे स्वामी शयन कर रहे हैं। यदि वे उठ गए तो वे तुम्हारा भक्षण कर जाएँगे। नागपत्नी की बातें सुनकर कृष्ण ने कहा हे कान्ते! मैं किस प्रयोजन से यहाँ आया हूँ, वह वृत्तांत मैं तुम्हें बताता हूँ। समझ लो मैं कालिय नाग के मस्तक को कंस के साथ द्यूत में हार चुका हूं और वही लेने मैं यहाँ आया हूँ। बालक कृष्ण की इस बात को सुनकर नागपत्नी अत्यंत क्रोधित हो उठीं और अपने सोए हुए पति को उठाते हुए उसने कहा हे स्वामी! आपके घर यह शत्रु आया है। अतः आप इसका हनन कीजिए।

अपनी स्वामिनी की बातों को सुनकर कालिया नाग निन्द्रावस्था से जाग पड़ा और बालक कृष्ण से युद्ध करने लगा। इस युद्ध में कृष्ण को मूर्च्छा आ गई, उसी मूर्छा को दूर करने के लिए उन्होंने गरुड़ का स्मरण किया। स्मरण होते ही गरुड़ वहाँ आ गए। श्रीकृष्ण अब गरुड़ पर चढ़कर कालिया नाग से युद्ध करने लगे और उन्होंने कालिय नाग को युद्ध में पराजित कर दिया।

अब कलिया नाग ने भलीभांति जान लिया था कि मैं जिनसे युद्ध कर रहा हूँ, वे भगवान विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण ही हैं। अतः उन्होंने कृष्ण के चरणों में साष्टांग प्रणाम किया और पारिजात से उत्पन्न बहुत से पुष्पों को मुकुट में रखकर कृष्ण को भेंट किया। जब कृष्ण चलने को हुए तब कालिया नाग की पत्नी ने कहा हे स्वामी! मैं कृष्ण को नहीं जान पाई। हे जनार्दन मंत्र रहित, क्रिया रहित, भक्तिभाव रहित मेरी रक्षा कीजिए। हे प्रभु! मेरे स्वामी मुझे वापस दे दें।' तब श्रीकृष्ण ने कहा- 'हे सर्पिणी! दैत्यों में जो सबसे बलवान है, उस कंस के सामने मैं तेरे पति को ले जाकर छोड़ दूँगा इसलिए तुम अपने घर को चली जाओ। अब श्रीकृष्ण कालिया नाग के फन पर नृत्य करते हुए यमुना के ऊपर आ गए।

फिर कालिया की फुंकार से तीनों लोक कम्पायमान हो गए। अब कृष्ण कंस की मथुरा नगरी को चल दिए। वहां कमलपुष्पों को देखकर यमुना के मध्य जलाशय में वह कालिया सर्प भी चला गया।

इधर कंस भी विस्मित हो गया तथा कृष्ण प्रसन्नचित्त होकर गोकुल लौट आए। उनके गोकुल आने पर उनकी माता यशोदा ने विभिन्न प्रकार के उत्सव किए। अब इंद्र ने नारदजी से पूछा हे महामुने! संसार के प्राणी बालक श्रीकृष्ण के आने पर अत्यधिक आनंदित हुए।

फिर भगवान श्रीकृष्ण ने कंस के महाबलशाली भाई चाणूर चाणूर से मल्लयुद्ध की घोषणा की। चाणूर

से मल्लयुद्ध के दौरान श्रीकृष्ण ने अपने पैरों को चाणूर के गले में फँसाकर उसका वध कर दिया। चाणूर की मृत्यु के पश्चात उनका मल्लयुद्ध केशी के साथ हुआ। इस युद्ध में श्रीकृष्ण और बलदेव ने असंख्य दैत्यों का वध किया। बलरामजी ने अपने आयुध शस्त्र हल से और कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से माघ मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी को विशाल दैत्यों के समूह का सर्वनाश किया। जब अन्त में केवल दुराचारी कंस ही बच गया तो कृष्ण ने कहा- हे दुष्ट, अधर्मी, दुराचारी अब मैं इस महायुद्ध स्थल पर तुझसे युद्ध कर तथा तेरा वध कर इस संसार को तुझसे मुक्त कराऊँगा। यह कहते हुए श्रीकृष्ण ने उसके केशों को पकड़ लिया और कंस को घुमाकर पृथ्वी पर पटक दिया, जिससे वह मृत्यु को प्राप्त हुआ। कंस के मरने पर देवताओं ने शंखघोष व पुष्पवृष्टि की। वहां उपस्थित समुदाय श्रीकृष्ण की जय-जयकार कर रहा था। कंस की मृत्यु पर नंद, देवकी,

वसुदेव, यशोदा और इस संसार के सभी प्राणियों ने हर्ष

पर्व मनाया।

इस कथा को सुनने के पश्चात इंद्र ने नारदजी से कहा हे ऋषि इस कृष्ण जन्माष्टमी का पूर्ण विधान बताएं एवं इसके करने से क्या पुण्य प्राप्त होता है, इसके करने की क्या विधि है?

नारदजी ने कहा हे इंद्र! भाद्रपद मास की कृष्णजन्माष्टमी को इस व्रत को करना चाहिए। उस दिन ब्रह्मचर्य आदि नियमों का पालन करते हुए श्रीकृष्ण का स्थापन करना चाहिए। सर्वप्रथम श्रीकृष्ण की मूर्ति स्वर्ण कलश के ऊपर स्थापित कर चंदन, धूप, पुष्प, कमलपुष्प आदि से श्रीकृष्ण प्रतिमा को वस्त्र इत्यादि से सुसज्जित कर विधिपूर्वक पूजन-अर्चन करना चाहिए। उपवास की पूर्व रात्रि को हल्का भोजन करें और ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

कृष्ण के मुख में ब्रह्मांड दर्शन

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक बार बलराम सहित ग्वाल बाल खेल रहें थे खेलते-खेलते यशोदा के पास पहुँचे और यशोदाजी से कहा माँ! कृष्ण ने आज मिट्टी खाई हैं। यशोदा ने कृष्ण के हाथों को पकड़ लिया और धमकाने लगी कि तुमने मिट्टी क्यों खाई! यशोदा को यह भय था कि कहीं मिट्टी खाने से कृष्ण कोई रोग न लग जाए। माँ कि डांट से कृष्ण तो इतने भयभीत हो गए थे कि वे माँ की ओर आँख भी नहीं उठा पा रहे थे। तब यशोदा ने कहा तूने एकान्त में मिट्टी क्यों खाई! मिट्टी खाते हुए तुजे बलराम सहित और भी ग्वाल ने देखा हैं। कृष्ण ने कहा- मिट्टी मैंने नहीं खाई हैं। ये सभी लोग झुठ बोल रहे हैं। यदि आपको लगता हैं मैंने मिट्टी खाई हैं, तो स्वयं मेरा मुख देख ले। माँ ने कहा यदि ऐसा है तो तू अपना मुख खोल। लीला करने के लिए बाल कृष्ण ने अपना मुख माँ के समक्ष खोल दिया। यशोदा ने जब मुख के अंदर देखते हि उसमें संपूर्ण विश्व दिखाई पड़ने लगा। अंतरिक्ष, दिशाएँ, द्वीप, पर्वत, समुद्र, पृथ्वी,वायु, विद्युत, तारा सहित स्वर्गलोक, जल, अग्नि, वायु, आकाश इत्यादि विचित्र संपूर्ण विश्व एक ही काल में दिख पड़ा। इतना ही नहीं, यशोदा ने उनके मुख में ब्रज के साथ स्वयं अपने आपको भी देखा।

इन बातों से यशोदा को तरह-तरह के तर्क-वितर्क होने लगे। क्या मैं स्वप्न देख रही हूँ! या देवताओं की कोई माया हैं या मेरी बुद्धि ही व्यामोह हैं या इस मेरे कृष्ण का ही कोई स्वाभाविक प्रभावपूर्ण चमत्कार हैं। अन्त में उन्होंने यही दृढ़ निश्चय किया कि अवश्य ही इसी का चमत्कार है और निश्चय ही ईश्वर इसके रूप में अवतरित हुएं हैं। तब उन्होंने कृष्ण की स्तुति की उस शक्ति स्वरुप परब्रहम को मैं नमस्कार करती हूँ। कृष्ण ने जब देखा कि माता यशोदा ने मेरा तत्व पूर्णतः समझ लिया हैं तब उन्होंने तुरंत पुत्र स्नेहमयी अपनी शक्ति रूप माया बिखेर दी जिससे यशोदा क्षण में ही सबकुछ भूल गई। उन्होंने कृष्ण को उठाकर अपनी गोद में उठा लिया।

कृष्ण स्मरण का आध्यात्मिक महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्री शुकदेवजी राजा परीक्षित् से कहते हैं-

सकृन्मनः कृष्णापदारविन्दयोर्निवेशितं तद्गुणरागि यैरिह।
न ते यमं पाशभृतश्च तद्भटान् स्वप्नेऽपि पश्यन्ति हि चीर्णनिष्कृताः॥

भावार्थ: जो मनुष्य केवल एक बार श्रीकृष्ण के गुणों में प्रेम करने वाले अपने चित्त को श्रीकृष्ण के चरण कमलों में लगा देते हैं, वे पापों से छूट जाते हैं, फिर उन्हें पाश हाथ में लिए हुए यमदूतों के दर्शन स्वप्न में भी नहीं हो सकते।

अविस्मृतिः कृष्णपदारविन्दयोः
क्षिणोत्यभद्रणि शमं तनोति च।
सत्वस्य शुद्धिं परमात्मभक्तिं
ज्ञानं च विज्ञानविरागयुक्तम्॥

भावार्थ: श्रीकृष्ण के चरण कमलों का स्मरण सदा बना रहे तो उसी से पापों का नाश, कल्याण की प्राप्ति, अन्तः करण की शुद्धि, परमात्मा की भक्ति और वैराग्ययुक्त ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति अपने आप ही हो जाती हैं।

पुंसां कलिकृतान्दोषान्द्रव्यदेशात्मसंभवान्।
सर्वान्हरित चित्तस्थो भगवान्पुरुषोत्तमः॥

भावार्थ:भगवान पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण जब चित्त में विराजते हैं, तब उनके प्रभाव से कलियुग के सारे पाप और द्रव्य, देश तथा आत्मा के दोष नष्ट हो जाते हैं।

शय्यासनाटनालाप्रीडास्नानादिकर्मसु।
न विदुः सन्तमात्मानं वृष्णयः कृष्णचेतसः॥

भावार्थ: श्रीकृष्ण को अपना सर्वस्व समझने वाले भक्त श्रीकृष्ण में इतने तन्मय रहते थे कि सोते, बैठते, घूमते, फिरते, बातचीत करते, खेलते, स्नान करते और भोजन आदि करते समय उन्हें अपनी सुधि ही नहीं रहती थी।

वैरेण यं नृपतयः शिशुपालपौण्ड्र-
शाल्वादयो गतिविलासविलोकनाद्यैः।
ध्यायन्त आकृतधियः शयनासनादौ
तत्साम्यमापुरनुरक्तधियां पुनः किम्॥

भावार्थ: जब शिशुपाल, शाल्व और पौण्ड्रक आदि राजा वैरभाव से ही खाते, पीते, सोते, उठते, बैठते हर वक्त श्री हरि की चाल, उनकी चितवन आदि का चिन्तन करने के कारण मुक्त हो गए, तो फिर जिनका चित्त श्री कृष्ण में अनन्य भाव से लग रहा है, उन विरक्त भक्तों के मुक्त होने में तो संदेह ही क्या हैं?

एनः पूर्वकृतं यत्तद्राजानः कृष्णवैरिणः।
जहुस्त्वन्ते तदात्मानः कीटः पेशस्कृतो यथा॥

भावार्थ: श्रीकृष्ण से द्वेष करने वाले समस्त नरपतिगण अन्त में श्री भगवान के स्मरण के प्रभाव से पूर्व संचित पापों को नष्ट कर वैसे ही भगवद्रूप हो जाते हैं, जैसे पेशस्कृत के ध्यान से कीड़ा तद्रूप हो जाता है, अतएव श्रीकृष्ण का स्मरण सदा करते रहना चाहिए।

श्री कृष्ण का नामकरण संस्कार

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

वसुदेवजी की प्रार्थना पर यदुओं के पुरोहित महातपस्वी गर्गाचार्यजी ब्रज नगरी पहुँचे। उन्हें देखकर नंदबाबा अत्यधिक प्रसन्न हुए। उन्होंने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और उन्हें विष्णु तुल्य मानकर उनकी विधिवत पूजा की। इसके पश्चात नंदजी ने उनसे कहा आप कृप्या मेरे इन दोनों बच्चों का नामकरण संस्कार कर दीजिए।

इस पर गर्गाचार्यजी ने कहा कि ऐसा करने में कुछ अड़चनें हैं। मैं यदुवंशियों का पुरोहित हूँ, यदि मैं तुम्हारे इन पुत्रों का नामकरण संस्कार कर दूँ तो लोग इन्हें देवकी का ही पुत्र मानने लगेंगे, क्योंकि कंस तो पहले से हि पापमय बुद्धि वाला हैं। वह सर्वदा निरर्थक बातें ही सोचता है। दूसरी ओर तुम्हारी व वसुदेव की मैत्री है।

अब मुख्य बात यह हैं कि देवकी की आठवीं संतान लड़की नहीं हो सकती क्योंकि योगमाया ने कंस से यही कहा था अरे पापी मुझे मारने से क्या फायदा है? वह सदैव यही सोचता है कि कहीं न कहीं मुझे मारने वाला अवश्य उत्पन्न हो चुका हैं। यदि मैं नामकरण संस्कार करवा दूँगा तो मुझे पूर्ण आशा हैं कि वह मेरे बच्चों को मार डालेगा और हम लोगों का अत्यधिक अनिष्ट करेगा।

नंदजी ने गर्गाचार्यजी से कहा यदि ऐसी बात है तो किसी एकान्त स्थान में चलकर विधि पूर्वक इनके द्विजाति संस्कार करवा दीजिए। इस विषय में मेरे अपने आदमी भी न जान सकेंगे। नंद की इन बातों को सुनकर गर्गाचार्य ने एकान्त में छिपकर बच्चे का नामकरण करवा दिया। नामकरण करना तो उन्हें अभीष्ट ही था, इसीलिए वे आए थे।

गर्गाचार्यजी ने वसुदेव से कहा रोहिणी का यह पुत्र गुणों से अपने लोगों के मन को प्रसन्न करेगा। अतः इसका नाम राम होगा। इसी नाम से यह पुकारा जाएगा। इसमें बल की अधिकता अधिक होगी। इसलिए इसे लोग बल भी कहेंगे। यदुवंशियों की आपसी फूट मिटाकर उनमें एकता को यह स्थापित करेगा, अतः लोग इसे संकर्षण भी कहेंगे। अतः इसका नाम बलराम होगा।

अब उन्होंने यशोदा और नंद को लक्ष्य करके कहा- यह तुम्हारा पुत्र प्रत्येक युग में अवतार ग्रहण करता रहता हैं। कभी इसका वर्ण श्वेत, कभी लाल, कभी पीला होता है। पूर्व के प्रत्येक युगों में शरीर धारण करते हुए इसके तीन वर्ण हो चुके हैं। इस बार कृष्णवर्ण का हुआ है, अतः इसका नाम कृष्ण होगा। तुम्हारा यह पुत्र पहले वसुदेव के यहाँ जन्मा हैं, अतः श्रीमान वासुदेव नाम से विद्वान लोग पुकारेंगे।

तुम्हारे पुत्र के नाम और रूप तो गिनती के परे हैं, उनमें से गुण और कर्म अनुरूप कुछ को मैं जानता हूँ। दूसरे लोग यह नहीं जान सकते। यह तुम्हारे गोप गौ एवं गोकुल को आनंदित करता हुआ तुम्हारा कल्याण करेगा। इसके द्वारा तुम भारी विपत्तियों से भी मुक्त रहोगे। इस पृथ्वी पर जो भगवान मानकर इसकी भक्ति करेंगे उन्हें शत्रु भी पराजित नहीं कर सकेंगे। जिस तरह विष्णु के भजने वालों को असुर नहीं पराजित कर सकते। यह तुम्हारा पुत्र सौंदर्य, कीर्ति, प्रभाव आदि में विष्णु के सदृश होगा। अतः इसका पालन-पोषण पूर्ण सावधानी से करना। इस प्रकार कृष्ण के विषय में आदेश देकर गर्गाचार्य अपने आश्रम को चले गए।

॥ श्रीकृष्ण चालीसा ॥

दोहा

बंशी शोभित कर मधुर, नील जलद तन श्याम।
अरुणअधरजनु बिम्बफल, नयनकमलअभिराम॥
पूर्ण इन्द्र, अरविन्द मुख, पीताम्बर शुभ साज।
जय मनमोहन मदन छवि, कृष्णचन्द्र महाराज॥

जय यदुनंदन जय जगवंदन। जय वसुदेव देवकी नन्दन॥
जय यशुदा सुत नन्द दुलारे। जय प्रभु भक्तन के दृग तारे॥
जय नट-नागर, नाग नथइया॥ कृष्ण कन्हइया धेनु चरइया॥
पुनि नख पर प्रभु गिरिवर धारो। आओ दीनन कष्ट निवारो॥
वंशी मधुर अधर धरि टेरौ। होवे पूर्ण विनय यह मेरौ॥
आओ हरि पुनि माखन चाखो। आज लाज भारत की राखो॥
गोल कपोल, चिबुक अरुणारे। मृदु मुस्कान मोहिनी डारे॥
राजित राजिव नयन विशाला। मोर मुकुट वैजन्तीमाला॥
कुंडल श्रवण, पीत पट आछे। कटि किंकिणी काछनी काछे॥
नील जलज सुन्दरतनु सोहे। छबिलखि,सुरनर मुनिमन मोहे॥
मस्तक तिलक, अलक घुँघराले। आओ कृष्ण बांसुरी वाले॥
करि पय पान, पूतनहि तार्‌यो। अका बका कागासुर मार्‌यो॥
मधुवन जलतअगिन जबज्वाला। भैशीतललखतहिं नंदलाला॥
सुरपति जब ब्रज चढ़्यो रिसाई। मूसर धार वारि वर्षाई॥
लगत लगत व्रज चहन बहायो। गोवर्धन नख धारि बचायो॥
लखि यसुदा मनभ्रम अधिकाई। मुखमंह चौदह भुवन दिखाई॥
दुष्ट कंस अति उधम मचायो। कोटि कमल जब फूल मंगायो॥
नाथि कालियहिं तब तुम लीन्हें। चरण चिहनदै निर्भय कीन्हें॥
करि गोपिन संग रास विलासा। सबकी पूरण करी अभिलाषा॥
केतिक महा असुर संहार्‌यो। कंसहि केस पकड़ि दै मार्‌यो॥
मात-पिता की बन्दि छुड़ाई। उग्रसेन कहँ राज दिलाई॥
महि से मृतक छहों सुत लायो। मातु देवकी शोक मिटायो॥
भौमासुर मुर दैत्य संहारी। लाये षट दश सहसकुमारी॥
दै भीमहिं तृण चीर सहारा। जरासिंधु राक्षस कहँ मारा॥
असुर बकासुर आदिक मार्‌यो। भक्तन के तब कष्ट निवार्‌यो॥
दीन सुदामा के दुःख टार्‌यो। तंदुल तीन मूंठ मुख डार्‌यो॥
प्रेम के साग विदुर घर माँगे। दुर्योधन के मेवा त्यागे॥
लखी प्रेम की महिमा भारी। ऐसे श्याम दीन हितकारी॥
भारत के पारथ रथ हाँके। लिये चक्र कर नहिं बल थाके॥
निज गीता के ज्ञान सुनाए। भक्तन हृदय सुधा वर्षाए॥
मीरा थी ऐसी मतवाली। विष पी गई बजाकर ताली॥
राना भेजा साँप पिटारी। शालीग्राम बने बनवारी॥
निजमाया तुम विधिहिं दिखायो। उर ते संशय सकल मिटायो॥
तब शत निन्दा करि तत्काला। जीवन मुक्त भयो शिशुपाला॥
जबहिं द्रौपदी टेर लगाई। दीनानाथ लाज अब जाई॥
तुरतहि वसन बने नंदलाला। बढ़े चीर भै अरि मुँह काला॥
अस अनाथ के नाथ कन्हइया। डूबत भंवर बचावइ नइया॥
'सुन्दरदास' आस उर धारी। दया दृष्टि कीजै बनवारी॥
नाथ सकल मम कुमति निवारो। क्षमहु बेगि अपराध हमारो॥
खोलो पट अब दर्शनदीजै। बोलो कृष्ण कन्हइया की जै॥

दोहा

यह चालीसा कृष्ण का, पाठ करै उर धारि।
अष्ट सिद्धि नवनिधि फल, लहै पदारथ चारि ॥

विप्रपत्नीकृत श्रीकृष्णस्तोत्र

विप्रपत्न्य ऊचुः

त्वं ब्रह्म परमं धाम निरीहो निरहंकृतिः।
निर्गुणश्च निराकारः साकारः सगुणः स्वयम् ॥१॥
साक्षिरूपश्च निर्लिप्तः परमात्मा निराकृतिः।
प्रकृतिः पुरुषस्त्वं च कारणं च तयोः परम् ॥२॥
सृष्टिस्थित्यंत विषये ये च देवास्त्रयः स्मृताः।
ते त्वदंशाः सर्वबीजा ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः ॥३॥
यस्य लोम्नां च विवरे चाऽखिलं विश्वमीश्वरः।
महाविराण्महाविष्णुस्तं तस्य जनको विभो ॥४॥
तेजस्त्वं चाऽपि तेजस्वी ज्ञानं ज्ञानी च तत्परः।
वेदेऽनिर्वचनीयस्त्वं कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥५॥
महदादिसृष्टिसूत्रं पंचतन्मात्रमेव च।
बीजं त्वं सर्वशक्तिनां सर्वशक्तिस्वरूपकः ॥६॥
सर्वशक्तीश्वरः सर्वः सर्वशक्त्याश्रयः सदा।
त्वमनीहः स्वयंज्योतिः सर्वानन्दः सनातनः ॥७॥
अहो आकारहीनस्त्वं सर्वविग्रहवानपि।
सर्वेन्द्रियाणां विषय जानासि नेन्द्रियी भवान् ।८॥
सरस्वती जडीभूता यत्स्तोत्रे यन्निरूपणे।
जडीभूतो महेशश्च शेषो धर्मो विधिः स्वयम् ॥९॥
पार्वती कमला राधा सावित्री देवसूरपि। ॥११॥
इति पेतुश्च ता विप्रपत्न्यस्तच्चरणाम्बुजे।
अभयं प्रददौ ताभ्यः प्रसन्नवदनेक्षणः ॥१२॥
विप्रपत्नीकृतं स्तोत्रं पूजाकाले च यः पठेत्। स गतिं
विप्रपत्नीनां लभते नाऽत्र संशयः ॥१३॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्ते विप्रपत्नीकृतं कृष्णस्तोत्रं समाप्तम्॥

इस श्रीकृष्णस्तोत्र का नियमित पाठ करने से भगवान्श्रीकृष्ण अपने भक्त पर निःसन्देह प्रसन्न होते है। यह स्तोत्र व्यक्ति अभय को प्रदान करने वाला हैं।

॥ श्रीकृष्णस्तवराज ॥

श्रीमहादेव उवाच ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्तोत्रम् परमदुर्लभम् ।
यज्ज्ञात्वा न पुनर्गच्छेन्नरो निरययातनाम् ॥१॥

नारदाय च यत्प्रोक्तम् ब्रह्मपुत्रेण धीमता ।
सनत्कुमारेण पुरा योगीन्द्रगुरुवर्त्मना ॥२॥

श्रीनारद उवाच ।
प्रसीद भगवन्मह्यमज्ञानात्कुण्ठितात्मने ।
तवांघ्रिपङ्कजरजोरागिणीं भक्तिमुत्तमाम् ॥३॥

अज प्रसीद भगवन्नमितद्युतिपञ्जर ।
अप्रमेयं प्रसीदास्मद्दुःखहन्पुरुषोत्तम ॥४॥

स्वसंवेद्य प्रसीदास्मदानन्दात्मन्ननामय ।
अचिन्त्यसार विश्वात्मन्प्रसीद परमेश्वर ॥५॥

प्रसीद तुङ्गतुङ्गानां प्रसीद शिवशोभन ।
प्रसीद गुणगम्भीर गम्भीराणां महाद्युते ॥६॥

प्रसीद व्यक्तं विस्तीर्णं विस्तीर्णानामगोचर ।
प्रसीदार्द्रार्द्रजातीनां प्रसीदान्तान्तदायिनाम् ॥७॥

गुरोर्गरीयः सर्वेश प्रसीदानन्त देहिनाम् ।
जय माधव मायात्मन् जय शाश्वतशङ्खभृत् ॥८॥

जय शङ्खधर श्रीमन् जय नन्दकनन्दन ।
जय चक्रगदापाणे जय देव जनार्दन ॥९॥

जय रत्नवराबद्धकिरीटाकान्तमस्तक ।
जय पक्षिपतिच्छायानिरुद्धार्ककरारुण ॥१०॥

नमस्ते नरकाराते नमस्ते मधुसूदन ।
नमस्ते ललितापाङ्ग नमस्ते नरकान्तक ॥११॥

नमः पापहरेशान नमः सर्पभवापह ।
नमः सम्भूतसर्वात्मन्नमः सम्भृतकौस्तुभ ॥१२॥

नमस्ते नयनातीत नमस्ते भयहारक ।
नमो विभिन्नवेषाय नमः श्रुतिपथातिग ॥१३॥

नमश्चिन्मूर्तिभेदेन सर्गस्थित्यन्तहेतवे ।
विष्णवे त्रिदशारातिजिष्णवे परमात्मने ॥१४॥

चक्रभिन्नारिचक्राय चक्रिणे चक्रवल्लभ ।
विश्वाय विश्ववन्द्याय विश्वभूतानुवर्तिने ॥१५॥

नमोऽस्तु योगिध्येयात्मन्नमोऽस्त्वध्यात्मिरूपिणे ।
भक्तिप्रदाय भक्तानां नमस्ते मुक्तिदायिने ॥१६॥

पूजनं हवनं चेज्या ध्यानम् पश्चान्नमस्क्रिया ।
देवेश कर्म सर्वं मे भवेदाराधनम् तव ॥१७॥

इति हवनजपार्चाभेदतो विष्णुपूजा नियतहृदयकर्मा यस्तु मन्त्री चिराय । स खलु सकलकामान् प्राप्य कृष्णान्तरात्मा जननमृतिविमुक्तोऽत्युत्तमां भक्तिमेति ॥१८॥

गोगोपगोपिकावीतम् गोपालम् गोषु गोप्रदम् ।
गोपैरीड्यं गोसहस्रैर्नौमि गोकुलनायकम् ॥१९॥

प्रीणयेदनया स्तुत्या जगन्नाथं जगन्मयम् ।
धर्मार्थकाममोक्षाणामाप्तये पुरुषोत्तमः ॥२०॥

॥ इति श्रीनारदपञ्चरात्रे श्रीकृष्णस्तवराजः सम्पूर्णः ॥

श्रीकृष्णस्तवराजः

कृष्णदासविरचितः

अनन्तकन्दर्पकलाविलासं किशोरचन्द्रं रसिकेन्द्रशेखरम् ।
श्यामं महासुन्दरतानिधानं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥१॥

अनन्तविद्युद्युतिचारुपीतं कौशेयसंवीतनितम्बबिम्बम् ।
अनन्तमेघच्छविदिव्यमूर्तिं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥२॥

महेन्द्रचापच्छविपिच्छचूढं कस्तूरिकाचित्रकशोभिमालम् ।
मन्दादरोद्घूर्णविशालनेत्रं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥३॥

भ्राजिष्णुगल्लं मकराङ्कितेन विचित्ररत्नोज्ज्वलकुण्डलेन ।
कोटीन्दुलावण्यमुखारविन्दं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥४॥

वृन्दाटवीमञ्जुलकुञ्जवाद्यं श्रीराधया सार्धमुदारकेलिम् ।
आनन्दपुञ्जं ललितादिदृश्यं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥५॥

महार्हकेयूरककङ्कणश्रीग्रैवेयहारावलिमुद्रिकाभिः ।
विभूषितं किङ्किणिनूपुराभ्यां श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥६॥

विचित्ररत्नोज्ज्वलदिव्यवासाप्रगीतरामागुणरूपलीलम् ।
मुहुर्मुहुः प्रोदितरोमहर्षं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥७॥

श्रीराधिकेयाधरसेवनेन माद्यन्तमुच्चै रतिकेलिलोलम् ।
स्मरोन्मदान्धं रसिकेन्द्रमौलिं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥८॥

अङ्के निधाय प्रणयेन राधां मुहुर्मुहुश्चुम्बिततन्मुखेन्दुम् ।
विचित्रवेषैः कृततद्विभूषणं श्रीकृष्णचन्द्रं शरणम् गतोऽस्मि ॥९॥

॥इति कृष्णदासविरचितः श्रीकृष्णस्तवराजः सम्पूर्णः॥

॥ एकाक्षरकृष्णमन्त्रम् ॥

ॐ पूर्णज्ञानात्मने हृदयाय नमः ।

ॐ पूर्णैश्वर्यात्मने शिरसे स्वाहा ।

ॐ पूर्णपरमात्मने शिखायै वषट् ।

ॐ पूर्णानन्दात्मने कवचाय हुं ।

ॐ पूर्णतेजात्मने नेत्राभ्यां वौषट् ।

ॐ पूर्णशक्त्यात्मने अस्त्राय फट् ।

इति दिग्बन्धः

॥ एकाक्षर श्रीकृष्णमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः
निचृत् गायत्री छन्दः श्रीकृष्णो देवता
श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ध्यानम्

ध्यायेद्धरिं मणिनिभं जगदेकवन्द्यं

सौन्दर्यसारमरिशङ्खवराभयानि ।

दोर्भिर्दधानमजितं सरसं सभैष्मी

सत्यासमेतमखिलप्रदमिन्दिरेशम् ॥

मूलमन्त्रं ॐ क्लीं ॐ

इति एकाक्षरकृष्णमन्त्रं सम्पूर्णम् ।

॥ श्रीकृष्णद्वादशनामस्तोत्रम् ॥

श्रीकृष्ण उवाच ।
किं ते नामसहस्रेण विज्ञातेन तवाऽर्जुन ।
तानि नामानि विज्ञाय नरः पापैः प्रमुच्यते ॥१॥

प्रथमं तु हरिं विन्द्याद् द्वितीयं केशवं तथा ।
तृतीयं पद्मनाभं च चतुर्थं वामनं स्मरेत् ॥२॥

पञ्चमं वेदगर्भं तु षष्ठं च मधुसूदनम् ।
सप्तमं वासुदेवं च वराहं चाऽष्टमं तथा ॥३॥

नवमं पुण्डरीकाक्षं दशमं तु जनार्दनम् ।
कृष्णमेकादशं विन्द्याद् द्वादशं श्रीधरं तथा ॥४॥

एतानि द्वादश नामानि विष्णुप्रोक्ते विधीयते ।
सायं-प्रातः पठेन्नित्यं तस्य पुण्यफलम् शृणु ॥५॥

चान्द्रायण सहस्राणि कन्यादानशतानि च ।
अश्वमेधसहस्राणि फलम् प्राप्नोत्यसंशयः ॥६॥

अमायां पौर्णमास्यां च द्वादश्यां तु विशेषतः ।
प्रातःकाले पठेन्नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥७॥

॥इति श्रीमन्महाभारतेऽरण्यपर्वणि कृष्णद्वादशनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

गोपालाक्षय कवचम्

यदि किसी गर्भिणी स्री को किसी भी कारण से गर्भपात की आशंका लगरही हो, या किसी स्त्री को बार-बार गर्भपात हो रहा हो एसी स्थिति में गर्भरक्षा हेतु श्रीगोपालाक्षय स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

॥ श्रीनारद उवाच ॥
इन्द्राद्यमरवर्गेषु ब्रह्मन्यत्परमाऽद्भुतम् ।
अक्षयं कवचं नाम कथयस्व मम प्रभो ॥१॥
यद्धृत्वाऽऽकर्ण्य वीरस्तु त्रैलोक्य विजयी भवेत् ।
॥ब्रह्मोवाच॥
श्रृणु पुत्र ! मुनिश्रेष्ठ ! कवचं परमाद्भुतम् ॥२॥
इन्द्रादि देव वृन्दैश्च नारायण मुखाच्छ्रुतम् ।
त्रैलोक्य विजयस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः ॥३॥
ऋषिश्छन्दो देवता च सदा नारायणः प्रभुः ।
विनियोग
ॐ अस्य श्रीत्रैलोक्यविजयाक्षयकवचस्य प्रजापतिऋर्षिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीनारायणः परमात्मा देवता, धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः ।
पादौ रक्षतु गोविन्दो जङ्घे पातु जगत्प्रभुः ॥४॥
ऊरू द्वौ केशवः पातु कटी दामोदरस्ततः ।
वदनं श्रीहरिः पातु नाडीदेशं च मेऽच्युतः ॥५॥
वाम पार्श्वं तथा विष्णुर्दक्षिणं च सुदर्शनः ।
बाहुमूले वासुदेवो हृदयं च जनार्दनः ॥६॥
कण्ठं पातु वराहश्च कृष्णश्च मुखमण्डलम्।
कर्णौ मे माधवः पातु हृषीकेशश्च नासिके ॥७॥
नेत्रे नारायणः पातु ललाटं गरुडध्वजः ।
कपोलं केशवः पातु चक्रपाणिः शिरस्तथा ॥८॥
प्रभाते माधवः पातु मध्याह्ने मधुसूदनः ।
दिनान्ते दैत्यनाशश्च रात्रौ रक्षतु चन्द्रमाः ॥९॥
पूर्वस्यां पुण्डरीकाक्षो वायव्यां च जनार्दनः ।
इति ते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघविग्रहम् ॥१०॥
तव स्नेहान्मयाऽऽख्यातं न वक्तव्यं तु कस्यचित् ।
कवचं धारयेद्यस्तु साधको दक्षिणे भुजे ॥११॥
देवा मनुष्या गन्धर्वा यज्ञास्तस्य न संशयः ।
योषिद्वामभुजे चैव पुरुषो दक्षिणे भुजे ॥१२॥
विभ्रुयात्कवचं पुण्यं सर्वसिद्धियुतो भवेत् ।
कण्ठे यौ धारयेदेतत् कवचं मत्स्वरूपिणम् ॥१३॥
युद्धे जयमवाप्नोति द्यूते वादे च साधकः ।
सर्वथा जयमाप्नोति निश्चितं जन्मजन्मनि ॥१४॥
अपुत्रो लभते पुत्रं रोगनाशस्तथा भवेत् ।
सर्वताप प्रमुक्तश्च विष्णुलोकं स गच्छति ॥१५॥

॥इति ब्रह्मसंहितोक्तम् श्रीगोपालाक्षयकवचम् सम्पूर्णम्॥

प्राणेश्वर श्रीकृष्ण मंत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

मंत्र:-

"ॐ ऐं श्रीं क्लीं प्राण वल्लभाय सौः
सौभाग्यदाय श्रीकृष्णाय स्वाहा।"

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीप्राणेश्वर श्रीकृष्ण मंन्त्रस्य भगवान् श्रीवेदव्यास ऋषिः,

गायत्री छंदः-, श्रीकृष्ण-परमात्मा देवता, क्लीं बीजं, श्रीं शक्तिः, ऐं कीलकं, ॐ व्यापकः, मम समस्त-क्लेश-परिहार्थं, चतुर्वर्ग-प्राप्तये, सौभाग्य वृद्धयर्थं च जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- श्रीवेदव्यास ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छंदसे नमः मुखे, श्रीकृष्ण परमात्मा देवतायै नमः हृदि, क्लीं बीजाय नमः गुह्ये, श्रीं शक्तये नमः नाभौ, ऐं कीलकाय नमः पादयो, ॐ व्यापकाय नमः सर्वाङ्गे, मम समस्त क्लेश परिहार्थं, चतुर्वर्ग प्राप्तये, सौभाग्य वृद्धयर्थं च जपे विनियोगाय नमः अंजलौ।

कर-न्यासः- ॐ ऐं श्रीं क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः प्राणवल्लभाय तर्जनीभ्यां स्वाहा, सौः मध्यमाभ्यां वषट्, सौभाग्यदाय अनामिकाभ्यां हुं श्रीकृष्णाय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

अंग-न्यासः- ॐ ऐं श्रीं क्लीं हृदयाय नमः, प्राण वल्लभाय शिरसे स्वाहा, सौः शिखायै वषट्, सौभाग्यदाय शिखायै कवचाय हुं, श्रीकृष्णाय नेत्र-त्रयाय वौषट्, स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानः-

"कृष्णं जगन्मपहन-रुप-वर्णं, विलोक्य
लज्जाऽऽकुलितां स्मराढ्याम्। मधूक-माला-युत-कृष्ण-देहं, विलोक्य चालिंग्य हरिं स्मरन्तीम्।।"

भावार्थ: संसार को मुग्ध करने वाले भगवान् कृष्ण के रुप-रंग को देखकर प्रेम पूर्ण होकर गोपियाँ लज्जापूर्वक व्याकुल होती हैं और मन-ही-मन हरि को स्मरण करती हुई भगवान् कृष्ण की मधूक-पुष्पों की माला से विभुषित देह का आलिंगन करती हैं।

इस मंत्र का विधि-विधान से १,००,००० जाप करने का विधान हैं।

॥सन्तानगोपाल स्तोत्र॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

सन्तानगोपालस्तोत्रं

श्रीशं कमलपत्राक्षं देवकीनन्दनं हरिम् ।
सुतसंप्राप्तये कृष्णं नमामि मधुसूदनम् ॥१॥
नमाम्यहं वासुदेवं सुतसंप्राप्तये हरिम् ।
यशोदाङ्कगतं बालं गोपालं नन्दनन्दनम् ॥२॥
अस्माकं पुत्रलाभाय गोविन्दं मुनिवन्दितम् ।
नमाम्यहं वासुदेवं देवकीनन्दनं सदा ॥३॥
गोपालं डिम्भकं वन्दे कमलापतिमच्युतम् ।
पुत्रसंप्राप्तये कृष्णं नमामि यदुपुङ्गवम् ॥४॥
पुत्रकामेष्टिफलदं कन्जाक्षं कमलापतिम् ।
देवकीनन्दनं वन्दे सुतसम्प्राप्तये मम ॥५॥
पद्मापते पद्मनेत्रे पद्मनाभ जनार्दन ।
देहि मे तनयं श्रीश वासुदेव जगत्पते ॥६॥
यशोदाङ्कगतं बालं गोविन्दं मुनिवन्दितम् ।
अस्माकं पुत्र लाभाय नमामि श्रीशमच्युतम् ॥७॥
श्रीपते देवदेवेश दीनार्तिर्हरणाच्युत ।
गोविन्द मे सुतं देहि नमामि त्वां जनार्दन ॥८॥
भक्तकामद गोविन्द भक्तं रक्ष शुभप्रद ।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥९॥
रुक्मिणीनाथ सर्वेश देहि मे तनयं सदा ।
भक्तमन्दार पद्माक्ष त्वामहं शरणं गतः ॥१०॥
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥११॥
वासुदेव जगद्वन्द्य श्रीपते पुरुषोत्तम ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥१२॥
कन्जाक्ष कमलानाथ परकारुणिकोत्तम ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥१३॥
लक्ष्मीपते पद्मनाभ मुकुन्द मुनिवन्दित ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥१४॥
कार्यकारणरूपाय वासुदेवाय ते सदा ।
नमामि पुत्रलाभार्थ सुखदाय बुधाय ते ॥१५॥
राजीवनेत्र श्रीराम रावणारे हरे कवे ।
तुभ्यं नमामि देवेश तनयं देहि मे हरे ॥१६॥
अस्माकं पुत्रलाभाय भजामि त्वां जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव रमापते ॥१७॥
श्रीमानिनीमानचोर गोपीवस्त्रापहारक ।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते ॥१८॥
अस्माकं पुत्रसंप्राप्तिं कुरुष्व यदुनन्दन ।
रमापते वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित ॥१९॥
वासुदेव सुतं देहि तनयं देहि माधव ।
पुत्रं मे देहि श्रीकृष्ण वत्सं देहि महाप्रभो॥२०॥
डिम्भकं देहि श्रीकृष्ण आत्मजं देहि राघव ।
भक्तमन्दार मे देहि तनयं नन्दनन्दन ॥२१॥
नन्दनं देहि मे कृष्ण वासुदेव जगत्पते ।
कमलनाथ गोविन्द मुकुन्द मुनिवन्दित ॥२२॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
सुतं देहि श्रियं देहि श्रियं पुत्रं प्रदेहि मे ॥२३॥
यशोदास्तन्यपानज्ञं पिबन्तं यदुनन्दनम् ।
वन्देऽहं पुत्रलाभार्थं कपिलाक्षं हरिं सदा ॥२४॥
नन्दनन्दन देवेश नन्दनं देहि मे प्रभो ।
रमापते वासुदेव श्रियं पुत्रं जगत्पते ॥२५॥
पुत्रं श्रियं श्रियं पुत्रं पुत्रं मे देहि माधव ।
अस्माकं दीनवाक्यस्य अवधारय श्रीपते ॥२६॥
गोपाल डिम्भ गोविन्द वासुदेव रमापते ।
अस्माकं डिम्भकं देहि श्रियं देहि जगत्पते ॥२७॥
मद्वाञ्छितफलं देहि देवकीनन्दनाच्युत ।
मम पुत्रार्थितं धन्यं कुरुष्व यदुनन्दन ॥२८॥
याचेऽहं त्वां श्रियं पुत्रं देहि मे पुत्रसंपदम्।
भक्तचिन्तामणे राम कल्पवृक्ष महाप्रभो ॥२९॥
आत्मजं नन्दनं पुत्रं कुमारं डिम्भकं सुतम् ।
अर्भकं तनयं देहि सदा मे रघुनन्दन ॥३०॥
वन्दे सन्तानगोपालं माधवं भक्तकामदम् ।
अस्माकं पुत्रसंप्राप्त्यै सदा गोविन्दमच्युतम् ॥३१॥

ॐकारयुक्तं गोपालं श्रीयुक्तं यदुनन्दनम् ।
क्लींयुक्तं देवकीपुत्रं नमामि यदुनायकम् ॥३२॥
वासुदेव मुकुन्देश गोविन्द माधवाच्युत ।
देहि मे तनयं कृष्ण रमानाथ महाप्रभो ॥३३॥
राजीवनेत्र गोविन्द कपिलाक्ष हरे प्रभो ।
समस्तकाम्यवरद देहि मे तनयं सदा ॥३४॥
अब्जपद्मनिभं पद्मवृन्दरूप जगत्पते ।
देहि मे वरसत्पुत्रं रमानायक माधव ॥३५॥
नन्दपाल धरापाल गोविन्द यदुनन्दन ।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥३६॥
दासमन्दार गोविन्द मुकुन्द माधवाच्युत ।
गोपाल पुण्डरीकाक्ष देहि मे तनयं श्रियम् ॥३७॥
यदुनायक पद्मेश नन्दगोपवधूसुत ।
देहि मे तनयं कृष्ण श्रीधर प्राणनायक ॥३८॥
अस्माकं वाञ्छितं देहि देहि पुत्रं रमापते ।
भगवन् कृष्ण सर्वेश वासुदेव जगत्पते ॥३९॥
रमाहृदयसंभारसत्यभामामनः प्रिय ।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥४०॥
चन्द्रसूर्याक्ष गोविन्द पुण्डरीकाक्ष माधव ।
अस्माकं भाग्यसत्पुत्रं देहि देव जगत्पते ॥४१॥
कारुण्यरूप पद्माक्ष पद्मनाभसमर्चित ।
देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दनन्दन ॥४२॥
देवकीसुत श्रीनाथ वासुदेव जगत्पते ।
समस्तकामफलद देहि मे तनयं सदा ॥४३॥
भक्तमन्दार गम्भीर शङ्कराच्युत माधव ।
देहि मे तनयं गोपबालवत्सल श्रीपते ॥४४॥
श्रीपते वासुदेवेश देवकीप्रियनन्दन ।
भक्तमन्दार मे देहि तनयं जगतां प्रभो॥४५॥
जगन्नाथ रमानाथ भूमिनाथ दयानिधे ।
वासुदेवेश सर्वेश देहि मे तनयं प्रभो ॥४६॥
श्रीनाथ कमलपत्राक्ष वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥४७॥
दासमन्दार गोविन्द भक्तचिन्तामणे प्रभो ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥४८॥
गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रमानाथ महाप्रभो ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥४९॥
श्रीनाथ कमलपत्राक्ष गोविन्द मधुसूदन ।
मत्पुत्रफलसिद्ध्यर्थं भजामि त्वां जनार्दन ॥५०॥
स्तन्यं पिबन्तं जननीमुखांबुजं विलोक्य
मन्दस्मितमुज्ज्वलाङ्गम् ।
स्पृशन्तमन्यस्तनमङ्गुलीभिर्वन्दे
यशोदाङ्कगतं मुकुन्दम् ॥५१॥
याचेऽहं पुत्रसन्तानं भवन्तं पद्मलोचन ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥५२॥
अस्माकं पुत्रसम्पत्तेश्चिन्तयामि जगत्पते ।
शीघ्रं मे देहि दातव्यं भवता मुनिवन्दित ॥५३॥
वासुदेव जगन्नाथ श्रीपते पुरुषोत्तम ।
कुरु मां पुत्रदत्तं च कृष्ण देवेन्द्रपूजित ॥५४॥
कुरु मां पुत्रदत्तं च यशोदाप्रियनन्दनम् ।
मह्यं च पुत्रसन्तानं दातव्यंभवता हरे ॥५५॥
वासुदेव जगन्नाथ गोविन्द देवकीसुत ।
देहि मे तनयं राम कौशल्याप्रियनन्दन ॥५६॥
पद्मपत्राक्ष गोविन्द विष्णो वामन माधव ।
देहि मे तनयं सीताप्राणनायक राघव ॥५७॥
कञ्जाक्ष कृष्ण देवेन्द्रमण्डित मुनिवन्दित ।
लक्ष्मणाग्रज श्रीराम देहि मे तनयं सदा ॥५८॥
देहि मे तनयं राम दशरथप्रियनन्दन ।
सीतानायक कञ्जाक्ष मुचुकुन्दवरप्रद ॥५९॥
विभीषणस्य या लङ्का प्रदत्ता भवता पुरा ।
अस्माकं तत्प्रकारेण तनयं देहि माधव ॥६०॥
भवदीयपदांभोजे चिन्तयामि निरन्तरम् ।
देहि मे तनयं सीताप्राणवल्लभ राघव ॥६१॥
राम मत्काम्यवरद पुत्रोत्पत्तिफलप्रद ।
देहि मे तनयं श्रीश कमलासनवन्दित ॥६२॥
राम राघव सीतेश लक्ष्मणानुज देहि मे ।
भाग्यवत्पुत्रसन्तानं दशरथप्रियनन्दन ।
देहि मे तनयं राम कृष्ण गोपाल माधव ॥६४॥
कृष्ण माधव गोविन्द वामनाच्युत शङ्कर ।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥६५॥
गोपबाल महाधन्य गोविन्दाच्युत माधव ।

देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते ॥६६॥
दिशतु दिशतु पुत्रं देवकीनन्दनोऽयम्
दिशतु दिशतु शीघ्रं भाग्यवत्पुत्रलाभम् ।
दिशतु दिशतु शीघ्रं श्रीशो राघवो रामचन्द्रो
दिशतु दिशतु पुत्रं वंश विस्तारहेतोः ॥६७॥
दीयतां वासुदेवेन तनयोमत्प्रियः सुतः ।
कुमारो नन्दनः सीतानायकेन सदा मम ॥६८॥
राम राघव गोविन्द देवकीसुत माधव ।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥६९॥
वंशविस्तारकं पुत्रं देहि मे मधुसूदन ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥७०॥
ममाभीष्टसुतं देहि कंसारे माधवाच्युत ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः॥७१॥
चन्द्रार्ककल्पपर्यन्तं तनयं देहि माधव ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः॥७२॥
विद्यावन्तं बुद्धिमन्तं श्रीमन्तं तनयं सदा ।
देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दन प्रभो ॥७३॥
नमामि त्वां पद्मनेत्र सुतलाभाय कामदम् ।
मुकुन्दं पुण्डरीकाक्षं गोविन्दं मधुसूदनम् ॥७४॥
भगवन् कृष्ण गोविन्द सर्वकामफलप्रद ।
देहि मे तनयं स्वामिंस्त्वामहं शरणं गतः ॥७५॥
स्वामिंस्त्वं भगवन् राम कृष्न माधव कामद ।
देहि मे तनयं नित्यं त्वामहं शरणं गतः ॥७६॥
तनयं देहिओ गोविन्द कञ्जाक्ष कमलापते ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः॥७७॥
पद्मापते पद्मनेत्र प्रद्युम्न जनक प्रभो ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥७८॥
शङ्खचक्रगदाखड्गशार्ङ्गपाणे रमापते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥७९॥
नारायण रमानाथ राजीवपत्रलोचन ।
सुतं मे देहि देवेश पद्मपद्मानुवन्दित ॥८०॥
राम राघव गोविन्द देवकीवरनन्दन ।
रुक्मिणीनाथ सर्वेश नारदादिसुरार्चित ॥८१॥
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥८२॥
मुनिवन्दित गोविन्द रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥८३॥
गोपिकार्जितपङ्केजमरन्दासक्तमानस ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥८४॥
रमाहृदयपङ्केजलोल माधव कामद ।
ममाभीष्टसुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥८५॥
वासुदेव रमानाथ दासानां मङ्गलप्रद ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥८६॥
कल्याणप्रद गोविन्द मुरारे मुनिवन्दित ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥८७॥
पुत्रप्रद मुकुन्देश रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥८८॥
पुण्डरीकाक्ष गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥८९॥
दयानिधे वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥९०॥
पुत्रसम्पत्प्रदातारं गोविन्दं देवपूजितम् ।
वन्दामहे सदा कृष्णं पुत्र लाभ प्रदायिनम् ॥९१॥
कारुण्यनिधये गोपीवल्लभाय मुरारये ।
नमस्ते पुत्रलाभाय देहि मे तनयं विभो ॥९२॥
नमस्तस्मै रमेशाय रुमिणीवल्लभाय ते ।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥९३॥
नमस्ते वासुदेवाय नित्यश्रीकामुकाय च ।
पुत्रदाय च सर्पेन्द्रशायिने रङ्गशायिने ॥९४॥
रङ्गशायिन् रमानाथ मङ्गलप्रद माधव ।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥९५॥
दासस्य मे सुतं देहि दीनमन्दार राघव ।
सुतं देहि सुतं देहि पुत्रं देहि रमापते ॥९६॥
यशोदातनयाभीष्टपुत्रदानरतः सदा ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥९७॥
मदिष्टदेव गोविन्द वासुदेव जनार्दन ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥९८॥
नीतिमान् धनवान् पुत्रो विद्यावांश्च प्रजापते ।
भगवंस्त्वत्कृपायाश्च वासुदेवेन्द्रपूजित ॥९९॥
यःपठेत् पुत्रशतकं सोऽपि सत्पुत्रवान् भवेत ।
श्रीवासुदेवकथितं स्तोत्ररत्नं सुखाय च ॥१००॥
जपकाले पठेन्नित्यं पुत्रलाभं धनं श्रियम् ।
ऐश्वर्यं राजसम्मानं सद्यो याति न संशयः ॥१०१॥
॥इति श्रीसंतानगोपाल-स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

अस्य श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य श्रीशेष ऋषि । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीकृष्णो देवता । श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे श्रीकृष्णाष्टोतरशतनामजपे विनियोगः ॥ शेष उवाच ।

श्रीकृष्णः कमलानाथो वासुदेवः सनातनः । वासुदेवात्मजः पुण्यो लीलामानुषविग्रहः ॥१॥

श्रीवत्सकौस्तुभधरो यशोदावत्सलो हरिः । चतुर्भुजात्तचक्रसिगदाशंखाद्युदायुधः ॥२॥

देवकीनंदनः श्रीशो नंदगोपप्रियात्मजः । यमुनावेगसंहारी बलभद्रप्रियानुजः ॥३॥

पूतनाजीवितहरः शकटासुरभंजनः । नंदव्रजजनानंदी सच्चिदानंदविग्रहः ॥४॥

नवनीतनवाहारी मुचुकंदप्रसादकः । षोडशस्त्रीसहस्त्रेशस्त्रिभंगी मधुराकृतिः ॥५॥

शुकवागमृताब्धींदुर्गोविंदो गोविंदां पतिः । वत्सपालनसंचारी धेनुकासुरभंजनः ॥६॥

तृणीकृततृणावर्तो यमलार्जुनभंजनः । उत्तालतालभेत्ता च तमालश्यामलाकृतिः ॥७॥

गोपगोपीश्वरो योगी सूर्यकोटिसमप्रभः । इलापतिः परं ज्योतिर्यादवेंद्रो यदूद्वहः ॥८॥

वनमाली पीतवासाः पारिजातापहारकः । गोवर्धनाचलोद्धर्ता गोपालः सर्वपालकः ॥९॥

अजो निरंजनः कामजनकः कञ्जलोचनः । मधुहामथुरानाथो द्वारकानायको बली ॥१०॥

वृन्दावनांतःसंचारी तुलसीदामभूषणः । स्यमंतकमणेर्हर्ता नरनारायणात्मकः ॥११॥

कुब्जाकृष्णांबरधरो मायी परमपूरषः । मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्धविशारदः ॥१२॥

संसारवैरी कंसारिर्मुरारिर्नरकांतकः । अनादिर्ब्रह्मचारी च कृष्णाव्यसनकर्षकः ॥१३॥

शिशुपालशिरश्छेत्ता दुर्योधनकुलांतकृत् । विदुराक्रूरवरदो विश्वरूपप्रदर्शकः ॥१४॥

सत्यवाक् सत्यसंकल्पः सत्यभामारतो जयी । सुभद्रापूर्वजो विष्णुर्भीष्ममुक्तिप्रदायकः ॥१५॥

जगद्गुरुर्जगन्नाथो वेणुवाद्यविशारदः । वृषभासुरविध्वंसी बाणासुरबलांतकृत् ॥१६॥

युधिष्ठिरप्रतिष्ठाता बर्हिबर्हावतंसकः । पार्थसारथिरव्यक्तो गीतामृतमहोदधिः ॥१७॥

कालीयफणिमाणिक्यरंजितश्रीपदांबुजः । दामोदर यज्ञभोक्ता दानवेन्द्राविनाशनः ॥१८॥

नारायणः परब्रह्म पन्नगाशनवाहनः । जलक्रिडासमासक्तगोपीवस्त्रापहारकः ॥१९॥

पुण्यश्लोकस्तीर्थकरो वेदवेद्यो दयानिधिः । सर्वतीर्थात्मकः सर्वग्रहरूपः परात्परः ॥२०॥

इत्येवं कृष्णदेवस्य नाम्नमष्टोत्तरं शतम् । कृष्णेन कृष्णभक्तेन श्रुत्वा गीतामृतं पुरा ॥२१॥

स्तोत्रं कृष्णप्रियकरं कृतं तस्मान्मया पुरा । कृष्णनामामृतं नाम परमानंददायकम् ॥२२॥

अत्युपद्रवदुःखघ्नं परमायुष्यवर्धनम् । दानं श्रुतं तपस्तीर्थं यत्कृतं त्विह जन्मनि ॥२३॥

पठतां श्रृण्वतां चैव कोटिकोटिगुणं भवेत् पुत्रप्रदमपुत्राणामगतीनं गतिप्रदम् ॥२४॥

धनावहं दरिद्राणां जयेच्छूनां जयावहम् । शिशूनां गोकुलानां च पुष्टिदंपुष्टिवर्धनम् ॥२५॥

वातग्रहज्वरदीनां शमनं शांतिमुक्तिदम् । समस्तकामदं सद्यः कोतिजन्माघनाशनम् ॥२६॥

अन्ते कृष्णस्मरणदं भवताभयापहम्। कृष्णाय यादवेंद्राय ज्ञानमुद्राय योगिने। नाथाय रुक्मिणीशाय नमो वेदांतवेदिने॥२७॥

इम मन्त्रं महादेव जपन्नेव दिवानिशम् । सर्वग्रहानुग्रहभाक् सर्वप्रियतमो भवेत् ॥२८॥

पुत्रपौत्रैः परिवृतः सर्वसिद्धिसमृद्धिमान् । निविश्य भोगानंतेऽपि कृष्णसायुज्यमाप्नुयात् ॥२९॥

॥इति श्रीनारदपचरात्रे ज्ञानामृतसारे उमामहेश्वरसंवादान्तर्गतधरणीशेषसंवादे श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं संपूर्णम्॥

॥ राधाकृष्णाष्टकम् ॥

कृष्णप्रेममयी राधा राधाप्रेममयो हरिः।
जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥१॥

भावार्थ : श्रीराधारानी, भगवान श्रीकृष्ण में रमण करती हैं और भगवान श्रीकृष्ण, श्रीराधारानी में रमण करते हैं, इसलिये मेरे जीवन का प्रत्येक-क्षण श्रीराधा-कृष्ण के आश्रय में व्यतीत हो॥१॥

कृष्णस्य द्रविणं राधा राधायाः द्रविणं हरिः।
जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥२॥

भावार्थ : भगवान श्रीकृष्ण की पूर्ण-सम्पदा श्रीराधारानी हैं और श्रीराधारानी का पूर्ण-धन श्रीकृष्ण हैं, इसलिये मेरे जीवन का प्रत्येक-क्षण श्रीराधा-कृष्ण के आश्रय में व्यतीत हो। ॥२॥

कृष्णप्राणमयी राधा राधाप्राणमयो हरिः।
जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥३॥

भावार्थ : भगवान श्रीकृष्ण के प्राण श्रीराधारानी के हृदय में बसते हैं और श्रीराधारानी के प्राण भगवान श्री कृष्ण के हृदय में बसते हैं , इसलिये मेरे जीवन का प्रत्येक-क्षण श्रीराधा-कृष्ण के आश्रय में व्यतीत हो। ॥३॥

कृष्णद्रवामयी राधा राधाद्रवामयो हरिः।
जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥४॥

भावार्थ : भगवान श्रीकृष्ण के नाम से श्रीराधारानी प्रसन्न होती हैं और श्रीराधारानी के नाम से भगवान श्रीकृष्ण आनन्दित होते है, इसलिये मेरे जीवन का प्रत्येक-क्षण श्रीराधा-कृष्ण के आश्रय में व्यतीत हो। ॥४॥

कृष्ण गेहे स्थिता राधा राधा गेहे स्थितो हरिः।
जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥५॥

भावार्थ : श्रीराधारानी भगवान श्रीकृष्ण के शरीर में रहती हैं और भगवान श्रीकृष्ण श्रीराधारानी के शरीर में रहते हैं, इसलिये मेरे जीवन का प्रत्येक-क्षण श्रीराधा-कृष्ण के आश्रय में व्यतीत हो ॥५॥

कृष्णचित्तस्थिता राधा राधाचित्स्थितो हरिः।
जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥६॥

भावार्थ : श्रीराधारानी के मन में भगवान श्रीकृष्ण विराजते हैं और भगवान श्रीकृष्ण के मन में श्रीराधारानी विराजती हैं, इसलिये मेरे जीवन का प्रत्येक-क्षण श्रीराधा-कृष्ण के आश्रय में व्यतीत हो ॥६॥

नीलाम्बरा धरा राधा पीताम्बरो धरो हरिः।
जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥७॥

भावार्थ : श्रीराधारानी नीलवर्ण के वस्त्र धारण करती हैं और भगवान श्रीकृष्णपीतवर्ण के वस्त्र धारण करते हैं, इसलिये मेरे जीवन का प्रत्येक-क्षण श्रीराधा-कृष्ण के आश्रय में व्यतीत हो ॥७॥

वृन्दावनेश्वरी राधा कृष्णो वृन्दावनेश्वरः।
जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥८॥

भावार्थ : श्रीराधारानी वृन्दावन की स्वामिनी हैं और भगवान श्रीकृष्ण वृन्दावन के स्वामी हैं, इसलिये मेरे जीवन का प्रत्येक-क्षण श्रीराधा-कृष्ण के आश्रय में व्यतीत हो ॥८॥

कृष्णाश्रय स्तुति

सर्वमार्गेषु नष्टेषु कलौ च खलधर्मिणि।
पाषण्डप्रचुरे लोके कृष्ण एव गतिर्मम॥ १ ॥

भावार्थ : हे प्रभु! कलियुग में धर्म के सभी रास्ते बन्द हो गए हैं, और दुष्ट लोग धर्माधिकारी बन गये हैं,संसार में पाखंड व्याप्त है, इसलिए केवल आप भगवान श्रीकृष्ण ही मेरे आश्रय हों। १

म्लेच्छाक्रान्तेषु देशेषु पापैकनिलयेषु च।
सत्पीडाव्यग्रलोकेषु कृष्ण एव गतिर्मम॥ २ ॥

भावार्थ : हे प्रभु! देश में दुष्ट लोगों का भय व्याप्त है और सभी लोग पाप कर्मों में लिप्त हैं, संसार में संत लोग अत्यन्त पीड़ित हैं, इसलिए केवल आप भगवान श्रीकृष्ण ही मेरे आश्रय हों। २

गंगादितीर्थवर्येषु दुष्टैरेवावृतेष्विह।
तिरोहिताधिदेवेषु कृष्ण एव गतिर्मम॥ ३ ॥

भावार्थ : हे प्रभु! गंगा आदि प्रमुख नदियों पर स्थित तीर्थों का भी दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों ने अतिक्रमण कर लिया हैं और सभी देवस्थान लुप्त होते जा रहें हैं, इसलिए केवल आप भगवान श्रीकृष्ण ही मेरे आश्रय हों। ३

अहंकारविमूढेषु सत्सु पापानुवर्तिषु।
लोभपूजार्थयत्नेषु कृष्ण एव गतिर्मम॥ ४ ॥

भावार्थ : हे प्रभु! अहंकार से ग्रसित होकर संतजन भी पाप-कर्म का अनुसरण कर रहे हैं और लोभ के वश में होकर ही ईश्वर की पूजा करते हैं, इसलिए केवल आप भगवान श्रीकृष्ण ही मेरे आश्रय हों। ४

अपरिज्ञाननष्टेषु मन्त्रेष्वव्रतयोगिषु।
तिरोहितार्थवेदेषु कृष्ण एव गतिर्मम॥ ५ ॥

भावार्थ : हे प्रभु! वास्तविक ज्ञान लुप्त हो गया है, योग में स्थित व्यक्ति भी वैदिक मन्त्रों का ठीक प्रकार से उच्चारण नहीं करते हैं और व्रत नियमों का उचित प्रकार से पालन भी नहीं करते हैं, वेदों का सही अर्थ लुप्त होता जा रहा है, इसलिए केवल आप भगवान श्रीकृष्ण ही मेरे आश्रय हों। ५

नानावादविनष्टेषु सर्वकर्मव्रतादिषु।
पाषण्डैकप्रयत्नेषु कृष्ण एव गतिर्मम॥ ६ ॥

भावार्थ : हे प्रभु! अनेकों प्रकार की विधियों के कारण सभी प्रकार के व्रत आदि उचित कर्म नष्ट हो रहें है, पाखंडता पूर्वक कर्मों का ही आचरण किया जा रहा है, इसलिए केवल आप भगवान श्रीकृष्ण ही मेरे आश्रय हों। ६

अजामिलादिदोषाणां नाशकोऽनुभवे स्थितः।
ज्ञापिताखिलमाहात्म्यः कृष्ण एव गतिर्मम॥ ७ ॥

भावार्थ : हे प्रभु! आपका नाम अजामिल आदि जैसे दुष्ट व्यक्तियों के दोषों का नाश करने वाला है, ऐसा अनुभवी संतो द्वारा गाया गया है, अब मैं आपके संपूर्ण माहात्म्य को जान गया हूँ, इसलिए केवल आप भगवान श्रीकृष्ण ही मेरे आश्रय हों। ७

प्राकृताः सकल देवा गणितानन्दकं बृहत्।
पूर्णानन्दो हरिस्तस्मात्कृष्ण एव गतिर्मम॥ ८ ॥

भावार्थ : हे प्रभु! समस्त देवतागण भी प्रकृति के अधीन हैं, इस विराट जगत का सुख भी सीमित ही है, केवल आप ही समस्त कष्टों को हरने वाले हैं और पूर्ण आनंद प्रदान करने वाले हैं, इसलिए केवल आप भगवान श्रीकृष्ण ही मेरे आश्रय हों। ८

विवेकधैर्यभक्त्यादिरहितस्य विशेषतः।
पापासक्तस्य दीनस्य कृष्ण एव गतिर्मम॥ ९ ॥

भावार्थ : हे प्रभु! मुझमें सत्य को जानने की सामर्थ्य नहीं है, धैर्य धारण करने की शक्ति नहीं है, आप की भक्ति आदि से रहित हूँ और विशेष रूप से पाप में आसक्त मन वाले मुझ दीनहीन के लिए केवल आप भगवान श्रीकृष्ण ही मेरे आश्रय हों। ९

सर्वसामर्थ्यसहितः सर्वत्रैवाखिलार्थकृत्।
शरणस्थमुद्धारं कृष्णं विज्ञापयाम्यहम्॥ १० ॥

भावार्थ : हे प्रभु! आप ही सभी प्रकार से सामर्थ्यवान हैं, आप ही सभी प्रकार की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले हैं और आप ही शरण में आये हुए जीवों का उद्धार करने वाले हैं इसलिए मैं भगवान श्रीकृष्ण की वंदना करता हूँ। १०

कृष्णाश्रयमिदं स्तोत्रं यः पठेत्कृष्णसन्निधौ।
तस्याश्रयो भवेत्कृष्ण इति श्रीवल्लभोऽब्रवीत्॥ ११ ॥

भावार्थ : भगवान श्रीकृष्ण के आश्रय में रहकर और उनकी मूर्ति के सामने जो इस स्तोत्र का पाठ करता है उसके आश्रय श्रीकृष्ण हो जाते हैं, ऐसा श्रीवल्लभाचार्य जी के द्वारा कहा गया है। ११

॥श्री कृष्ण कृपा कटाक्ष स्त्रोत्र ॥

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं, स्वभक्तचित्तरंजनं सदैव नन्दनन्दनम्।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं, अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम्॥१॥
मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं, विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम्।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं, महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णावारणम्॥२॥

कदम्बसूनकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं, व्रजांगनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम्।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया, युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम्॥३॥
सदैव पादपंकजं मदीय मानसे निजं, दधानमुक्तमालकं नमामि नन्दबालकम्।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं, समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम्॥४॥

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं, यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम्।
दृगन्तकान्तभंगिनं सदा सदालिसंगिनं, दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम्॥५॥
गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं, सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम्।
नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटं, नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम्॥६॥

समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोदनं, नमामि कुंजमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम्।
निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकं, रसालवेणुगायकं नमामि कुंजनायकम्॥७॥
विदग्धगोपिकामनोमनोज्ञतल्पशायिनं, नमामि कुंजकानने प्रवृद्धवन्हिपायिनम्।
किशोरकान्तिरंजितं दृअगंजनं सुशोभितं, गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम्॥८॥

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा, मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम्।
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान, भवेत्स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान॥९॥

मधुरास्टकम

अधरम मधुरम वदनम मधुरमनयनम मधुरम हसितम मधुरम
हृदयम मधुरम गमनम मधुरममधुराधिपतेर अखिलम मधुरम॥१॥
वचनं मधुरं, चरितं मधुरं, वसनं मधुरं, वलितं मधुरम् ।
चलितं मधुरं, भ्रमितं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ २॥
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः, पाणिर्मधुरः, पादौ मधुरौ ।
नृत्यं मधुरं, सख्यं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ३॥
गीतं मधुरं, पीतं मधुरं, भुक्तं मधुरं, सुप्तं मधुरम् ।
रूपं मधुरं, तिलकं मधुरं, मधुरधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ४॥
करणं मधुरं, तरणं मधुरं, हरणं मधुरं, रमणं मधुरम् ।
वमितं मधुरं, शमितं मधुरं, मधुरधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ५॥
गुञ्जा मधुरा, माला मधुरा, यमुना मधुरा, वीची मधुरा ।
सलिलं मधुरं, कमलं मधुरं, मधुरधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ६॥
गोपी मधुरा, लीला मधुरा, युक्तं मधुरं, मुक्तं मधुरम् ।
दृष्टं मधुरं, शिष्टं मधुरं, मधुरधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ७॥
गोपा मधुरा, गावो मधुरा, यष्टिर्मधुरा, सृष्टिर्मधुरा ।
दलितं मधुरं, फलितं मधुरं, मधुरधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ८॥

॥ इति श्रीमद् वल्लभाचार्यविरचितं मधुराष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ गोपी गीत ॥

कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्ष: स्थले कौस्तुभं।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणु: करे कंकणं॥
सर्वांगे हरि चन्दनं सुललितं कंठे च मुक्तावली।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूडामणि:॥

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा
शश्वदत्र हि। दयित दृश्यतां दिक्षु तावका
स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते॥१॥

शरदुदाशये साधुजातसत् सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका वरद निघ्नतो नेह किं वधः॥२॥

विषजलाप्ययाद्व्यालराक्षसाद्वर्षमारुताद्वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद्विश्वतोभया दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः॥३॥

न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान् सात्वतां कुले॥४॥

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात्।
करसरोरुहं कान्त कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम्॥५॥

व्रजजनार्तिहन्वीर योषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित।
भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो जलरुहाननं चारु दर्शय॥६॥

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम्।
फणिफणार्पितं ते पदांबुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम्॥७॥

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यतीरधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः॥८॥

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः॥९॥

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम्।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो
मनः क्षोभयन्ति हि॥१०॥

चलसि यद्व्रजाच्चारयन्पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम्।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त
गच्छति॥११॥
दिनपरिक्षये नीलकुन्तलैर्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम्।
घनरजस्वलं दर्शयन्मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि॥१२॥

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि।
चरणपङ्कजं शंतमं च ते रमण नः
स्तनेष्वर्पयाधिहन्॥१३॥

सुरतवर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम्।
इतररागविस्मारणं नृणां वितर वीर नस्तेऽधरामृतम्॥१४॥

अटति यद्भवानह्नि काननं त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम्।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां
पक्ष्मकृद्दृशाम्॥१५॥

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवानतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितव योषितः
कस्त्यजेन्निशि॥१६॥

रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम्।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते
मनः॥१७॥

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम्।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां
यन्निषूदनम्॥१८॥

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रिय दधीमहि
कर्कशेषु।
तेनाटवीमटसि तद्व्यथते न किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमति
धीर्भवदायुषां नः॥ १९ ॥

श्रीकृष्ण की फोटो से समयाओं का समाधान

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

जिस प्रकार भगवान श्री कृष्ण के नाम का स्मरण,चिंतन अनंत पापों का नाश करने वाला हैं।

सकृन्मनः कृष्णापदारविन्दयोर्निवेशितं तद्गुणरागि यैरिह।
न ते यमं पाशभृतश्च तद्भटान् स्वप्नेऽपि पश्यन्ति हि चीर्णनिष्कृताः॥

भावार्थ: जो मनुष्य केवल एक बार श्रीकृष्ण के गुणों में प्रेम करने वाले अपने चित्त को श्रीकृष्ण के चरण कमलों में लगा देते हैं, वे पापों से छूट जाते हैं, फिर उन्हें पाश हाथ में लिए हुए यमदूतों के दर्शन स्वप्न में भी नहीं हो सकते।

अविस्मृतिः कृष्णपदारविन्दयोः क्षिणोत्यभद्रणि शमं तनोति च।
सत्वस्य शुद्धिं परमात्मभक्तिं ज्ञानं च विज्ञानविरागयुक्तम्॥

भावार्थ: श्रीकृष्ण के चरण कमलों का स्मरण सदा बना रहे तो उसी से पापों का नाश, कल्याण की प्राप्ति, अन्तः करण की शुद्धि, परमात्मा की भक्ति और वैराग्ययुक्त ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति अपने आप ही हो जाती हैं।

विद्वानो के मत से जिस प्रकार भगवान श्री कृष्ण के नाम का स्मरण करने मात्र से अनंत कोटी पापों का नाश होता हैं उसी प्रकार से भगवान श्री कृष्ण के दर्शन मात्र से मनुष्य के विभिन्न ताप-पाप का नाश होता हैं व उसके विभिन्न
स्वरुप में दर्शन करने से विभिन्न मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

धर्मशास्त्रो में भगवान श्रीकृष्ण के हर स्वरूप का वर्णन अति सुन्दर व शूक्ष्मता से किया गया है। विद्वानो के मत से भगवान श्रीकृष्ण के किसी भी स्वरूप के दर्शन से भक्तको सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती है।

वास्तुशास्त्रीयों के मत से भी अपने भवन व व्यवसायीक स्थान पर श्री कृष्ण का चित्र लगाना अति शुभदायक माना गया हैं।

- उत्तम संतान सुख की कामना की पूर्ति हेतु श्रीकृष्ण के बालस्वरूप का चित्र शयनकक्ष में लगाना शुभ फलदायक होता हैं। (कृष्ण का फोटो स्त्री के सम्मुख लगाएं।)
- पति-पत्नी में परस्पर प्रेम बढाने हेतु राधा-कृष्ण की प्रसन्न तस्वीर शयनकक्ष में लगाना शुभ फलदायक होता हैं।
- यदि परिवार में बार-बार एक के बाद एक विभिन्न तरह की समस्याएं आरही हों, तो वसुदेवजी द्वारा टोकरी में श्रीकृष्ण को लेकर नदी पार करने वाती तस्वीर लगाने से घर से कई तरह की समस्या दूर होने लगती है।
- श्रीकृष्ण द्वार गोवर्धन पर्वत को उठाने वाली तस्वीर लगाने से विभिन्न समस्याओं से लडने की प्रेरणा प्राप्त होती हैं व समस्याएं शीघ्र दूर होती हैं।
- भगवान श्रीकृष्ण की रासलीला वाली तस्वीर को भवन में पूर्व दिशा की और लगाने से परिवार के सदस्यो में निस्वार्थ प्रेम बढता हैं।

नोट: धर्मशास्त्रो के जानकारो के मत से अपने शयन कक्ष में पूजा स्थल रखना या अन्य देवी-देवताओं की तस्वीर लगाना वर्जित हैं। लेकिन राधा-कृष्ण का चित्र लगाया जासकता हैं।

त्रैलोक्यमंगल श्रीकृष्ण कवचम्

त्रैलोक्यमंगलकवचम्
कुञ्चिताधरपुटेन पूरयन् वंशिकाप्रचलदंगुलीततिः ।
मोहयन्सुरभिवामलोचनाः पातु कोऽपि नवनीरदच्छविः॥
गणेशाय नमः । नारद उवाच ।
भगवन्सर्वधर्मज्ञ कवचं यत्प्रकाशितम् ।
त्रैलोक्यमंगलं नाम कृपया कथय प्रभो ॥१॥
सनत्कुमार उवाच ।
श्रृणु वक्ष्यामि विपेन्द्र कवचं परमाद्भुतम् ।
नारायणेन कथितं कृपया ब्रह्मणे पुरा ॥२॥
ब्रह्मणा कथितं मह्यं परं स्नेहाद्वदामि वै ।
अतिगुह्यतरं तत्त्वं ब्रह्ममंत्रौघविग्रहम् ॥३॥
यद्धृत्वा पठनाद्ब्रह्मा सृष्टिं वितनुते ध्रुवम् ।
यद्धृत्वा पठनात्पाति महालक्ष्मीर्जगत्रयम् ॥४॥
पठनाद्धारणाच्छंभुः संहर्ता सर्वमंत्रवित् ।
त्रैलोक्यजननी दुर्गा महिषादिमहासुरान् ॥५॥
वरदृप्तान् जघानैव पठनाद्धारणाद्यतः ।
एवमिन्द्रादयः सर्वे सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥६॥
इदं कवचमत्यंतगुप्तं कुत्रापि नो वदेत् ।
शिष्याय भक्तियुक्ताय साधकाय प्रकाशयेत् ॥७॥
शठाय परशिष्याय दत्त्वा मृत्युमवप्नुयात् ।
त्रैलोक्यमंगस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः ॥८॥
ऋषिश्छंदश्च गायत्री देवो नारायणः स्वयम् ।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥९॥
प्रणवो मे शिरः पातु नमो नारायणाय च ।
भालं मे नेत्रयुगलमष्टार्णो भुक्तिमुक्तिदः ॥१०॥
क्लीं पायाच्छ्रत्रियुग्मं चैकाक्षरः सर्वमोहनः ।
क्लीं कृष्णाय सदा घ्राणं गोविंदायेति जिह्विकाम् ॥११॥
गोपीजनपदवल्लभाय स्वाहाननं मम ।
अष्टादशाक्षरो मंत्रः कण्ठं पातु दशाक्षरः ॥१२॥
गोपीजनपदवल्लभाय स्वाहा भुजद्वयम् ।
क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलाङ्गाय नमः स्कंधौ दशाक्षरः॥१३॥
क्लीं कृष्णः क्लीं करौ पायात् क्लीं कृष्णो मां गतोऽवतु।
हृदयं भुवनेशानः क्लीं कृष्णः क्लीं स्तनौ मम ॥१४॥
गोपालायाग्निजायान्तं कुक्षियुग्मं सदाऽवतु ।
क्लीं कृष्णाय सदा पातु पार्श्वयुग्ममनुत्तमः ॥१५॥
कृष्णगोविंदकौ पातां स्मराद्यौ ङेयुतौ मनुः ।
अष्टाक्षरः पातु नाभिं कृष्णेति द्वयक्षरोऽवतु ॥१६॥
पृष्ठं क्लीं कृष्णकं गल्लं क्लीं कृष्णाय द्विठान्तकः ।
सक्थिनी सततं पातु श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णठद्वयम् ॥१७॥
ऊरू सप्ताक्षरः पायात्रयोदशाक्षरोऽवतु ।
श्री ह्रीं क्लीं पदतो गोपीजनवल्लभपदं ततः ॥१८॥
भाय स्वाहेति पायुं वै क्लीं ह्रीं श्रीं स दशार्णकः ।
जानुनी च सदा पातु ह्रीं श्रीं क्लीं च दशाक्षरः ॥१९॥
त्रयोदशाक्षरः पातु जम्घे चक्राद्युदायुधः ।
अष्टादशाक्षरः ह्रीं श्रीं पूर्वको विंशदर्णकः ॥२०॥
सर्वांगं मे सदा पातु द्वारकानायको बली ।
नमो भगवते पश्चाद्वासुदेवाय तत्परम् ॥२१॥
ताराद्यो द्वादशार्णोऽयं प्राच्यां मां सर्वदाऽवतु ।
श्रीं ह्रीं क्लीं च दशार्णस्तु ह्रीं क्लीं श्रीं षोडशार्णकः ॥२२॥
गदाद्युदायुधो विष्णुर्मामग्नेर्दिशि रक्षतु ।
ह्रीं श्रीं दशाक्षरो मंत्रो दक्षिणे मां सदाऽवतु ॥२३॥
तारो नमो भगवते रुक्मिणीवल्लभाय च ।
स्वाहेति षोडशार्णोऽयं नैऋत्यां दिशि रक्षतु ॥२४॥
क्लीं हृषीकेशाय पदं नमो मां वारुणेऽवतु ।
अष्तादशार्णः कामान्तो वायव्ये मां सदाऽवतु ॥२५॥
श्रीं मायाकामकृष्णाय गोविंदाय द्विठो मनुः ॥
द्वादशार्णात्मको विष्णुरुत्तरे मां सदाऽवतु ॥२६॥
वाग्भयं कामकृष्णायं ह्रीं गोविंदाय तत्परम् ।
श्रीं गोपीजनवल्लभान्ताय स्वाहा करौ ततः ॥२७॥
द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रो मामैशान्ये सदाऽवतु ।
कालियस्य फणामध्ये दिव्यं नृत्यं करोति तम् ॥२८॥
नमामि देवकीपुत्रं नृत्यराजानमच्युतम् ।
द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रोऽप्यधो मां सर्वदाऽवतु ॥२९॥
कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि ।
तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयादेषां मां पातु चोर्ध्वतः ॥३०॥
इति ते कथितं विप्र ब्रह्म मंत्रौघविग्रहम् ।
त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं ब्रह्मरूपकम् ॥३१॥
ब्रह्मणा कथितं पूर्वं नारायणमुखाच्छ्रुतम् ।
तव स्नेहान्मयाऽऽख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥३२॥
गुरुं प्रणम्य विधिवत्कवचं प्रपठेत्ततः ।

सकृद् द्विस्त्रिर्यथाज्ञानं स हि सर्वतपोमयः ॥३३॥
मंत्रेषु सकलेष्वेव देशिको नात्र संशयः ।
शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्यविधिः स्मृतः ॥३४॥
हवनादिन्दशांशेन कृत्वा तत्साधयेद् ध्रुवम् ।
यदि स्यात्सिद्धकवचो विष्णुरेव भवेत्स्वयम् ॥३५॥
मंत्रसिद्धिर्भवेत्तस्य पुरुश्चर्याविधानतः ।
स्पर्धामुद्धूय सततं लक्ष्मीर्वाणी वसेत्ततः ॥३६॥
पुष्पांजल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत्सकृत् ।
दशवर्षसहस्त्राणी पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥३७॥
भूर्जे विलिख्यांगुलिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ।
कंठे वा दक्षिणे बाहौ सोऽपि विष्णुर्न संशयः ॥३८॥
अश्वमेधसहस्त्राणि वाजपेयशतानि च ।
महादानानि यान्येव प्रादक्षिण्यं भुवस्तथा ॥३९॥
कलां नार्हन्ति तान्येव सकृदुच्चारणात्ततः ।
कवचस्य प्रसादेन जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥४०॥
त्रैलोक्यम् क्षोभयत्येव त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।
इदम् कवचमज्ञात्व यजेद्यः पुरुशोत्तमम् ।
शतलक्षं प्रजप्तोऽपि न मन्त्रस्तस्य सिध्यति ॥४१॥
इति श्रीनारदपंचरात्रे ज्ञानामृतसारे त्रैलोक्यमंगलकवचं संपूर्णम् ।

ब्रह्मा रचित कृष्णस्तोत्र

ब्रह्मोवाच :

रक्ष रक्ष हरे मां च निमग्नं कामसागरे।

दुष्कीर्तिजलपूर्णे च दुष्पारे बहुसंकटे ॥१॥

भक्तिविस्मृतिबीजे च विपत्सोपानदुस्तरे।

अतीव निर्मलज्ञानचक्षुः-प्रच्छन्नकारणे ॥२॥

जन्मोर्मि-संगसहिते योषिन्नक्राघसंकुले।

रतिस्रोतःसमायुक्ते गम्भीरे घोर एव च ॥३॥

प्रथमासृतरूपे च परिणामविषालये।

यमालयप्रवेशाय मुक्तिद्वारातिविस्तृतौ ॥४॥

बुद्ध्या तरण्या विज्ञानैरुद्धरास्मानतः स्वयम्।

स्वयं च त्व कर्णधारः प्रसीद मधुसूदन ॥५॥

मद्विधाः कतिचिन्नाथ नियोज्या भवकर्मणि।

सन्ति विश्वेश विधयो हे विश्वेश्वर माधव ॥६॥

न कर्मक्षेत्रमेवेद ब्रह्मलोकोऽयमीप्सितः।

तथाऽपि न स्पृहा कामे त्वद्भक्तिव्यवधायके ॥७॥

हे नाथ करुणासिन्धो दीनबन्धो कृपां कुरु।

त्वं महेश महाज्ञाता दुःस्वप्नं मां न दर्शय ॥८॥

इत्युक्त्वा जगतां धाता विरराम सनातनः।

ध्यायं ध्यायं मत्पदाब्जं शश्वत्सस्मार मामिति ॥९॥

ब्रह्मणा च कृतं स्तोत्रं भक्तियुक्तश्च यः पठेत्।

स चैवाकर्मविषये न निमग्नो भवेद् ध्रुवम् ॥१०॥

मम मायां विनिर्जित्य स ज्ञानं लभते ध्रुवम्।

इह लोके भक्तियुक्तो मद्भक्तप्रवरो भवेत् ॥११॥

॥ इति श्रीब्रह्मदेवकृतं कृष्णस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

श्रीकृष्णाष्टकम्

पार्वत्युवाच-

कैलासशिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शंकरम्।
ब्रह्माण्डाखिलनाथस्त्वं सृष्टिसंहारकारकः॥१॥
त्वमेव पूज्यसेलौकै ब्रह्मविष्णुसुरादिभिः।
नित्यं पठसि देवेश कस्य स्तोत्रं महेश्वरः॥२॥
आश्चर्यमिदमत्यन्तं जायते मम शंकर।
तत्प्राणेश महाप्राज्ञ संशयं छिन्धि शंकर॥३॥

श्री महादेव उवाच-

धन्यासि कृतपुण्यासि पार्वति प्राणवल्लभे।
रहस्यातिरहस्यं च यत्पृच्छसि वरानने॥४॥
स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनस्त्वं परिपृच्छसि।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः॥५॥
दत्ते च सिद्धिहानिः स्यात्तस्माद्यत्नेन गोपयेत्।
इदं रहस्यं परमं पुरुषार्थप्रदायकम्॥६॥
धनरत्नौघमाणिक्यं तुरंगं गजादिकम्।
ददाति स्मरणादेव महामोक्षप्रदायकम्॥७॥
तत्तेऽहं संप्रवक्ष्यामि श्रृणुष्वावहिता प्रिये।
योऽसौ निरंजनो देवश्चित्स्वरूपी जनार्दनः॥८॥
संसारसागरोत्तारकारणाय सदा नृणाम्।
श्रीरंगादिकरूपेण त्रैलोक्यं व्याप्य तिष्ठति॥९॥
ततो लोका महामूढा विष्णुभक्तिविवर्जिताः।
निश्चयं नाधिगच्छन्ति पुनर्नारायणो हरिः॥१०॥
निरंजनो निराकारो भक्तानां प्रीतिकामदः।
वृदावनविहाराय गोपालं रूपमुद्वहन्॥११॥
मुरलीवादनाधारी राधायै प्रीतिमावहन्।
अंशांशेभ्यः समुन्मील्य पूर्णरूपकलायुतः॥१२॥
श्रीकृष्णचन्द्रो भगवान्नन्दगोपवरोद्यतः।
धरिणीरूपिणी माता यशोदानन्ददायिनी॥१३॥
द्वाभ्यां प्रायाचितो नाथो देवक्यां वसुदेवतः।
ब्रह्मणाऽभ्यर्थितो देवो देवैरपि सुरेश्वरि॥१४॥
जातोऽवन्यां मुकुन्दोऽपि मुरलीवेदरेचिका।
तयासार्द्ध वचःकृत्वा ततो जातो महीतले॥१५॥
संसारसारसर्वस्वं श्यामलं महदुज्ज्वलम्।
एतज्ज्योतिरहं वेद्यं चिन्तयामि सनातनम्॥१६॥
गौरतेजो बिना यस्तु श्यामतैजः समर्चयेत्।
जपेद्वा ध्यायते वापि स भवेत्पातकी शिवे॥१७॥
स ब्रह्महासुरापी च स्वर्णस्तेयी च पंचमः।
एतैर्दोषैर्विलिप्ये तेजोभेदान्महेश्वरि।१८॥
तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधा राधामाधवरूपकम्।
तस्मादिदं महादेवि गोपालेनैव भाषितम्॥१९॥
दुर्वाससो मुनेर्मोहे कार्तिक्यां रासमण्डले।
ततः पृष्टवती राधा सन्देहं भेदमात्मनः॥२०॥
निरंजनात्समुत्पन्नं मयाऽधीतं जगन्मयि।
श्रीकृष्णेन ततः प्रोक्तं राधायै नारदाय च॥२१॥
ततो नारदतः सर्व विरला वैष्णवास्तथा।
कलौ जानन्ति देवेशि गोपनीयं प्रयत्नतः॥२२॥
शठाय कृपणायाथ दाम्भिकाय सुरेश्वरि।
ब्रह्महत्यामवाप्नोति तस्माद्यत्नेन गोपयेत्॥२३॥

मनोकामना पूर्ति हेतु विभिन्न कृष्ण मंत्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

मूल मंत्र :

कृं कृष्णाय नमः

यह भगवान कृष्ण का मूलमंत्र हैं। इस मूल मंत्र के नियमित जाप करने से व्यक्ति को जीवन में सभी बाधाओं एवं कष्टों से मुक्ति मिलती हैं एवं सुख कि प्राप्ति होती हैं।

सप्तदशाक्षर मंत्र:

ॐ श्रीं नमः श्रीकृष्णाय परिपूर्णतमाय स्वाहा

यह भगवान कृष्ण का सत्तरा अक्षर का हैं। इस मूल मंत्र के नियमित जाप करने से व्यक्ति को मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चयात उसे जीवन में सबकुछ प्राप्त होता हैं।

सप्ताक्षर मंत्र:

गोवल्लभाय स्वाहा

इस सात अक्षरों वाले मंत्र के नियमित जाप करने से जीवन में सभी सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

अष्टाक्षर मंत्र:

गोकुल नाथाय नमः

इस आठ अक्षरों वाले मंत्र के नियमित जाप करने से व्यक्ति कि सभी इच्छाएँ एवं अभिलाषाए पूर्ण होती हैं।

दशाक्षर मंत्र:

क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलांगाय नमः

इस दशाक्षर मंत्र के नियमित जाप करने से संपूर्ण सिद्धियों की प्राप्ति होती हैं।

द्वादशाक्षर मंत्र:

ॐ नमो भगवते श्रीगोविन्दाय

इस कृष्ण द्वादशाक्षर मंत्र के नियमित जाप करने से इष्ट सिद्धी की प्राप्ति होती हैं।

तेईस अक्षर मंत्र:

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीकृष्णाय गोविंदाय
गोपीजन वल्लभाय श्रीं श्रीं श्री

यह तेईस अक्षर मंत्र के नियमित जाप करने से व्यक्ति कि सभी बाधाएँ स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

अट्ठाईस अक्षर मंत्र:

ॐ नमो भगवते नन्दपुत्राय
आनन्दवपुषे गोपीजनवल्लभाय स्वाहा

यह अट्ठाईस अक्षर मंत्र के नियमित जाप करने से व्यक्ति को समस्त अभिष्ट वस्तुओं कि प्राप्ति होती हैं।

उन्तीस अक्षर मंत्र:

लीलादंड गोपीजनसंसक्तदोर्दण्ड
बालरूप मेघश्याम भगवन विष्णो स्वाहा।

यह उन्तीस अक्षर मंत्र के नियमित जाप करने से स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

बत्तीस अक्षर मंत्र:

नन्दपुत्राय श्यामलांगाय बालवपुषे
कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा।

यह बत्तीस अक्षर मंत्र के नियमित जाप करने से व्यक्ति कि समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

तैंतीस अक्षर मंत्र:

ॐ कृष्ण कृष्ण महाकृष्ण सर्वज्ञ त्वं प्रसीद मे।
रमारमण विद्येश विद्यामाशु प्रयच्छ मे॥

यह तैंतीस अक्षर के नियमित जाप करने से समस्त प्रकार की विद्याएं निःसंदेह प्राप्त होती हैं।

यह श्रीकृष्ण के तीव्र प्रभावशाली मंत्र हैं। इन मंत्रों के नियमित जाप से व्यक्ति के जीवन में सुख, समृद्धि एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती हैं।

कृष्ण मंत्र

भगवान श्री कृष्ण से संबंधी मंत्र तो शास्त्रों में भरे पडे हैं। लेकिन जन साधारण में कुछ खास मंत्रों का ही प्रचलन और अत्याधिक महत्व हैं।

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः॥

इस मंत्र को नियमित स्नान इत्यादि से निवृत होकर स्वच्छ कपडे पहन कर 108 बार जाप करने से व्यक्ति के जीवन में किसी भी प्रकार के संकट नहीं आते।

ॐ नमः भगवते वासुदेवाय कृष्णाय
क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः।

इस मंत्र को नियमित स्नान इत्यादि से निवृत होकर स्वच्छ कपडे पहन कर 108 बार जाप करने से आकस्मिक संकट से मुक्ति मिलति हैं।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम, राम-राम हरे हरे।

इस मंत्र को नियमित स्नान इत्यादि से निवृत होकर स्वच्छ कपडे पहन कर 108 बार जाप करने से व्यक्ति को जीवन मे समस्त भौतिक सुखो एवं मोक्ष प्राप्ति होती हैं।
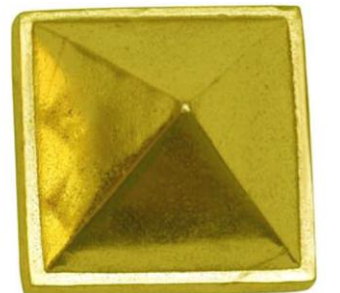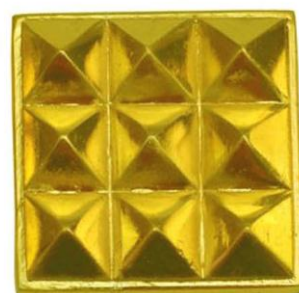
पर्यूषण का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

जैन धर्म के अनुयायी पर्यूषण पर्व को जीव की आत्म शुद्धि का मार्ग बताते हैं। जैन मुनिजनो के अनुसार पर्यूषण पर्व इष्ट आराधना और क्षमा का पर्व भी हैं। पर्यूषण को मुख्यत: मनुष्य के पुनर्निर्माण का द्योतक मानाजाता हैं। पर्यूषण में मनुष्य अपने भितर की विकृतियों का त्याग करता हैं।

पर्यूषण के दिनों में श्रावक-श्राविकाएं ब्रह्मचर्य का पालन, रात्रि भोज त्याग, सचित्त का त्याग रखते हैं। व्रत-उपवास, सामयिक-प्रतिक्रमण, प्रवचन-श्रवण आदि के माध्यम से इन दिनों अधिक से अधिक समय धर्म ध्यान में व्यतीत किया जाता हैं।

पर्यूषण के दिन श्रावक-श्राविकाएं उपवास रखते हैं और स्वयं के पापों की आलोचना करते हुए भविष्य में उनसे बचने की प्रतिज्ञा करते हैं। इसके साथ ही वे चौरासी लाख योनियों में विचरण कर रहे, समस्त जीवों से क्षमा माँगते हुए यह सूचित करते हैं कि उनका किसी से कोई बैर नहीं है।

श्रावक-श्राविकाएं परोक्ष रूप से वे यह संकल्प करते हैं कि वे प्रकृति में कोई हस्तक्षेप नहीं करेंगे। मन, वचन और काया से जानते या अजानते वे किसी भी हिंसा की गतिविधि में भाग न तो स्वयं लेंगे, न दूसरों को लेने को कहेंगे और न लेने वालों का अनुमोदन करेंगे। यह आश्वासन देने के लिए कि उनका किसी से कोई बैर नहीं है, वे यह भी घोषित करते हैं कि उन्होंने विश्व के समस्त जीवों को क्षमा कर दिया है और उन जीवों को क्षमा माँगने वाले से डरने की जरूरत नहीं है।

क्षमा देने से मनुष्य अन्य समस्त जीवों को अभयदान देते हैं और उनकी रक्षा करने का संकल्प लेते हैं। तब व्यक्ति संयम और विवेक का अनुसरण करेंगे, आत्मिक शांति अनुभव करेंगे और सभी जीवों और पदार्थों के प्रति मैत्री भाव रखेंगे। आत्मा तभी शुद्ध रह सकती है जब वह अपने सेबाहर हस्तक्षेप न करे और बाहरी तत्व से विचलित न हो। क्षमा-भाव जैन धर्म का मूलमंत्र है।

जैन धर्म में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परम्परा में आठ दिनों तक "कल्पसूत्र" पढ़ा व सुना जाता हैं।
जबकि जैन धर्म में स्थानकवासी परम्परा में आठ दिनों तक "अन्तकद्दशा सूत्र" का वाचन किया जाता हैं।

श्री नवकार मंत्र (नमस्कार महामंत्र)

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवकार मंत्र समस्त जैन धर्मावलंबियो का मुख्य मंत्र है।

नमो अरिहंताणं

नमो सिद्धाणं

नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाणं

नमो लोएसव्वसाहूणं

एसो पंच नमुक्कारो

सव्व पावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसिं

पढमं हवई मंगलं

अर्थ:

मैं अरिहंत भगवंतों को नमन करता हूं।
मैं सिद्ध भगवंतों को नमन करता हूं।
मैं आचार्य भगवंतों को नमन करता हूं।
मैं उपाध्याय भगवंतों को नमन करता हूं।
मैं लोक में रहे हुए सभी साधु भगवंतों को नमन करता हूं।
इन पांचों को किया हुआ नमस्कार
सभी पापों को नष्ट करता हैं।
एवं सभी मंगलों में भी
प्रथम (श्रेष्ठ) मंगल हैं।

जैन मुनियों के मत से नवकार महामंत्र जैन धर्म का सिद्ध एवं अत्यंत प्रभावशाली मंत्र हैं। इस मंत्र में समस्त रिद्धियाँ और सिद्धियाँ विद्यमान हैं। हर जैन धर्म के अनुयायी नवकार मंत्र का जप करता हैं।

नवकार महामंत्र अथवा नमस्कार महामंत्र में जिस परमेष्ठी भगवन्तों की आराधना की जाती है उन भगवन्तों में तप, त्याग, संयम, वैराग्य इत्यादि सात्विक गुण होते हैं। नवकार मंत्र के माध्यम से अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु, इन पाँच भगवंतों को परम इष्ट माना हैं। इसलिये इनको नमन करने की विधि को नवकार महामंत्र अथवा नमस्कार महामंत्र कहा जाता है। वैसे तो हर मंत्र अपने आप में रहस्य लिये होता है, परंतु नवकार महामंत्र तो परम रहस्यमय हैं।

नवकार महामंत्र के अति दिव्य प्रताप से साधक के समस्त दुःख सुख में बदल जाता हैं।

जैन विद्वानो के मत से नवकार मंत्र के स्मरण, चिन्तन, मनन और उच्चारण से ही मनुष्य के जन्म-जन्मांतरों के पापों से मुक्त हो कर उसे शाश्वत सुख प्राप्त होता हैं।

नवकार मंत्र जप के लाभ

- जब कोई व्यक्ति श्रद्धा पूर्ण भाव से नवकार मंत्र का केवल एक अक्षर उच्चरण करता हैं, तो उसके 7 सागरोपम जितने पापो का नाश होता हैं।

- जब कोई व्यक्ति "नमो अरिहंताणं" का उच्चरण करत्ता हैं, तो उसके 50 सागरोपम जितने पाप नष्ट होते हैं।
- जब कोई व्यक्ति पूरा नवकार मंत्र जपता हैं, तो उसके 500 सागरोपम जितने पाप नष्ट होते हैं।
- यदि कोई व्यक्ति प्रातः काल उठकर 8 नवकार मंत्र जपता हैं, तो उसके 4000 सागरोपम जितने पाप नष्ट होते हैं।
- संपूर्ण नवकार मंत्र की 1 माला गिनने से 54000 सागरोपम जितने पाप नष्ट होते हैं।
- (सागरोपम अर्थात् जिसे गिनने में कठिनाई हो इतने अरबों वर्ष।)
- गर्भवती स्त्रियों के लिए इस मंत्र का जाप करना बच्चे के लिये अति उत्तम हैं।
- जन्म के समय यदि बालक के कान में यह मंत्र सुनाया जाये तो उसे जीवन में सुख-समृद्धि प्राप्त होती हैं।
- यदि किसी जीव को मृत्यु के समय नवकार मंत्र सुनाया जाये तो उसे सदगति प्राप्त होती हैं।
- नवकार मंत्र की महिमा अनंत व अपार हैं इसी लिये नवकार मंत्र को शक्तिदायक, विध्नविनाशक, अत्यंत प्रभावशाली व चमत्कारी हैं।

देवदर्शन स्तोत्रम्

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम्।1।

दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम्।2।

वीतरागमुखं द्रष्ट्वा, पद्मरागसमप्रभं।
जन्म-जन्मकृतं पापं दर्शनेन विनश्यति।3।

दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसार-ध्वान्त-नाशनं।
बोधनं चित्त-पद्मस्य, समस्तार्थ-प्रकाशनम्।4।

दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्मामृत-वर्षणम्।
जन्म-दाह-विनाशाय, वर्द्धनं सुख-वारिधेः।5।

जीवादि तत्त्व प्रतिपादकाय, सम्यक्त्व-मुख्याष्ट-गुणार्णवाय।
प्रशांत-रुपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय ।6।

चिदानन्दैक-रुपाय, जिनाय परमात्मने।
परमात्म-प्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः।7।

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्य-भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर।8।

न हि त्राता न हि त्राता, न हि त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति ।9।

जिनेर्भक्तिः जिनेर्भक्तिः जिनेर्भक्तिः दिने दिने।
सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु भवे भवे।10।

जिनधर्म - विनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासितः।11।

जन्म-जन्मकृतं पापं, जन्म-कोटिमुपार्जितम्।
जन्म-मृत्यु-जरा-रोगं, हन्यते जिन-दर्शनात्।12।

अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य,
देव ! त्वदीय चरणाम्बुज वीक्षणेन।
अद्य त्रिलोक-तिलकं ! प्रतिभासते मे,
संसार-वारिधिरयं चुलुक-प्रमाणम्।13।

भगवान महावीर की माता त्रिशला के 16 अद्भुत स्वप्न

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

जैन धर्म के 24वे तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्म से पूर्व आषाढ़ शुक्ल षष्ठी के दिन उनकी माता त्रिशला नगर में हो रही अद्‌भुत घटना के बारे में सोच रही थीं। माता त्रिशला उसी बारे में सोचते-सोचते गहरी नींद में सो गई। उसी रात्रि के अंतिम प्रहर में माता त्रिशला ने सोलह शुभ एवं मंगलकारी स्वप्न देखे। नींद से जागने पर रानी त्रिशला ने महाराज सिद्धार्थ से अपने सोहल स्वप्न के विषय में चर्चा की और उसका फल जानने की इच्छा प्रकट की। तब महाराजा सिद्धार्थ ने महारानी त्रिशला द्वारा देखे गए सपनों की विस्तृत जानकारी ज्योतिष विद्वानोकों दी, तब विद्वानों ने कहां महाराज महारानी ने स्वप्न में मंगलमय प्रतिको के दर्शन किए हैं।

विद्वानों ने रानी से कहा कि वह एक-एक कर अपने सारे स्वप्न बताएं, जिससे उसी प्रकार उसका फल बताते गए। तब महारानी त्रिशला ने अपने सारे स्वप्न उन्हें एक-एक कर विस्तार से सुनाएं जो इस प्रकार हैं..

1.

रानी को पहले स्वप्न में एक अति विशाल सफेद रंग का हाथी दिखाई दिया था।
ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां उनके घर एक अद्भुत पुत्र रत्न उत्पन्न होगा।

2.

रानी को दूसरे स्वप्न में एक सफेद रंग का वृषभ दिखाई दिया था।
ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र संसार का कल्याण करने वाला होगा।

3.

रानी को तीसरे स्वप्न में सफेद रंग और लाल बालों वाला सिंह दिखाई दिया था।
ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र सिंह के समान बलशाली होगा।

4.

रानी को चौथे स्वप्न में कमल आसन पर विराजमान लक्ष्मी का अभिषेक करते हुए दो हाथी दिखाई दिये थे।
ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां देवलोक से देवगण आकर उस पुत्र का अभिषेक करेंगे।

5.

रानी को पांचवें स्वप्न में दो सुगंधित पुष्पमालाएं दिखाई दी थी।
ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र धर्म प्रचारक होगा और जन-जन के लिए कल्याणकारी होगा।

6.

रानी को छठे स्वप्न में पूर्ण चंद्रमा दिखाई दिया था।
ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां उसके जन्म से तीनों लोक आनंदित होंगे और वह चंद्रमा के समान शीतल व सौम्य होगा।

7.

रानी को सातवें स्वप्न में उदय होता सूर्य दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र सूर्य के समान तेजयुक्त चरौ और ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाला होगा।

8.

रानी को आठवें स्वप्न में कमल पत्रों से ढंके हुए दो स्वर्ण कलश दिखाई दिये थे।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र अनेक निधियों का स्वामी होगा।

9.

रानी को नौवें स्वप्न में सरोवर में क्रीड़ा करती दो मछलियां दिखाई दी थी।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र महाआनंद का दाता, दुखीका दुखहर्ता होगा।

10.

रानी को दसवें स्वप्न में कमलों से भरा सरोवर दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र शुभ लक्षणों से युक्त एवं कमलाकार सिंहासन विराजमान होगा।

11.

रानी को ग्यारहवें स्वप्न में लहरें उछालता समुद्र दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां पुत्र भूत-भविष्य-वर्तमान का ज्ञाता होगा।

12.

रानी को बारहवें स्वप्न में हीरे-मोती और रत्नजड़ित स्वर्ण सिंहासन दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां पुत्र राज्य का स्वामी और प्रजा का हितचिंतक होगा।

13.

रानी को तेरहवें स्वप्न में देव विमान दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां इस जन्म से पूर्व वह पुत्र स्वर्ग का देवता होगा।

14.

रानी को चौदहवें स्वप्न में पृथ्वी को भेद कर निकलता नागों के राजा नागेन्द्र का विमान दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र जन्म से ही त्रिकालदर्शी होगा।

15.

रानी को पन्द्रहवें स्वप्न में रत्नों का ढेर दिखाई दिया था।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र अनंत गुणों से संपन्न होगा।

16.

रानी को सोलहवें स्वप्न में धुआंरहित अग्नि दिखाई दी थी।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने स्वप्न का फल बताते हुवे कहां वह पुत्र सांसारिक कर्मों का अंत करके मोक्ष (निर्वाण) को प्राप्त होगा।

***

विभिन्न चमत्कारी जैन मंत्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एका अक्षर का मंत्र :-

ॐ (ओम)

ॐ शब्द की ध्वनि पांचो परमेष्ठी नामों के पहले अक्षर को मिलाने पर बनती हैं।

जैन मुनियों के मत से अरहन्त का पहला अक्षर 'अ' जो अशरीरी अर्थात सिद्ध का 'अ' हैं। ओम शब्द में आचार्य का 'आ', उपाध्याय का 'उ', तथा मुनि अर्थात साधु जनो का 'म्', इस प्रकार सभी शब्दो को जोडने ॐ बनता हैं।

दो अक्षरों का मंत्र :-

1. सिद्ध
2. ॐ ह्रीं

चार अक्षरों का मंत्र :-

1. अरहन्त
2. अ सि साहू

पंचाक्षरी मंत्र :-

अ सि आ उ सा

षष्टाक्षरी मंत्र :-

1. अरहन्त सिद्ध
2. अरहन्त सि सा
3. ॐ नमः सिद्धेभ्य
4. नमोर्हत्सिद्धेभ्यः

सप्ताक्षरी मंत्र:-

ॐ श्रीं ह्रीं अर्हं नमः।

अष्टाक्षरी मंत्र:-

ॐ नमो अरिहंताणं।

सोलह अक्षरों का मंत्र :-

अरहंत सिद्ध आइरिया उवज्झाया साहू

35 अक्षरों का मंत्र :-

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।।

लघु शान्ति मंत्र:-

ॐ ह्रीम् अर्हम् असिआउसा सर्वशान्तिम् कुरु कुरु स्वाहा।

मनोरथ सिद्धिदायक मंत्र :-

ॐ ह्रीम् श्रीम् अर्हम् नमः ।

रोगनाशक मंत्र :-

ॐ ऐम् ह्रीम् श्रीम् कलिकुण्डदण्डस्वामिने नमः आरोग्य-परमेश्वर्यम् कुरु कुरु स्वाहा ।

(रोग शांति हेतु उक्त मन्त्र को श्रीपार्श्वनाथ जी की प्रतिमा के सम्मुख शुद्धता व् नियम से 108 बार जप करना अति लाभदायक होता हैं।)

रोग निवारक मंत्र :-

ॐ ह्रीं सकल-रोगहराय श्री सन्मति देवाय नमः ।

रोग निवारक नवकार मंत्र :-

ॐ नमो आमोसहि पत्ताणं
ॐ नमो खेलोसहि पत्ताणं
ॐ नमो जेलोसहि पत्ताणं
ॐ नमो सव्वोसहि पत्ताणं स्वाहा।

(उक्त मंत्र की प्रतिदिन एक माला जप करने से सर्व प्रकार के रोगो की शांति होती हैं। रोगी व्यक्ति के कष्ट मे न्यूनता आती हैं।)

मंगलदायक मंत्र :-

ॐ ह्रीम् वरे सुवरे असिआउसा नमः स्वाहा ।

(उक्त मन्त्र को एकान्त में प्रतिदिन 108 बार धूप के साथ, शुद्ध भावपूर्वक जपने से अधिक लाभप्रद होता हैं।)

ऐश्वर्यदायक मंत्र :-

ॐ ह्रीम् असिआउसा नमः स्वाहा ।

(उक्त मन्त्र को सूर्योदय के समय पूर्व दिशा में मुख करके प्रतिदिन 108 बार जप करने से शीघ्र लाभप्राप्त होता हैं।)

कल्याणकारी मंत्र:-

ॐ असिआ उसा नमः।

(उक्त मंत्र को पूर्वाभिमुख बेठ कर 1,25,000 जप करने से शीघ्र फलदायी होता हैं व शांति प्राप्त होती हैं। साधक के भय, कलेश, दुःख दारिद्र दूर होते हैं।

सर्वसिद्धिदायक मंत्र :-

ॐ ह्रीं क्लीं श्री अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः ।

(उक्त मन्त्र के प्रतिदिन 108 बार जप से साधक को समस्त कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती हैं।)

मनोवांछित कार्यसिद्धि मंत्र:-

ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं सिध्धाणं सूरीणं उवजझायाणं साहूणं मम ऋद्धि वृद्धि समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

(उक्त मंत्र को प्रातः काल मूंगे की माला से धुप देकर 3200 जप करने से सर्व कामनाएं पूर्ण होती हैं।)

सर्वकामना पूरण अर्हं मंत्र:-

ॐ ह्रीं अर्हं नमः।

(उक्त मंत्र को किसी शुभ दिन या मूहूर्त पर पूर्वाभिमुख बेठ कर यथाशक्ति जप करें। 12,500 जप पूर्ण होने पर मंत्र सिद्ध होता हैं। साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होने लगती हैं।)

सर्वकामना पूरण मंत्र:-

ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह असिआ उसा नमः।

(उक्त मन्त्र की प्रतिदिन 1 माला जप करने से कल्पवृक्ष के समान सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

सर्व संपत्तिदायक त्रिभुवन स्वामीनी विद्या मंत्र:-

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं असिआ उसा चुलु चुलु हुलु हुलु कुलु कुलु मुलु मुलु इच्छियंइ मे कुरु कुरु स्वाहा।

(किसी पवित्र स्थान पर साधक अपने सम्मुख पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति/फोटो स्थापित करके धूप-दीप करे।

चमेली के 24,000 फूल लेकर, हर एक फूल पर एक मंत्र का जप करते हुवे फूल को भगवान को अर्पण करते जाये। जप पूरे होने पर मंत्र सिद्ध हो जाता हैं। फिर उक्त मंत्र की प्रतिदिन एक माला जप करे। जप से साधक को धन, वैभव, संतति, संपत्ति, पारिवारीक सुख इत्यादि की प्राप्ति होती हैं।

विवाद विजय मंत्र:-

ॐ हं स ॐ ह्रीं अर्हं ऐं श्रीं असिआ उसा नमः।

(यदि किसी से अनावश्यक वाद-विवाद हो जाये तो उसमे जीत हेतु उक्त मंत्र को 21 बार जपने के पश्चयात वाद-विवाद करने पर जीत होती हैं।)

कलेश नाशक मंत्र:-

ॐ अर्हं आसिआ उसा नमः।

(उक्त मन्त्र के सवालाख जप करने से चमत्कारी परिणाम प्राप्त होते हैं।)

मनोवांछित कार्यसिद्धि मंत्र:-

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआ उसा स्वाहा।

(उक्त मन्त्र के सवालाख जप पूर्ण होने के पश्चयात प्रतिदिन एक माला जप करने से मनोरथ पूर्ण होते हैं।)

सर्वग्रह शान्ति मंत्र :-

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्व-शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

(उक्त मन्त्र को सूर्योदय के समय जप करने से शीघ्र शुभ फलो की प्राप्ति होती हैं।)

शान्तिकारक मंत्र :-

1. ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक श्री शान्तिनाथाय नमः ।
2. ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत परमसिद्धेभ्यो नमः ।

घंटाकर्ण मंत्र :-

ॐ ह्रीं घंटाकर्णो महावीर, सर्वव्याधि-विनाशकः ।
विस्फोटकभयं प्राप्ते, रक्ष रक्ष महाबलः ।1।
यत्र त्वं तिष्ठसे देव, लिखितोऽक्षर-पंक्तिभिः ।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति, वात-पित्त-कफोद्भवाः ।2।
तत्र राजभयं नास्ति, यन्ति कर्णे जपात्क्षयम् ।
शाकिनी भूत वेताला, राक्षसाः प्रभवन्ति न ।3।
नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण दंश्यते ।
अग्निचौरभयं नास्ति, ॐ श्रीं घंटाकर्ण !
नमोस्तु ते ! ॐ नर वीर ! ठः ठः ठः स्वाहा ।।

(घंटाकर्ण महावीर का उक्त मंत्र कलियु में तत्काल प्रभाव देने में समर्थ एवं चमत्कारी हैं इस मन्त्र का नियमित 21 बार जप करने से राज-भय, चोर-भय, अग्नि और सर्प - भय, सब प्रकार की भूत-प्रेत-बाधा दूर होतें हैं साधक की सर्व विपत्ति का स्वतः ही निवारण होने लगता हैं।)

सर्वरक्षा मंत्र :-

नवकार मंत्र के साथ अंत में **ॐ ह्रीं ह्रूं फट्** जोडकर जप करने से यह मंत्र सर्व से आनंददायक हैं और साधन की सभी उपद्रवो से रक्षा होती हैं।

लक्ष्मी प्राप्ति एवं मनोकामनापूर्ण करने का मंत्र :-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री अ सि आ उ सा नमः ।

(उक्त मंत्र को प्रातःकाल 108 बार जप ने से धन प्राप्ति होती हैं।)

लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र :-

ॐ ह्रीं हैं अर्हं नमो अरिहंताणं ह्रीं नमः।

(किसी शुभ दिन या मूहूर्त पर जप शुरु करें। आसन, माला, वस्त्र पीले रखे। 1,25,000 जप करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। फिर यथा शक्ति रोज 1 माला जप करें।)

नवग्रह शान्ति हेतु मंत्र :-

सूर्य के लिए : **ॐ णमो सिद्धाणं ।** (10 हजार)
चन्द्र के लिए: **ॐ णमो अरिहंताण ।** (10 हजार)
मंगल के लिए: **ॐ णमो सिद्धाणं ।** (10 हजार)
बुध के लिए: **ॐ णमो उवज्झायाण ।** (10 हजार)
(गुरु) वृहस्पति के लिए : **ॐ णमो आइरियाणं।** (10 हजार)
शुक्र के लिए: **ॐ णमो अरिहंताणं ।** (10 हजार)

शनि के लिए: ॐ णमो लोए सव्व साहूणं । (10 हजार)

केतु के लिए : ॐ णमो सिद्धाणं । (10 हजार)

राहू के लिए : ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाण ॐ णमो लोए सव्व साहूणं, (10 हजार)

महामृत्युंजय मन्त्र :-

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं । ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं, मम सर्व -ग्रहारिष्टान् निवारय निवारय अपमृत्युं घातय घातय सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

(उक्त मन्त्र को विधि-विधान से धूप-दीप जलाकर पूर्ण निष्ठा पूर्वक इस मंत्र का स्वयं जाप कर सकते हैं या अन्य द्वारा करवा सकते हैं। यदि अन्य व्यक्ति जाप करे तो 'मम' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम जोड़ लें जिसके लिए जाप किया जारहा है।) उक्त मंत्र का सवा लाख जाप करने से ग्रह-बाधा दूर हो जाती है । जाप के अनंतर दशांश आहुति देकर हवन करना चाहिए।

***

जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकारों के जीवन का संक्षिप्त विवरण

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

क्र	तीर्थंकार	जन्म स्थान	जन्म नक्षत्र	माता का नाम	पिता का नाम	वैराग्य वृक्ष	प्रतिक चिह्न
१	ऋषभदेवजी	अयोध्या	उत्तराषाढ़ा	मरूदेवी	नाभिराजा	वट वृक्ष	बैल
२	अजितनाथजी	अयोध्या	रोहिणी	विजया	जितशत्रु	सर्पपर्ण वृक्ष	हाथी
३	सम्भवनाथजी	श्रावस्ती	पूर्वाषाढ़ा	सेना	जितारी	शाल वृक्ष	घोड़ा
४	अभिनन्दनजी	अयोध्या	पुनर्वसु	सिद्धार्था	संवर	देवदार वृक्ष	बन्दर
५	सुमतिनाथजी	अयोध्या	मघा	सुमंगला	मेधप्रय	प्रियंगु वृक्ष	चकवा
६	पद्मप्रभुजी	कौशाम्बीपुरी	चित्रा	सुसीमा	धरण	प्रियंगु वृक्ष	कमल
७	सुपार्श्वनाथजी	काशीनगरी	विशाखा	पृथ्वी	सुप्रतिष्ठ	शिरीष वृक्ष	साथिया
८	चन्द्रप्रभुजी	चंद्रपुरी	अनुराधा	लक्ष्मण	महासेन	नाग वृक्ष	चन्द्रमा
९	पुष्पदन्तजी	काकन्दी	मूल	रामा	सुग्रीव	साल वृक्ष	मगर
१०	शीतलनाथजी	भद्रिकापुरी	पूर्वाषाढ़ा	सुनन्दा	दृढ़रथ	प्लक्ष वृक्ष	कल्पवृक्ष
११	श्रेयान्सनाथजी	सिंहपुरी	वण	विष्णु	विष्णुराज	तेंदुका वृक्ष	गेंडा
१२	वासुपुज्यजी	चम्पापुरी	शतभिषा	जपा	वासुपुज्य	पाटला वृक्ष	भैंसा
१३	विमलनाथजी	काम्पिल्य	उत्तराभाद्रपद	शमी	कृतवर्मा	जम्बू वृक्ष	शूकर
१४	अनन्तनाथजी	विनीता	रेवती	सूर्वशया	सिंहसेन	पीपल वृक्ष	सेही
१५	धर्मनाथजी	रत्नपुरी	पुष्य	सुव्रता	भानुराजा	दधिपर्ण वृक्ष	वज्रदण्ड
१६	शांतिनाथजी	हस्तिनापुर	भरणी	ऐराणी	विश्वसेन	नन्द वृक्ष	हिरण
१७	कुन्थुनाथजी	हस्तिनापुर	कृत्तिका	श्रीदेवी	सूर्य	तिलक वृक्ष	बकरा
१८	अरहनाथजी	हस्तिनापुर	रोहिणी	मिया	सुदर्शन	आम्र वृक्ष	मछली
१९	मल्लिनाथजी	मिथिला	अश्विनी	रक्षिता	कुम्प	कुम्पअशोक वृक्ष	कलश
२०	मुनिसुव्रतनाथजी	कुशाक्रनगर	श्रवण	पद्मावती	सुमित्र	चम्पक वृक्ष	कछुवा
२१	नमिनाथजी	मिथिला	अश्विनी	वप्रा	विजय	वकुल वृक्ष	नीलकमल
२२	नेमिनाथजी	शोरिपुर	चित्रा	शिवा	समुद्रविजय	मेषश्रृंग वृक्ष	शंख
२३	पार्श्र्वनाथजी	वाराणसी	विशाखा	वामादेवी	अश्वसेन	घव वृक्ष	सर्प
२४	महावीरजी	कुंडलपुर	उत्तराफाल्गुनी	त्रिशाला (प्रियकारिणी)	सिद्धार्थ	साल वृक्ष	सिंह

श्री मंगलाष्टक स्तोत्र (जैन)

अर्हन्तो भगवत इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धीश्वरा,
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्तसुपाठकाः, मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नः मंगलम्॥1॥
श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः
स्तुत्या योगीजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु नः मंगलम्॥2॥
सम्यग्दर्शन-बोध-व्रत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति श्रीनगराधिनाथ - जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्म सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं, चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु नः मंगलम्॥3॥
नाभेयादिजिनाः प्रशस्त-वदनाः ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तराविंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टि-पुरुषाः कुर्वन्तु नः मंगलम्॥4॥
ये सर्वौषध-ऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टाँग-महानिमित्तकुशलाः येऽष्टाविधाश्चारणाः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धिश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु नः मंगलम्॥5॥
ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरग्रहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बूशाल्मलि-चैत्य-शखिषु तथा वक्षार-रुप्याद्रिषु।
इक्ष्वाकार-गिरौ च कुण्डलादि द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिन-ग्रहाः कुर्वन्तु नः मंगलम्॥6॥
कैलाशे वृषभस्य निर्व्रतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसुज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतः,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु नः मंगलम्॥7॥
यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर-प्रवेश-महिमा सम्पदितः स्वर्गिभिः
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु नः मंगलम्॥8॥
सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवाः यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु नः मंगलम्॥9॥
इत्थं श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-सम्पत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये श्रण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः धर्मार्थ-कामाविन्ताः,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मीरपि ॥10॥

अथ नवग्रह शांति स्तोत्र (जैन)

जगद्गुरुं नमस्कृत्यं, श्रुत्वा सद्गुरु-भाषितम् ।
ग्रहशान्तिं प्रवच्यामि, लोकोनां सुखहेतवे ।।१।।
जिनेन्द्राः खेचरा ज्ञेयाः, पूजनीया विधिः क्रमात् ।
पुष्पै विलेपनै र्धूपै, नैवेद्यैस्तुष्टि हेतवे ।।२।।
पद्मप्रभस्य मार्तंड-श्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च ।
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधश्चाष्टजिनेशिनाम्।।३।।
विमलानन्त धर्मेश्, शान्तिः कुन्थ्वरह् नमि।
वर्धमानजिनेन्द्राणां, पादपद्मम् बुधो नमेत् ।।४।।
ऋषभाजितसुपार्श्वा-साभिनन्दनशीतलौ ।
सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसेषु बृहस्पतिः ।।५।।
सुविधेः कथितः शुक्रे, सुव्रतश्च शनैश्चरे ।
नेमिनाथो भवेद्राहोः केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ।।६।।
जन्मलग्नं च राशिं च, यदि पीड़यन्ति खेचराः ।
तदा संपूजयेद् धीमान्, खेचरान सह तान् तिनान् ।।७।।
आदित्य सोम मंगल, बुध गुरु शुक्रे शनिः।
राहुकेतु मेरवाग्रे या, जिनपूजाविधायकः॥८॥
जिनान् नमोग्नत्यि हि, ग्रहाणां तुष्टिहेतवे।
नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ।।९।।
भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी पंचमः श्रुतकेवली ।
विद्याप्रसादः, पूर्णं, ग्रहशान्ति-विधि-कृता ।।१०।।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, शुचिर्भूत्वा समाहितः।
विपत्तितो भवेच्छांति क्षेमं तस्य पदे पदे॥११॥

॥ महावीराष्टक-स्तोत्रम् ॥

शिखरिणी छंद

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचित:
समं भान्ति ध्रौव्य व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिता:।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन परो भानुरिव यो
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु में॥1॥

अताम्रं यच्चक्षु: कमल-युगलं स्पन्द-रहितं
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥2॥

नमन्नाकेंद्राली-मुकुट-मणि-भा जाल जटिलं
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्?।
भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥3॥

यदर्च्चा-भावेन प्रमुदित-मना दर्दुर इह
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्ध: सुख-निधि:।
लभन्ते सद्भक्ता: शिव-सुख-समाजं किमुतदा
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥4॥

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत-तनुर्ज्ञान-निवहो
विचित्रात्माप्येको नृपति-वर-सिद्धार्थ-तनय:।
अजन्मापि श्रीमान्? विगत-भव-रागोद्भुत-गति?
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥5॥

यदीया वाग्गंगा विविध-नय-कल्लोल-विमला
बृहज्ज्ञानाभ्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुध-जन-मरालै परिचिता
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥6॥

अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवन-जयी काम-सुभट:
कुमारावस्थायामपि निज-बलाद्येन विजित:
स्फुरन्नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिन:
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥7॥

महामोहातक-प्रशमन-पराकस्मिक-भिषक?
निरापेक्षो बंधु विदित-महिमा मंगलकर:।
शरण्य: साधूनां भव-भयभृतामुत्तमगुणो
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥8॥

महावीराष्टकं स्तोत्रं भक्त्या भागेन्दु ना कतम।
य: यठेच्छ्रणुयाच्चापि स याति परमां गतिम॥9॥

॥ महावीर चालीसा ॥

दोहा

सिद्ध समूह नमों सदा,
अरु सुमरू अरहन्त ।
निर आकुल निर्वांच्छ हो,
गए लोक के अंत ॥
मंगलमय मंगल करन,
वर्धमान महावीर ।
तुम चिंतत चिंता मिटे,
हरो सकल भव पीर ॥

चौपाई

जय महावीर दया के सागर,
जय श्री सन्मति ज्ञान उजागर ।
शांत छवि मूरत अति प्यारी,
वेष दिगम्बर के तुम धारी ।
कोटि भानु से अति छबि छाजे,
देखत तिमिर पाप सब भाजे ।
महाबली अरि कर्म विदारे,
जोधा मोह सुभट से मारे ।
काम क्रोध तजि छोड़ी माया,
क्षण में मान कषाय भगाया।
रागी नहीं नहीं तू द्वेषी,
वीतराग तू हित उपदेशी ।
प्रभु तुम नाम जगत में सांचा,
सुमरत भागत भूत पिशाचा।
राक्षस यक्ष डाकिनी भागे,
तुम चिंतत भय कोई न लागे ।
महा शूल को जो तन धारे,
होवे रोग असाध्य निवारे ।
व्याल कराल होय फणधारी,
विष को उगल क्रोध कर भारी ।
महाकाल सम करै डसन्ता,
निर्विष करो आप भगवन्ता ।
महामत्त गज मद को झारै,
भगै तुरत जब तुझे पुकारै ।
फार डाढ़ सिंहादिक आवै,
ताको हे प्रभु तुही भगावै ।
होकर प्रबल अग्नि जो जारै,
तुम प्रताप शीतलता धारै ।
शस्त्र धार अरि युद्ध लड़न्ता,
तुम प्रसाद हो विजय तुरन्ता ।
पवन प्रचण्ड चलै झकझोरा, प्र
भु तुम हरौ होय भय चोरा ।
झार खण्ड गिरि अटवी मांहीं,
तुम बिनशरण तहां कोउ नांहीं ।
वज्रपात करि घन गरजावै,
मूसलधार होय तड़कावै ।
होय अपुत्र दरिद्र संताना,
सुमिरत होत कुबेर समाना ।
बंदीगृह में बँधी जंजीरा,
कठ सुई अनि में सकल शरीरा ।
राजदण्ड करि शूल धरावै,
ताहि सिंहासन तुही बिठावै ।
न्यायाधीश राजदरबारी,
विजय करे होय कृपा तुम्हारी ।
जहर हलाहल दुष्ट पियन्ता,
अमृत सम प्रभु करो तुरन्ता ।
चढ़े जहर, जीवादि डसन्ता,
निर्विष क्षण में आप करन्ता ।
एक सहस वसु तुमरे नामा,
जन्म लियो कुण्डलपुर धामा ।
सिद्धारथ नृप सुत कहलाए,
त्रिशला मात उदर प्रगटाए ।
तुम जनमत भयो लोक अशोका,
अनहद शब्दभयो तिहुँलोका ।
इन्द्र ने नेत्र सहस्र करि देखा,
गिरी सुमेर कियो अभिषेखा ।
कामादिक तृष्णा संसारी,
तज तुम भए बाल ब्रह्मचारी ।
अथिर जान जग अनित बिसारी,
बालपने प्रभु दीक्षा धारी ।
शांत भाव धर कर्म विनाशे,
तुरतहि केवल ज्ञान प्रकाशे ।
जड़-चेतन त्रय जग के सारे,
हस्त रेखवत्? सम तू निहारे ।
लोक-अलोक द्रव्य षट जाना,
द्वादशांग का रहस्य बखाना ।
पशु यज्ञों का मिटा कलेशा,
दया धर्म देकर उपदेशा ।
अनेकांत अपरिग्रह द्वारा,
सर्वप्राणि समभाव प्रचारा ।
पंचम काल विषै जिनराई,
चांदनपुर प्रभुता प्रगटाई ।
क्षण में तोपनि बाढि-हटाई,
भक्तन के तुम सदा सहाई ।
मूरख नर नहिं अक्षर ज्ञाता,
सुमरत पंडित होय विख्याता ।

सोरठा

करे पाठ चालीस दिन
नित चालीसहिं बार ।
खेवै धूप सुगन्ध पढ़,
श्री महावीर अगार ॥
जनम दरिद्री होय अरु
जिसके नहिं सन्तान ।
नाम वंश जग में चले
होय कुबेर समान ॥

जब महावीर ने एक ज्योतिषी को कहां तुम्हारी विद्या सच्ची है?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

भगवान महावीर के समय में पुष्य नाम का एक बड़ा सुप्रसिद्ध ज्योतिषी था। उसका ज्योतिष ज्ञान इतना सटीक रहता था कि पुष्यको अपने ज्योतिष ज्ञान पर पूरा विश्वास था। दूरदेश से लोग उससे ज्योतिष विद्या के विषय में पूछने आते थे।

पुष्य ज्योतिषी जो कह देते, वस्तुतः सच्चा पड़ जाता। ज्योतिषी विद्या में वहं इतने तेज थे की लोगों के पदचिह्न की रेखाएँ देखकर भी वह लोगों की स्थिति बता सकते थे। ऐसे बढ़िया कुशाग्र ज्योतिषी थे।

उन दिनों में वर्धमान (भगवान महावीर) घर दिन में तो भ्रमभ करते और जैसे संध्या होती, अंधेरा होते ही एकान्त खोजकर बैठ जाते। थोड़ी देर आराम कर लेते फिर बैठकर चुपचाप, ध्यान में स्थिर हो जाते।

पुष्य ज्योतिषी ने देखा की रेत पर किसी के पदचिह्न हैं। पदचिह्नों को ध्यान से परखा ओर ज्योतिष विद्या से जाना की ये तो चक्रवर्ती के पदचिह्न हैं। चक्रवर्ती यदी यहाँ से गुजरे है तो उनके साथ में मंत्री होने चाहिए, सचिव होने चाहिए, अंगरक्षक होने चाहिए, सिपाही होने चाहिए। पदचिह्न चक्रवर्ती के और साथ में कोई और पदचिह्न नहीं यह सम्भव नहीं हो सकता।

परंतु पुष्य ज्योतिषी पहूंचा हुवा ज्योतिष था उसको अपनी ज्योतिष विद्या पर पूरा भरोसा था। उसकी नींद हराम हो गयी। चाँदनी रात थी इस लिये जहाँ तक चल सका पदचिह्न देखता हुआ चला, फिर कहीं रुक कर आराम कर लिये। फिर सुबह-सुबह जल्दी चलना चालू किया। उसेतो खोजना था, पदचिह्न कहाँ जा रहे हैं। देखा कि बिना कोई साधन के, एक व्यक्ति शांत भाव में बैठा हुआ है। पदचिह्न वहीं पूरे होते हैं। उसके इर्दगिर्द देखा, चेहरे पर देखता रहा। इतने में महावीर की आँख खुली। अबतक ज्योतिषी चिन्ता में डूबता जा रहा था।

पुष्य ज्योतिषी ने महावीर से पूछा "ये पदचिह्न तो आपके मालूम होते हैं?"

महावीर बोलेः "हाँ।"

पुष्य कहने लगे "मुझे अपने ज्योतिष पर भरोसा हैं। आज तक मेरा ज्योतिष झूठा नहीं पड़ा। पदचिह्नों से लगता है कि आप चक्रवर्ती सम्राट हो। लेकिन आपको बेहाल देखकर दया आती है कि आप भिक्षुक हो। मेरी विद्या आज झूठी कैसे पड़ी?"

महावीर मुस्कराकर बोलेः "तुम्हारी विद्या झूठी नहीं है, सच्ची है।

एक बात बताओं चक्रवर्ती को क्या होता है?"

पुष्य बोलेः "उसके पास ध्वजा होती है, कोष होता है, उसके पास सैन्य होता है। आप तो बेहाल हो"

महावीर फिर मुस्कराकर बोलेः "धर्म की ध्वजा मेरे पास है। कपड़े की ध्वजा ही सच्ची ध्वजा नहीं है। सच्ची ध्वजा तो धर्म की ध्वजा है। मेरे पास सदविचाररूपी सैन्य है जो कुविचारों को मार भगाता है। क्षमा मेरी रानी है। चक्रवर्ती के आगे चक्र होता है तो समता मेरा चक्र है, ज्ञान का प्रकाश मेरा चक्र है।

ज्योतिषी! क्या यह जरूरी है कि बाहर का चक्र ही चक्रवर्ती के पास हो? बाहर की ही ध्वजा हो? धर्म की भी ध्वजा हो सकती है। धर्म का भी कोष हो सकता है। ध्यान और पुण्यों का भी कोई खजाना होता है।

राजा वह जिसके पास भूमि हो, सत्ता हो। सुबह जो सोचे तो शाम को परिणाम आ जाय। ज्ञानराज्य में मेरी निष्ठा है। जो भी मेरे मार्ग में प्रवेश करता है, सुबह को ही चले तो शाम को शांति का एहसास हो जाता है, थोड़ा बहुत परिणाम आ जाता है।

यह मेरी ज्ञान की भूमि है।" जो ज्योतिषी हारा हुआ निराश होकर जा रहा था वह सन्तुष्ट होकर, समाधान पाकर प्रणाम करता हुआ बोलाः "हाँ महाराज! इस रहस्य का मुझे आज पता चला। मेरी विद्या भी सच्ची और आपका मार्ग भी सच्चा है।"

गौतम केवली महाविद्या (प्रश्नावली)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

111	112	113	121	122	123	131	132	133
211	212	213	221	222	223	231	232	233
311	312	313	321	322	323	331	332	333

उपर दर्शाएं गये अंक शकुनावली प्रश्नावली से उत्तर प्राप्त करने से पूर्व शुद्ध एवं पवित्र होकर अपने इष्ट देव का स्मरण करते हुवे उपर दर्शाएं गये अंक कोष्टको में से किसी एक कोष्टक पर अपनी अंगुली अथवा शलाका रखें। जिस कोष्टक पर आपने अंगुली अथवा शलाका रखी हैं उस कोष्टक में अंकित संख्या के अनुसार आपके अभीष्ट प्रश्न का हल नीचे क्रमशः अंको में दिया गया हैं।

111: आपने जो प्रश्न विचारा है वह सफल होगा। तुम्हारे खराब दिनों का नाश होकर अच्छे दिन आए हैं। मन की कामनाएँ पूर्ण होंगी। विविध प्रकार की चिंताएँ मन में रहती हैं, वे अब थोड़े दिनों में नाश हो जाएँगी। एक मित्र के धोखे को भोग रहे हो। धर्म कार्य की इच्छा है, परन्तु पापकर्म से विघ्न आता है। आमदनी से खर्च अधिक रहता है। कोई कार्य सिद्ध होने को आता है, तो शत्रु उसमें विघ्न डाल देते हैं। दान-पुण्य करो। जिससे मन की अभिलाषा पूर्ण होगी। विरोधी चाहे कितनी कोशिश करें, परन्तु तुम्हारी धारणा अवश्य फलीभूत होगी।

112: आपका अभीष्ट प्रश्न लाभदायक है। धन की प्राप्ति होगी। भाग्योदय के दिन अब नजदीक आ गए हैं। जिस कार्य को हाथ में लोगे, उसमें जय प्राप्त करोगे। प्रियजन का मिलाप होगा। धर्म के कार्य करते रहो, जिससे पुण्य की प्राप्ति होगी तथा सुख भी मिलेगा। मन चिन्तित रहता है। भाइयों से जुदाई होगी। मकान बनाने का इरादा करते हो वह पार पड़ेगा। जमीन से तुमको लाभ होगा। आमदनी से खर्च अधिक होता है। तीर्थों की यात्रा करने की अभिलाषा है, वह पूर्ण होगी। धार्मिक कार्य सम्पन्न होगा।

113: आपका अभीष्ट प्रश्न अच्छा है। तुम्हारे दिल को आराम मिलेगा। सुख-चैन प्राप्त करोगे। जो कार्य मन में सोचा है, उसमें विजय प्राप्त करोगे। प्रियजनों का मिलाप होगा। चिन्ता के दिन निकल चुके हैं तथा अब अच्छे दिन आए हैं। धर्म के प्रभाव से सुखी हुए हो तथा आगे भी सुख प्राप्त करोगे। कष्ट सहन करते हुए भी दूसरे का कार्य करते हो परन्तु अपने कार्य में सुस्ती रखते हो। बुद्धि तेज है, बिगड़े कार्य को भी सुधार लेते हो। भविष्य में लाभ मिलेगा।

121: आपका विचारा हुआ प्रश्न लाभदायक है। बहुत दिनों तक दुःख सहन करने से निराश हो गए हो, बुरे दिन निकल गए हैं और अब शुभ दिन आए हैं। मन की इच्छाएँ फलीभूत होंगी। जितनी लक्ष्मी गंवाई है उससे भी अधिक प्राप्त करोगे। जिस काम की चिन्ता करते हो वह चिन्ता मिट जायेगी, उसमें एक व्यक्ति विघ्न उपस्थित करने आयेगा, किन्तु अन्त में तुमको सफलता प्राप्त होगी। भाइयों तथा सम्बन्धियों का निभाव करते हो, जिससे तुम्हारी कीर्ति बढ़ी है। दिल के उदार हो, जहाँ जाते हो वहाँ सुख मिलता है।

122: आपने जो काम विचारा है, उसमें सफलता नहीं मिल पाएगी। आपने आज तक बहुतों का भला किया है। अशुभ कर्म के उदय से विघ्न उपस्थित होते हैं। जहाँ तक बन सके वहाँ तक धर्म करो। अपने इष्टदेव की यथाशक्ति आराधना तथा मन्त्र का जप करो, जिससे तकलीफ दूर होगी।

123: आपके अभीष्ट कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। इतने पापकर्म के थे तथा आपने महान संकट उठाये हैं। अब शुभ दिन आए हैं। बहुतों का भला किया, किन्तु उन्होनें उपकार न माना। धर्म के निमित्त का निकाला

हुआ पैसा घर में न रखो। तीर्थों की यात्रा करो, जिस स्थान पर दुःखी हुए हो, उस स्थान का त्याग करो, दूसरे स्थान में जाकर रहो। परदेश में लाभ होगा। तुम्हारा दिल चिन्ता में डूबा रहता है। अब शुभ कर्म का उदय हुआ है। विचारे हुए कार्य में सफलता एवं धन प्राप्त होगा।

131: जो बात आपने सोची है वह अवश्य सिद्ध होगी, जिसका नुकसान हुआ है वह दूर होकर भविष्य में लाभ होगा। धन मिलेगा। तुम्हारे हाथ से धर्म के कार्य होंगे। जिस मनुष्य से मुलाकात चाहते हो वह होगी। चिन्ता के दिन अब गए हैं। धातु, धन, सम्पत्ति और कुटुम्ब की वृद्धि होगी।

132: आज तक तुम्हारे बड़े-बड़े दुश्मन हुए अब उनका जोर नहीं चलेगा। मन में विचारे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त करोगे। इज्जत में वृद्धि होगी। तुम्हारे हाथों से धर्म के कार्य होंगे, मन वांछित सुख की प्राप्ति होगी। भाइयों का मिलाप होगा। दान-पुण्य के प्रभाव से सुखी होंगे।

133: इतने दिन संकट रहा। चिंतित कार्य अच्छी तरह से पार न पड़ा, अब अच्छे दिनों की शुरुआत हुई है, जो कार्य विचारा है वह फलीभूत होगा, किसी भी प्रकार का विघ्न नहीं आयेगा। इष्टदेव के प्रभाव से लक्ष्मी प्राप्त होगी, प्रियजन से अचानक लाभ होगा।

211: तुमने मन में जिस कार्य का विचार किया है, वह सफल नहीं होगा। इसके सिवाय कोई दूसरा काम करो। तीर्थों की यात्रा करो, जिससे पुण्य का लाभ हो। दुश्मन लोग तुमको बाधाएँ डालते हैं।

212: विचारा हुआ कार्य होगा। प्रेमिका से लाभ होगा। कुटुम्ब की वृद्धि होगी। बहुत मुद्दत से विचारा हुआ कार्य होगा। दुश्मन तुम्हारे विरुद्ध कोशिश करेंगे, किन्तु तुम्हारे सद्भाग्य के आगे उनका जोर नहीं चलेगा। तीर्थों की यात्रा करने की इच्छा है वह हो सकेगी। मकान बनाने का तथा जमीन खरीदने का तुम्हारा इरादा सफल होगा। तुमको जमीन से लाभ है। भाग्यबल से कार्य सिद्ध होंगे।

213: दुःख के दिन अब दूर हो गए हैं। सुख के दिन शुरु हुए हैं। बहुत दिनों से कष्ट उठा रहे हो, परदेश गए तो भी सुख की प्राप्ति न हुई, किन्तु अब सुख भोगने के दिन प्राप्त हुए हैं। आबरु बढ़ेगी, संतान का सुख होगा। इतने दिनों मित्रों तथा कुटुम्बी जनों की तरफ से दुःख सहन किया। जहाँ तक बना दूसरों का भला किया, परन्तु उन लोगों ने गुण नहीं माना। शत्रु लोग पग-पग पर तैयार रहते हैं, किन्तु उनका जोर नहीं चलता क्योंकि तुम्हारा भाग्य बलवान् है। पास में धन थोड़ा है, किन्तु इज्जत अच्छी है, इसलिये जितना प्राप्त करने का विचार करोगे उतना प्राप्त कर सकोगे। मित्र लोगों से जैसा चाहिए वैसा सुख नहीं है। इज्जत आबरु के लिये खर्च बहुत करते हो। तुम्हारा धर्म सुधरा हुआ है, इसलिए धर्म पर श्रद्धा रखो।

221: इतने दिन गए वे अच्छे गए, जो जो कार्य किए वे भी पार पड़ गए, किन्तु अब जो कार्य दिल में विचारा है वह पाप कर्म के उदय से पूर्ण नहीं होगा। मित्र लोग भी शत्रु हो जाएँगे। कुटुम्ब में अनबन रहेगी, भाई जुदा होंगे। जो काम दिल में विचारा है, उसका त्याग करना ही श्रेष्ठ है। धर्म पर श्रद्धा रखो, इष्टदेव की सेवा करो, दान-पुण्य के प्रभाव से सुख मिलेगा।

222: जो काम मन में विचारा है, उसको छोड़कर दूसरा काम करो। यदि इस विचारे हुए कार्य को करोगे तो संकट उत्पन्न होगा, नुकसान होगा, शत्रु लोग विघ्न उपस्थित करेंगे। इष्टदेव की सेवा करो, तीर्थों पर जाओ, जिससे दूसरे कार्य भी सुधरेंगे। दिल में विविध प्रकार की चिन्ताओं ने वास किया है, वह विचारे हुए कार्य को छोड़ देने से दूर होगी।

223: यह सवाल अच्छा है, सुख के दिन नजदीक आए हैं। व्यापार से धन प्राप्त होगा, ऐशो-आराम प्राप्त करोगे। पत्नी का सुख प्राप्त करोगे तथा संतान की वृद्धिहोगी, जो कार्य करोगे उसमें लाभ प्राप्त करोगे। ईमानदारी से काम करते हो तो अन्त में भला ही होगा। धर्म के प्रभाव से सुखी होंगे, इसलिये धर्म को भूलना मत, धर्म के कार्यों में सुस्ती रखना ठीक नहीं।

231: जिस कार्य के लिए मन में विचार किया है, वह कार्य तीन मास में होगा। अपनी स्त्री की तरफ से लाभ होगा। आज तक कुटुम्बीजनों की तरफ से सुख नही मिला, किन्तु भविष्य में मिलेगा। संतानों की वृद्धि

होगी। ससुराल के खर्च की चिन्ता है, सो मिट जाएगी। आबरु के लिए आमदनी से खर्च अधिक करना पड़ता है। तीर्थों की यात्रा करने का इरादा है, किन्तु विघ्न आता है। भविष्य में धर्म कार्य कर सकोगे। हृदय में जिस कार्य की चिन्ता है, वह धर्म के प्रभाव से दूर हो जाएगी, इसलिए धर्म पर श्रद्धा रखो, जिससे सफलता प्राप्त कर सकोगे।

232: जो काम विचारा है, उसे छोड़कर कोई दूसरा काम करो। विचारे हुए कार्य को करने में लाभ नहीं है, यदि करोगे तो तुमको तुम्हारा स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर जाना पड़ेगा, कुटुम्बीजनों का वियोग होगा। इसलिए उचित है कि इस कार्य को छोड़ दो। धर्म में होशियार रहना तथा अपनी शक्ति के अनुसार दान-पुण्य करना जिससे सुख हो।

233: थोड़े दिनों में धन मिलेगा। जो काम विचारा है, वह पूर्ण होगा। प्रियजनों से मिलाप होगा। जमीन, जागीर अथवा मकान से लाभ होगा। आबरु बढ़ेगी। धर्म कार्यों में खर्च करो। उसके प्रताप से सुख-चैन रहेगा। राज्यपक्ष से लाभ होगा। मन की धारणा पूर्ण होगी। स्त्री की तरफ से सुख है। एक समय अकस्मात् लाभ मिलेगा।

311: यह सवाल बहुत ही गरम है। जिस कार्य का विचार किया है, वह पूर्ण होगा। मुकदमा जीत जाओगे, व्यापार रोजगार में लाभ होगा। कीर्ति बढ़ेगी, राज्य की तरफ से लाभ होगा। धर्म के प्रभाव से सुख मिला है तथा भविष्य में भी मिलेगा। दूसरों के कार्य परिश्रम से पूरा करते हो, किन्तु अशुभ कर्म उदित होने से अपने कर्म में उदासीन रहते हो, विदेश यात्रा होगी और वहाँ लाभ होगा। धर्म पर श्रद्धा रखो जिससे संकट दूर हों। अपने हाथ से लक्ष्मी प्राप्त करोगे।

312: जो कार्य विचारा है उसे छोड़कर कोई दूसरा काम करो अन्यथा शत्रु लोग विघ्न डालेंगे, दौलत की खराबी होगी, घर के मनुष्यों तथा पशुओं पर संकट आएगा, इसलिए विचारे हुए कार्य को छोड़ देना ही उचित है। धर्म के प्रभाव से सब कार्य सफल होते हैं। निराश्रितों को आश्रय दो तथा देवाधिदेव का स्मरण करो जिससे सुखी होंगे।

313: यह प्रश्न अच्छा है। धन तथा स्त्री से सहयोग एवं सुख मिलेगा। संतान से सुख मिलेगा। संतान होगी, प्रियजन का मिलाप होगा। अमुक मुद्दत की धारी हुई धारणा सफल होगी। चिन्ता के दिन अब दूर हुए हैं। देव गुरु तथा धर्म की सेवा करो। दुश्मन लोग सताते हैं, किन्तु अब तुम्हारा प्रारब्ध बलवान् बना है जिससे इन लोगों का जोर नहीं चलेगा। जमीन से लाभ होगा। कीर्ति के लिए खर्च अधिक करना पड़ता है। मित्रों से लाभ होगा।

321: जमीन, मकान अथवा बाग-बगीचे से लाभ होगा। धन प्राप्त करोगे, स्नेही जन से मिलाप होगा। किसी भी मनुष्य के साथ मित्रता होगी और उसके द्वारा धनादि की प्राप्ति होगी। पुण्य के उदय से इच्छाएँ परीपूर्ण होगी। धर्म का आराधन करो। दुश्मन लोग पग-पग पर तैयार रहेंगे, किन्तु सन्मुख होने से उनका जोर नहीं चलेगा। अपनी शक्ति के अनुसार खर्च करो। मकान बनाने के मनोरथ फलीभूत होंगे। धन पैदा करते हो, किन्तु खर्च अधिक होने से इकट्ठा नहीं होता है, पिता से धन थोड़ा मिलेगा। स्त्री की तरफ से लाभ होगा। वृद्धावस्था में धर्म के कार्य बन सकते हैं।

322: जो कार्य आपने मन में विचारा है, उसमे शत्रु लोग विघ्न डालेंगे, परिणाम अच्छा नहीं। राज्य की तरफ से नाराजगी होगी यदि सुखी होना चाहते हो, तो विचारा हुआ कार्य छोड़कर दूसरा कार्य करो, तुम्हारे सहयोगी बदल गए हैं, उनका विश्वास मत करना। भजन-पूजन, व्रत-नियम में ध्यान दो।

323: जिस कार्य का मन में विचार किया है, उसमें लाभ होगा, इच्छा पूर्ण होगी, स्नेही का मिलाप होगा, जो जो चिन्ताएँ उपस्थित हुई हैं, वे सब दूर होंगी। धर्म के कार्य बन सकेंगे। बहुत दिनों से परदेश में दुःख प्राप्त किया है, किन्तु अब दुःख के दिन गए। तीर्थयात्रा होगी। अब देश में जाकर आनन्द प्राप्त करोगे। धर्म के कार्यों में लक्ष्य रखो, जिससे सब सुख प्राप्त करोगे।

331: तुम्हारे मन की चिन्ता मिटेगी। बीमारी की फरियाद दूर होगी। मन की धारणा पूर्ण होगी। थोड़े दिनों में ही धन की प्राप्ति होगी। स्नेही का मिलाप होगा। धर्म-कर्म में पैसा खर्च करो, जिससे परिणाम में

फायदा होगा। अच्छे दिन आए हैं, पापकर्म से इतने दिन दुःख प्राप्त किया है, परन्तु अब वे बीत गए हैं। 332: बुरे दिन गए अब अच्छे दिन आए हैं। जमीन तथा धन-दौलत में जो हानि हुई है, वह मिट जाएगी तथा भविष्य में लाभ होगा। परमेश्वर का ध्यान करो। हृदय शुद्ध है, जिससे मन की चिन्ता जल्दी दूर होगी। परदेश में रहे मनुष्य की चिन्ता है सो उसका मिलाप होगा। धर्म के प्रभाव से सुखी होंगे।

333: इतने दिन निर्धन अवस्था में व्यतीत किए, किन्तु अब धन प्राप्त होगा तथा मन की धारणा फलीभूत होगी। जीवनसाथी से सुख प्राप्त होगा, तीन महिने बाद अच्छे दिन आएँगे। इष्टदेव की आराधना करो। आमदनी से खर्च अधिक है, धन इकट्ठा किया नहीं, मित्र की तरफ से धोखा मिला है, दुश्मन लोग पीछे से निन्दा करते हैं, किन्तु सामने आकर बोल नहीं सकते। जमीन से लाभ होगा। परमेश्वर का जप करो ।

गुरु पुष्यामृत योग 1 अगस्त 2019

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हर दिन बदलने वाले नक्षत्र मे पुष्य नक्षत्र भी एक नक्षत्र है, एवं अन्दाज से हर २७वें दिन पुष्य नक्षत्र होता है। यह जिस वार को आता है, इसका नाम भी उसी प्रकार रखा जाता है।

इसी प्रकार गुरुवार को पुष्य नक्षत्र होने से गुरु पुष्य योग कहाजात है।

गुरु पुष्य योग के बारे में विद्वान ज्योतिषियो का कहना हैं कि पुष्य नक्षत्र में धन प्राप्ति, चांदी, सोना, नये वाहन, बही-खातों की खरीदारी एवं गुरु ग्रह से संबंधित वस्तुए अत्याधिक लाभ प्रदान करती है।

हर व्यक्ति अपने शुभ कार्यो में सफलता हेतु इस शुभ महूर्त का चयन कर सबसे उपयुक्त लाभ प्राप्त कर सकता है और अशुभता से बच सकता है।

अपने जीवन में दिन-प्रतिदिन सफलता की प्राप्ति के लिए इस अद्भुत महूर्त वाले दिन किसी भी नये कार्य को जेसे नौकरी, व्यापार या परिवार से जुड़े कार्य, बंध हो चुके कार्य शुरू करने के लिये एवं जीवन के कोई भी अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र में कार्य करने से 99.9% निश्चित सफलता की संभावना होति है।

प्रात: 05:42 से दोपहर 12:11 तक

- गुरुपुष्यामृत योग बहोत कम बनता है जब गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र होता है । तब बनता है गुरु पुष्य योग।
- गुरुवार के दिन शुभ कार्यो एवं आध्यात्म से संबंधित कार्य करना अति शुभ एवं मंगलमय होता है।
- पुष्य नक्षत्र भी सभी प्रकार के शुभ कार्यो एवं आध्यात्म से जुडे कार्यो के लिये अति शुभ माना गया है।
- जब गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र होता तब यह योग बन जाता है अद्भुत एवं अत्यंत शुभ फल प्रद अमृत योग।
- एक साधक के लिए बेहद फायदेमंद होता हैं **गुरुपुष्यामृत योग**।
- इस दिन विद्वान एवं गुढ रहस्यो के जानकार मां महालक्ष्मी की साधना करने की सलाह देते है।
- यह योग विशेष साधना के लिये अति शुभ एवं शीघ्र परीणाम देने वाला होता है।
- मां महालक्ष्मी का आह्वान करके अत्यंत सरलता से उनकी कृपा द्रष्टि से समृद्धि और शांति प्राप्त कि जासकती है।

पुष्य नक्षत्र का महत्व क्यों हैं?

शास्त्रो में पुष्य नक्षत्र को नक्षत्रों का राजा बताया गया हैं। जिसका स्वामी शनि ग्रह हैं। शनि को ज्योतिष में स्थायित्व का प्रतीक माना गया हैं। अतः पुष्य नक्षत्र सबसे शुभ नक्षत्रो में से एक हैं।

यदि रविवार को पुष्य नक्षत्र हो तो रवि पुष्य योग और गुरुवार को हो तो और गुरु पुष्य योग कहलाता हैं।

शास्त्रों में पुष्य योग को 100 दोषों को दूर करने वाला, शुभ कार्य उद्देश्यो में निश्चित सफलता प्रदान करने वाला एवं बहुमूल्य वस्तुओं कि खरीदारी हेतु सबसे श्रेष्ठ एवं शुभ फलदायी योग माना गया है।

गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र के संयोग से सर्वार्थ अमृतसिद्धि योग बनता है। शनिवार के दिन पुष्य नक्षत्र के संयोग से सर्वार्थसिद्धि योग होता है। पुष्य नक्षत्र को ब्रह्माजी का श्राप मिला था। इसलिए शास्त्रोक्त विधान से पुष्य नक्षत्र में विवाह वर्जित माना गया है।

कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दु:खदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

>> **Shop Online | Order Now**

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।
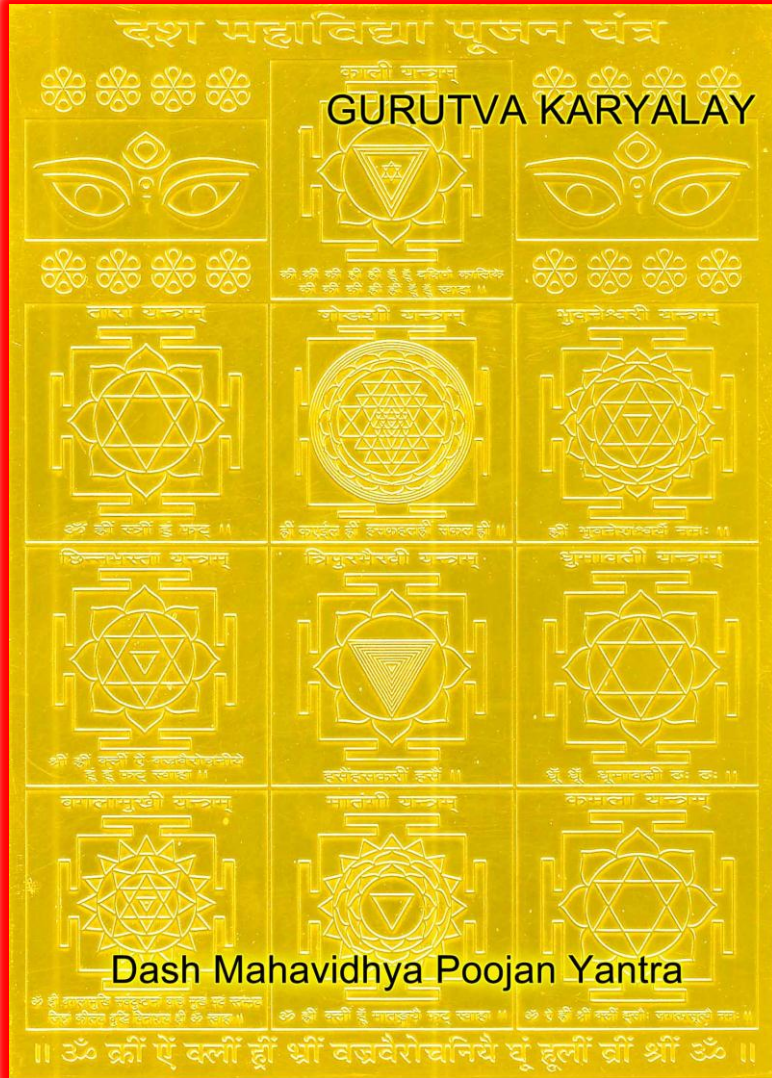
दस महाविद्या पूजन यंत्र

दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> **Shop Online** | **Order Now**

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> Shop Online | Order Now

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र

मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1” X 1”	550	1” X 1”	370	1” X 1”	325
2” X 2”	910	2” X 2”	640	2” X 2”	550
3” X 3”	1450	3” X 3”	1050	3” X 3”	910
4” X 4”	2350	4” X 4”	1450	4” X 4”	1225
6” X 6”	3700	6” X 6”	2800	6” X 6”	2350
9” X 9”	9100	9” X 9”	4600	9” X 9”	4150
12” X12”	12700	12” X12”	9100	12” X12”	9100

अगस्त 2019 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	गुरु	श्रावण	कृष्ण	अमावस्या -प्रतिपदा	08:41 -29:14	पुष्य	12:11	सिद्ध	15:14	नाग	08:41	कर्क	-
2	शुक्र	श्रावण	शुक्ल	द्वितीया	25:41	आश्लेषा	09:28	व्यतिपात	11:12	बालव	15:27	कर्क	09:24
3	शनि	श्रावण	शुक्ल	तृतीया	22:13	मघा	06:43	वरियान	07:08	तैतिल	11:56	सिंह	-
4	रवि	श्रावण	शुक्ल	चतुर्थी	18:59	उत्तराफाल्गुनी	25:43	शिव	23:27	वणिज	08:34	सिंह	09:28
5	सोम	श्रावण	शुक्ल	पंचमी	16:07	हस्त	23:47	सिद्ध	20:04	बालव	16:07	कन्या	-
6	मंगल	श्रावण	शुक्ल	षष्ठी	13:44	चित्रा	22:22	साध्य	17:06	तैतिल	13:44	कन्या	11:01
7	बुध	श्रावण	शुक्ल	सप्तमी	11:56	स्वाती	21:35	शुभ	14:39	वणिज	11:56	तुला	-
8	गुरु	श्रावण	शुक्ल	अष्टमी	10:46	विशाखा	21:27	शुक्ल	12:44	बव	10:46	तुला	15:26
9	शुक्र	श्रावण	शुक्ल	नवमी	10:16	अनुराधा	21:58	ब्रह्म	11:21	कौलव	10:16	वृश्चिक	-
10	शनि	श्रावण	शुक्ल	दशमी	10:23	जेष्ठा	23:05	इन्द्र	10:30	गर	10:23	वृश्चिक	23:06
11	रवि	श्रावण	शुक्ल	एकादशी	11:05	मूल	24:44	वैधृति	10:07	विष्टि	11:05	धनु	-
12	सोम	श्रावण	शुक्ल	द्वादशी	12:17	पूर्वाषाढ़	26:51	विषकुंभ	10:08	बालव	12:17	धनु	-
13	मंगल	श्रावण	शुक्ल	त्रयोदशी	13:54	उत्तराषाढ़	29:18	प्रीति	10:30	तैतिल	13:54	धनु	09:27
14	बुध	श्रावण	शुक्ल	चतुर्दशी	15:49	श्रवण	....	आयुष्मान	11:08	वणिज	15:49	मकर	-
15	गुरु	श्रावण	शुक्ल	पूर्णिमा	17:59	श्रवण	08:01	सौभाग्य	11:57	बव	17:59	मकर	21:28

16	शुक्र	भाद्रपद	कृष्ण	प्रतिपदा	20:17	धनिष्ठा	10:55	शोभन	12:55	बालव	07:07	कुंभ	-
17	शनि	भाद्रपद	कृष्ण	द्वितीया	22:40	शतभिषा	13:56	अतिगंड	13:56	तैतिल	09:28	कुंभ	-
18	रवि	भाद्रपद	कृष्ण	तृतीया	25:1	पूर्वाभाद्रपद	16:54	सुकर्मा	14:57	वणिज	11:51	कुंभ	10:10
19	सोम	भाद्रपद	कृष्ण	चतुर्थी	27:15	उत्तराभाद्रपद	19:48	धृति	15:54	बव	14:10	मीन	-
20	मंगल	भाद्रपद	कृष्ण	पंचमी	29:13	रेवति	22:28	शूल	16:40	कौलव	16:17	मीन	15:42
21	बुध	भाद्रपद	कृष्ण	षष्ठी	....	अश्विनी	24:46	गंड	17:10	गर	18:04	मेष	-
22	गुरु	भाद्रपद	कृष्ण	षष्ठी	06:48	भरणी	26:35	वृद्धि	17:17	वणिज	06:48	मेष	-
23	शुक्र	भाद्रपद	कृष्ण	सप्तमी	07:51	कृतिका	27:47	ध्रुव	16:56	बव	07:51	मेष	08:58
24	शनि	भाद्रपद	कृष्ण	अष्टमी	08:14	रोहिणि	28:15	व्याघात	16:01	कौलव	08:14	वृष	-
25	रवि	भाद्रपद	कृष्ण	नवमी	07:54	मृगशिरा	27:58	हर्षण	14:30	गर	07:54	वृष	16:13
26	सोम	भाद्रपद	कृष्ण	दशमी-एकादशी	06:48-28:58	आद्रा	26:56	वज्र	12:20	विष्टि	06:48	मिथुन	-
27	मंगल	भाद्रपद	कृष्ण	द्वादशी	26:27	पुनर्वसु	25:12	सिद्धि	09:35	कौलव	15:47	मिथुन	09:15
28	बुध	भाद्रपद	कृष्ण	त्रयोदशी	23:22	पुष्य	22:54	व्यतिपात	06:16	गर	12:58	कर्क	-
29	गुरु	भाद्रपद	कृष्ण	चतुर्दशी	19:52	आश्लेषा	20:10	परिग्रह	22:25	विष्टि	09:40	कर्क	20:11
30	शुक्र	भाद्रपद	कृष्ण	अमावस्या	16:06	मघा	17:11	शिव	18:07	नाग	16:06	सिंह	-
31	शनि	भाद्रपद	शुक्ल	प्रतिपदा	12:16	पूर्वाफाल्गुनी	14:07	सिद्ध	13:46	बव	12:16	सिंह	19:22

अगस्त 2019 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	गुरु	श्रावण	कृष्ण	अमावस्या -प्रतिपदा	08:41 -29:14	सूर्योदयकालीन स्नान-दान हेतु उत्तम श्रावणी अमावस्या, देवपितृकार्य हेतु उत्तम अमावस्या, हरियाली अमावस, चितलगी अमावस्या (ओड़ी), पुष्य नक्षत्र (दोपहर 12:12 तक), क्षयतिथि, नवीन चंद्र-दर्शन, महालक्ष्मी-पूजा, नक्तव्रत प्रारंभ,
2	शुक्र	श्रावण	शुक्ल	द्वितीया	25:41	सिंधारा दूज,
3	शनि	श्रावण	शुक्ल	तृतीया	22:13	हरियाली तीज (छोटी तीज), मधुस्रवा तृतीया व्रत, स्वर्णगौरी व्रत,
4	रवि	श्रावण	शुक्ल	चतुर्थी	18:59	वरदविनायक चतुर्थी व्रत, (चंद्रोस्त 20:58), दूर्वा गणपति व्रत, जीवंतिका पूजन,
5	सोम	श्रावण	शुक्ल	पंचमी	16:07	सावन का तृतीय सोमवार व्रत, नागपंचमी, तक्षक-पूजन, जाग्रतगौरी पंचमी (ओड़ी), रंगोली पंचमी
6	मंगल	श्रावण	शुक्ल	षष्ठी	13:44	मंगला गौरी व्रत, वर्ण शृयाल षष्ठी, लुण्ठन षष्ठी (बंगा), कल्कि अवतार तिथि, रांधण छठ (गुज),
7	बुध	श्रावण	शुक्ल	सप्तमी	11:56	शीतला सातम(गुज), गोस्वामी तुलसीदास जयंती
8	गुरु	श्रावण	शुक्ल	अष्टमी	10:46	श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत,
9	शुक्र	श्रावण	शुक्ल	नवमी	10:16	वरदलक्ष्मी व्रत, नकुल नवमी, बगीचा नवमी,
10	शनि	श्रावण	शुक्ल	दशमी	10:23	-
11	रवि	श्रावण	शुक्ल	एकादशी	11:05	पुत्रदा एकादशी, पवित्रा एकादशी व्रत,
12	सोम	श्रावण	शुक्ल	द्वादशी	12:17	सावन का चतुर्थ सोमवार व्रत, सोम प्रदोष व्रत, पवित्रा बारस, श्रीविष्णु पवित्रारोपण, श्रीधर द्वादशी, श्यामबाबा द्वादशी
13	मंगल	श्रावण	शुक्ल	त्रयोदशी	13:54	मंगला गौरी व्रत, आखेटक त्रयोदशी (ओड़ी), शिवपवित्रारोपण चतुर्दशी
14	बुध	श्रावण	शुक्ल	चतुर्दशी	15:49	संध्याकालीन पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण कथा-पूजा, बलभद्र पूजा, कुलधर्म-कृत्य, श्रीअमरनाथ विशेष दर्शन 2 दिन,
15	गुरु	श्रावण	शुक्ल	पूर्णिमा	17:59	स्वतंत्रता दिवस, स्नान-दान हेतु उत्तम श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबंधन (राखी), वैदिक उपाकर्म (श्रावणी), संस्कृत दिवस, गायत्री जयंती,

						झूलनयात्रा समापन, कोकिला व्रत पूर्ण, नारयली पूर्णिमा, लव-कुश जयंती, श्रीदाऊजी एवं रेवती माता का भव्य शृंगार (ब्रज), बृहस्पति महापूजा, गायत्री पुरश्चरण प्रारंभ
16	शुक्र	भाद्रपद	कृष्ण	प्रतिपदा	20:17	भाद्रपद में चातुर्मास के व्रती हेतु दही वर्जित, श्रीमहालक्ष्मी व्रत-पूजा, अशून्यशयन व्रत, हिंडोला समाप्त,
17	शनि	भाद्रपद	कृष्ण	द्वितीया	22:40	सूर्यकी सिंह संक्रांति (दोपहर 01:08 बजे), विंध्याचली भीमचण्डी जयंती,
18	रवि	भाद्रपद	कृष्ण	तृतीया	25:1	कज्जली (कजरी) तीज, तीजड़ी (सिन्धी), बूढ़ी तीज, गोपूजा तृतीया, सातूड़ी तीज,
19	सोम	भाद्रपद	कृष्ण	चतुर्थी	27:15	संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (चंद्रोदय रा.21:10), बहुला चतुर्थी,
20	मंगल	भाद्रपद	कृष्ण	पंचमी	29:13	श्रीमहाकाल सवारी (उज्जैन), नागपंचमी (गुज), गोगा पंचमी, रक्षापंचमी (उड़ी), जीवंतिका पूजन,
21	बुध	भाद्रपद	कृष्ण	षष्ठी	....	हलषष्ठी व्रत (ललही छठ), चम्पाषष्ठी, रांधण छठ (गुज),
22	गुरु	भाद्रपद	कृष्ण	षष्ठी	06:48	शीतला सप्तमी, ठंडरी का पूजन, कालाष्टमी व्रत, श्रीकृष्णावतार अष्टमी व्रत, मोहरात्रि,
23	शुक्र	भाद्रपद	कृष्ण	सप्तमी	07:51	निशिथ कालीन श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, गोकुलाष्टमी श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव,
24	शनि	भाद्रपद	कृष्ण	अष्टमी	08:14	सूर्योदय कालीन श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी, नन्दोत्सव दधि कांदौ
25	रवि	भाद्रपद	कृष्ण	नवमी	07:54	श्रीकृष्ण-रोहिणी व्रत,
26	सोम	भाद्रपद	कृष्ण	दशमी-एकादशी	06:48-28:58	निशिथ कालीन अजा (जया) एकादशी व्रत,
27	मंगल	भाद्रपद	कृष्ण	द्वादशी	26:27	सूर्योदय कालीन अजा (जया) एकादशी व्रत, जैन पर्युषण पर्व प्रारंभ, गोवत्स द्वादशी,
28	बुध	भाद्रपद	कृष्ण	त्रयोदशी	23:22	प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि व्रत, कलियुगादि तिथि,
29	गुरु	भाद्रपद	कृष्ण	चतुर्दशी	19:52	अघोर चतुर्दशी,
30	शुक्र	भाद्रपद	कृष्ण	अमावस्या	16:06	स्नान-दान-श्राद्ध हेतु उत्तम भाद्रपदी अमावस्या, कुशोत्पाटनी (कुशग्रहणी) अमावस, पिठौरी अमावस, सती-पूजा,
31	शनि	भाद्रपद	शुक्ल	प्रतिपदा	12:16	-

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	Diamond (Special)	Green Emerald (Special)	Naturel Pearl (Special)	Ruby (Old Berma) (Special)	Green Emerald (Special)
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	Red Coral (Special)	Y.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	Y.Sapphire (Special)
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‌भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रहमांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‌भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्लींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्मींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्‌भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

अमोघ महामृत्युंजय कवच

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा **सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र** जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित किया जाता हैं इसलिए कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं। >> Order Now

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच
कवच बनवाने हेतु:
अपना नाम, पिता-माता का नाम,
गोत्र, एक नया फोटो भेजे

राशी रत्न एवं उपरत्न

सभी साईज एवं मूल्य व क्वालिटि के असली नवरत्न एवं उपरत्न भी उपलब्ध हैं।

विशेष यंत्र

हमारें यहां सभी प्रकार के यंत्र सोने-चांदि-ताम्बे में आपकी आवश्यक्ता के अनुसार किसी भी भाषा/धर्म के यंत्रो को आपकी आवश्यक डिजाईन के अनुसार २२ गेज शुद्ध ताम्बे में अखंडित बनाने की विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के रत्न एवं उपरत्न व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं। ज्योतिष कार्य से जुडे बधु/बहन व रत्न व्यवसाय से जुडे लोगो के लिये विशेष मूल्य पर रत्न व अन्य सामग्रीया व अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Shop Online:- www.gurutvakaryalay.com

अगस्त 2019 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग		द्विपुष्कर योग (दोगुना फल दायक)	
1	सूर्योदय से दोपहर 12:12 तक	6	दोपहर 01:31 से रात 10:23 तक
4	सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक	गुरु पुष्यामृत योग	
8	रात 9:27 से अगले दिन सूर्योदय तक	01	प्रातः 05:42 से दोपहर 12:11 तक
11	सूर्योदय से अगली रात 12:45 तक	विघ्नकारक भद्रा	
18	संध्या 4:54 से अगले दिन सूर्योदय तक	04	सुबह 08:25 से संध्या 06:49 तक (पाताल)
20	रात 10:28 से अगले दिन सूर्योदय तक	07	दोपहर 11:41 रात 11:01 तक (पाताल)
24	सूर्योदय से अगले दिन प्रातः 4:15 तक	10	रात 10:26 से अगले दिन 10:52 तक (पाताल)
30	संध्या 5:11 से अगले दिन सूर्योदय तक	14	दोपहर 03:45 से अगले दिन प्रातः4:51 तक(पाताल)
त्रिपुष्कर योग (तीनगुना फल दायक)		18	दोपहर 12:02 रात 01:13 तक (पृथ्वी)
17	दोपहर 01:55 से रात 10:49 तक	22	सुबह 07:06 से रात 07:42 तक (स्वर्ग)
27	सूर्योदय से देर रात 01:13 तक	25	रात 07:42 से अगले दिन 07:03 तक (स्वर्ग)
31	दोपहर 02:07 से अगले दिन सुबह 08:27 तक	28	रात 11: 28 से अगले दिन 09:45 तक (पृथ्वी)

योग फल :

- ❖ कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- ❖ द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- ❖ त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- ❖ गुरु पुष्यामृत योग में किये गये किये गये शुभ कार्य मे शुभ फलो की प्राप्ति होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- ❖ शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रहमांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रहमांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, precious and semi precious Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach	3250	शनि साड़ेसाती और ढैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach	1050

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………...	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ………………………………..	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga)	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach …………………………………	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……...……………………..…....	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..……………...…………	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ……………………………………	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ………………………………..	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach …………………………………	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……...……………………..…....	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..……………...…………	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ……………………………………	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……..…………………………..	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ………………………………..	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach ……………………………...	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ..……………………..	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach …………………………………….	820

वाणी पुष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	(बैंकोक पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : **Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका

अगस्त 2019

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA JYOTISH

Monthly

AUG -2019